सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

HINDI

सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

स्तर : नौसिखिया

अध्ययन पुस्तक क्रमांक : 1

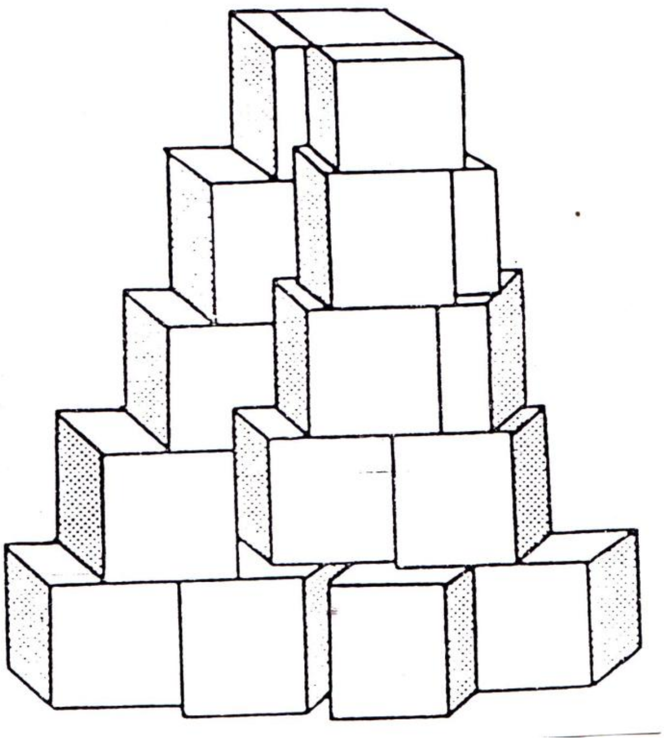

स्तरः

5. सेवक

4. अगुवा / पास्टर

3. समूह या सेल अगुवा

2. चेला

1. नौसिखिया

मसीह में हर विश्वासी को एक सेवक बनाते हुए आत्मिक परिपक्वता में विकसित होने और एक प्रभावशाली और कुशल सेवकाई में बढ़ने के लिए बाइबल अध्ययन कोर्स !!!

स्वयं-अध्ययन और दूसरों को सिखाने के लिए सरलता से इस्तेमाल करने योग्य !!!

सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

उद्देश्य:

- उसे जानना, जो एक मात्र सच्चा परमेश्वर है

(विकसित होना / परिपक्व होना)

- यहोशू 1:8 "व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रखना, इसलिए कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने को तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।"

- 2 पतरस 3:18 "पर हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ। उसी की महिमा अभी भी हो, और युगानुयुग होती रहे। आमीन।"

- 2 तीमुथियुस 2:15 "अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।"

- कुलुस्सियों 1:27-28 "मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है, जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें।"

- और उसके बारे में दूसरों को बताएँ!

(गुणा / पुनरुत्पादन)

- 2 तीमुथियुस 2:2 "और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।"

- 2 तीमुथियुस 3:16-17 "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।"

- इफिसियों 2:10 "क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया।"

- 2 पतरस 1:8 "क्योंकि यदि ये तुम में वर्तमान रहें और बढ़ती जाएँ, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की पहचान में निकम्मे और निष्फल न होने देंगी।"

सिद्धान्त : "क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिए सब कुछ है।" (रोमियों 11:36)

(ज्ञान में बढ़ना; चरित्र में परिपक्व होना; आत्मिक वरदान इस्तेमाल करना)

सूची अध्ययन पुस्तक क्र. : 1

पृष्ठ क्रमाँक

- एक विश्वासी के पहले कदमः अनुग्रह में बढ़ना (24 पाठ) 4
  - (1) प्रभु यीशु मसीह
  - (2) उद्धार का आश्वासन
  - (3) आपका नया जीवन
  - (4) आत्मिक बढ़ोतरी के तीन जरूरी तत्त्व
  - (5) विजयता में चलना
  - (6) कलीसिया
  - (7) कलीसिया के दो सिद्धान्त
  - (8) देने का अनुग्रह
  - (9) घर का रहन सहन
  - (10) हमारी रोज की रोटी
  - (11) तुम्हारा पहिरावा और बोलचाल
  - (12) हमारी नागरिकता
  - (13) जीविका की जिम्मेवारी
  - (14) पैसा और सम्पत्ति
  - (15) सामाजिक जिम्मेवारियाँ
  - (16) मूर्तिपूजा और जादूटोना
  - (17) ईश्वरीय चंगाई
  - (18) दुख उठाना
  - (19) मृत्यु
  - (20) परमेश्वर की सेवा करना
  - (21) क्रूस
  - (22) मसीह का लहू
  - (23) परीक्षा
  - (24) संगति

- अनुग्रह में बढ़ना पर शिक्षकों के लिए अतिरिक्त टिप्पणियाँ 50

- प्रार्थना का सामर्थ्य (नौसिखियों के लिए प्रार्थना के बारे में 10 पाठ) 61
  - (1) परमेश्वर की खोज
  - (2) सहमति की प्रार्थना
  - (3) स्तुति का सामर्थ्य
  - (4) प्रार्थना का सामर्थ्य
  - (5) पवित्र आत्मा और सामर्थ्य
  - (6) मध्यस्थी की प्रार्थना
  - (7) अधिकार की प्रार्थना
  - (8) सुनी हुई प्रार्थना
  - (9) प्रभु के वचन से प्रार्थना करना
  - (10) विश्वास की प्रार्थना

- प्रार्थना का एक और संक्षिप्त व्यवस्थित अध्ययन 86

- शिष्यता की एक मूल संक्षिप्त भूमिका 92

- शिष्टाचार उत्पन्न करना 100

- संगीत पर हमारे जीवनों का प्रभाव 103

- सेक्स और बाइबल - एक भमिका 106

- बाइबल का एक संक्षिप्त सर्वेक्षण 111
  (बाइबल की 66 पुस्तकों का 40 पाठों में सार प्रस्तुत किया गया है और सब पुस्तकों का परिचय दिया गया है)

एक विश्वासी के पहले कदम: अनुग्रह में बढ़ना

पाठ 1 –– प्रभु यीशु मसीह

....

'अनुग्रह में बढ़ना' बाइबल अध्ययन कोर्स के पहले अध्याय में हम आपका परिचय मनुष्य यीशु से कराएँगे। हम उस महान तथ्य की खोज करेंगे कि यीशु प्रभु है और उस अदभुत घटना को देखेंगे जिसमें (कुछ समय के लिए) वह मनुष्य बना। परमेश्वर ने हमें बनाया है, ताकि वह हमारे साथ संगति का आनन्द उठा सके, वह हम से प्रेम करता है, परमेश्वर चाहता है कि वह हमारे साथ गहरा संतुष्टिदायक सम्बंध रखो, और यह तभी सम्भव हो सकता है जब हम उस के पुत्र को व्यक्तिगत तरीके से जानते हैं।
अ) यीशु इस पृथ्वी पर 33 वर्ष रहा, वह माँस और लहू का इन्सान था वह उन सब परिस्थितियों का सामना करने आया जिन्हें हम अनुभव करते हैं, उसने भौतिक आवश्यकताओं जैसे भूख प्यास महसूस की, उसने सुख खुशी महसूस की, उसने शैतान और पाप की ताकत का सामना किया, और उसने साधारण मनुष्य की तरह इच्छाएँ महसूस कीं, उसे भूख लगी।

निम्नलिखित बाइबल वचन उसकी मानवता को दर्शाते हैं आप इन्हें पढ़िए, मनन करिए और नीचे खाली स्थान भरिए।
(**"पैदा हुआ, उसे भूख लगी, थकावट महसूस की, वह रोया, वह बढ़ा, उसे गुस्सा आया, प्यास लगी, दया आई, शारीरिक चोट लगी, उसने खुशी महसूस की, पाप के लिए उकसाया गया, उसने व्यकुलता महसूस की"**)

1) लूका :6,7..
2) लूका 2:40,52...
3) मत्ती 4:2...
4) यूहन्ना 19:28...
5) यूहन्ना 4:6..
6) मत्ती 4:1...
7) यूहन्ना 19:1,2...
8) यूहन्ना 15:11..
9) मत्ती 26:37..
10) मत्ती 9:36..
11) मरकुस 3:5..
12) यूहन्ना 11:35..

ब) हम बाइबल से सीखते हैं कि यीशु प्रभु है। कृपया दिए हुए वचनों को सही वचन से लाइन द्वारा मिलाएँ।

1) उसके नाम का अर्थ (प्रभु हमारे साथ)	मरकुस 2:5,7
2) सब कुछ उसमें शुरू होता और अन्त होता है	मत्ती 1:23
3) परमेश्वर की परिपूर्णता उसमें है	यूहन्ना 20:28
4) वह पापों की क्षमा करता है	प्रकाशितवाक्य 1:8
5) वह पवित्र है - उसने कभी पाप नहीं किया	रोमियों 1:4
6) वह मुर्दों में से जी उठा	कुलुस्सियों 2:9
7) वह प्रभु और परमेश्वर है	इब्रानियों 7:26

स) परमेश्वर मनुष्य क्यों बना? नीचे लिखे वचन बताएँगे कि यीशु मनुष्य क्यों बना, कृपया सही वचन को लाइन लगाएँ।

1) हमारे पापों को उठाने के लिए	रोमियों 5:8
2) जब हमारी परीक्षा होती है वह हमारी सहायता करता है	2 कुरिन्थियों 5:19
3) हमारे पापों का मूल्य चुकाने के लिए	रोमियों 6:23
4) हमें परमेश्वर का प्रेम दिखाने के लिए	1 पतरस 1:18,19
5) संसार को अपने में फिर से मिलाने के लिए	इब्रानियों 2:18
6) अनन्त जीवन देने के लिए	1 पतरस 2:24

ऊपरलिखित वचन पढ़ कर, अपने शब्दों में लिखें कि परमेश्वर मनुष्य क्यों बना? ____

____

____

ड) यीशु, एक मनुष्य की तरह, उसने पाप की हर ताकत का सामना किया, और हर बार विजय प्राप्त की, उसकी अन्तिम विजय मृत्यु पर थी, उस पहली ईस्टर पर, वह कब्र छोड़ कर चला गया, कब्र खाली थी, यीशु जिन्दा था, उसने शैतान पर, और पाप की ताकत पर पूरी तरह विजय प्राप्त की जैसे हम प्रभु यीशु मसीह को अपने जीवन में जीने की अनुमति देते हैं हम अपने व्यक्तिगत जीवन में पूर्ण विजय महसूस करेंगे।
नीचे लिखे वचनों से हमें परमेश्वर के अदभुत भण्डार जो प्रभु यीशु ने हमारे लिए उपलब्ध किया जान सकते हैं, इन वचनों को पूरा करें।

1) प्रेम, "और मैं ने तेरा नाम उसको बताया, और बताता रहूँगा कि ....
...." यूहन्ना 17:26
2) आनन्द, "मैं ने यह बातें तुम से इसलिए कहीं ....
...." यूहन्ना 15:11
3) मित्रता, "अब से मैं तुम्हें सेवक न कहूँगा ....
...." यूहन्ना 15:15
4) चंगाई "वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा ....
...." भजनसंहिता 103:3
5) शैतान पर अधिकार "विश्वास करनेवालों के ये चिन्ह होंगे ....
...." मरकुस 16:17
6) पापों की क्षमा "हम को उसमें उसके लहू के द्वारा ....
...." इफिसियों 1:7
7) अनन्त जीवन "मैं आया कि ....
...." यूहन्ना 10:10
8) बहुतायत का जीवन, "मैं उन्हें अनन्त जीवन ....
...." यूहन्ना 10:28

<u>पाठ करो</u>: 1) **जीवन और तारण सिर्फ यीशु में**	**प्रेरितों** 4:12	**यूहन्ना** 10:10
2) **हमें यीशु को स्वीकार करना चाहिए**	**यूहन्ना** 1:12	**प्रकाशितवाक्य** 3:20

पाठ 2 -- उद्धार का आश्वासन

अब जब आपने अपना जीवन प्रभु मसीह को दे दिया है, आपने अपने स्वामी को बदल लिया है, अब शैतान के सेवक नहीं हैं, लेकिन आप परमेश्वर के सेवक हैं, शैतान अब आपका सबसे बड़ा दुश्मन है और वह अपनी सम्पूर्ण शक्ति सामर्थ्य का प्रयोग करेगा कि वह आप को परमेश्वर के बताए रास्ते पर न चलने दे। उसका पहला प्रहार यह होगा कि वह आपके मन में आपके अपने उद्धार के प्रति शक डालेगा, लेकिन परमेश्वर नहीं चाहता कि हम डरें या शक करें। उसका वचन साफ-साफ बताता है कि वह हमें कभी न छोड़ेगा हमारा कभी त्याग न करेगा (इब्रानियों 13:5)। बहुत से लोग अपने उद्धार का फैसला अपनी भावनाओं के अनुसार करने की गलती करते हैं। जब हमारा उद्धार भावनाओं पर आधारित होता है, हम उस पर निर्भर नहीं कर सकते हैं क्योंकि हमारी भावनाएँ बदलती रहती हैं। लेकिन केवल एक चीज कभी नहीं बदलती, और वह 'प्रभु का वचन' है इसलिए परमेश्वर में विश्वास रखें और उसके वचनों पर विश्वास रखें।

1) क्या अपने उद्धार के लिए कार्य कर सकता हूँ ? क्यों ? इफिसियों 2:8,9 ....
....

2) अनन्त जीवन किस से मिलता है? 1 यूहन्ना 5:11 ....

....

3) जिनके पास पुत्र है परमेश्वर उन्हें क्या देता है? 1 यूहन्ना 5:11,12 ....

....

4) यीशु ने कहा "जो कोई मेरे वचनों को सुनकर ....
.... उस पर दण्ड की आज्ञा न होगी, वह मृत्यु को पार करके जीवन में प्रवेश .... यूहन्ना 5:24।

5) क्या मैं निश्चय से जान सकता हूँ कि मुझे अनन्त जीवन मिला है? ....
कैसे? 1 यूहन्ना 5:12,13 ....

....

6) हमें कौन दिलासा दिलाता है कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं? रोमियों 8:16 ....

....

7) जबकि हमारी भावनाएँ हमेशा बदलती रहती हैं, हमें अपने उद्धार के लिए किस पर निर्भर होना चाहिए? 1 पतरस 1:25

....

....

8) लिखिए 1 यूहन्ना 5:11,12 याद करें। ....

....

....

....

पाठ करो: 1) **पाप** — **रोमियों** 3:23; 6:23
2) **कर्मों के द्वारा उद्धार नहीं** — **इफिसियों** 2:8,9; **तीतुस** 3:5,6
3) **विश्वास का आश्वासन** — 1 **यूहन्ना** 5:13; **यूहन्ना** 5:26

पाठ 3 -- आपका नया जीवन

....

बाइबल कहती है, "अतः जैसे तुम ने मसीह यीशु को प्रभु करके ग्रहण कर लिया है, वैसे ही उसी में चलते रहो" (कुलुस्सियों 2:6)। जिस क्षण आपने विश्वास से यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत प्रभु और उद्धारकर्त्ता करके ग्रहण किया था, आपका दोबारा जन्म हुआ था। आपने ऊपर से एक नया जीवन पाया; एक जीवन जो पहले आपका नहीं था। आपके माता-पिता ने आपको स्वाभाविक जन्म दिया था, लेकिन परमेश्वर ने अब आपको आत्मिक जीवन दिया है। यह नया जन्म परमेश्वर के आत्मा के द्वारा हुआ था।

1. "इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह .... : पुरानी बातें ....; देखो, सब बातें नई हो गई हैं" 2 कुरिन्थियों 5:17।
2. कुछ पुरानी बातों की सूची जो बीत गईं जब मैं ने अपना जीवन मसीह को दिया था, गलातियों 5:19-21 में दी गई है। कृपया उनका ध्यानपूर्वक अध्ययन करो। जो बातें मेरे जीवन में नई बन रही हैं वे भी दी गई हैं। उन्हें "आत्मा का फल" कहते हैं। गलातियों 5:22-23 पढ़ो और फिर "आत्मा के फल" नीचे शाली जगह भरो।

<u>शरीर के काम</u>	<u>आत्मा के फल</u>
(गलातियों 5:19-21)	(गलातियों 5:22-23)

लैंगिक पाप	1. ....
गंदा मन	
अनुचित जीना	2. ....
झूठे देवताओं की उपासना	
जादू-टोना	3. ....
घृणा	
झगड़े	4. ....
ईर्ष्या	
क्रोध	5. ....
फूट	
डाह	6. ....
हत्या	
मतवालापन	7. ....
रंगरलियाँ	
	8. ....
	9. ....

3. मसीह में नई सृष्टि के रूप में, मुझे किस प्रकार जीना या चलना है ?
   अ. 2 कुरिन्थियों 5:7 ....
   ब. रोमियों 6:4 ....

4. यूहन्ना 6:63 में, यीशु ने कहा, "आत्मा तो ....; शरीर से ....।"

5. परमेश्वर क्या अपेक्षा करता है आप अपने शरीर के साथ क्या करें ? रोमियों 12:1
   ....

6. क्या आपका शरीर आपका है ? क्यों ? 1 कुरिन्थियों 6:19-20 ....

7. निम्नलिखित आयत को पूरा करो, "क्योंकि दाम देकर मोल लिए गए हो, इसलिए ....

   ....

8. बाइबल कहती है हमें एक दूसरे प्रेम करना चाहिए क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है। परमेश्वर का प्रेम आपके जीवन में कैसे उँडेला गया है ? रोमियों 5:5
   ....

9. परमेश्वर का वचन कहता है, "यदि कोई कहे, मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूँ, और अपने भाई से बैर रखे तो वह झूठा है .... 1 यूहन्ना 4:20।

10. यीशु ने कौन सी नई आज्ञा दी थी ? यूहन्ना 13:34
    ....

11. परमेश्वर के बेटे के रूप में मुझे विश्वास से न कि देखकर जीना है। मेरा विश्वास कैसे बढ़ सकता है ? रोमियों 10:17
    ....

12. मेरे विश्वास का लेखक कौन है ? इब्रानियों 12:2

....

13. "जो कुछ विश्वास से नहीं, ...।" रोमियों 14:23

14. मुझे पता होना चाहिए कि .... बिना .... अनहोना / कठिन है (सही शब्द के नीचे लाइन लगाएँ)। इब्रानियों 11:6

15. निम्नलिखित आयत पूरी करो: "वह विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त होती है ....।" 1 यूहन्ना 5:4

पाठ करो: 1) मसीह का आज्ञापालन: रोमियों 12:1; यूहन्ना 14:21
2) नई सृष्टि: 2 कुरिन्थियों 5:17; गलातियों 2:20

पाठ 4 -- आत्मिक बढ़ोतरी के तीन जरूरी तत्व

....

1) बाइबल अध्ययन

एक नवजात शिशु की बढ़ोतरी के लिए भोजन की आवश्यकता होती है, आपको भी आत्मिक जीवन की बढ़ोतरी के लिए, आपके जन्म से लेकर, लगातार, परमेश्वर का वचन (आत्मिक भोजन) भी जरूरत है।

1) मनुष्य को सिर्फ भौतिक भोजन की आवश्यकता नहीं है। जैसा कि परमेश्वर चाहता है मनुष्य जीवन जीयें, उसके लिए आत्मिक भोजन की भी आवश्यकता है। यीशु ने मनुष्य को किस प्रकार जीवन जीने के लिए कहा है ? मत्ती 4:4 ....
....

2) यीशु ने परमेश्वर के वचन के बारे में क्या कहा ? यूहन्ना 17:17 ....
....

3) बाइबल अध्ययन क्यों महत्त्वपूर्ण है ? 2 तीमुतियुस 2:15 ....
....

4) प्रभु का वचन हमारे लिए क्या कर सकता है ?
   अ) 2 तीमुतियुस 3:15 ....
   ब) यूहन्ना 15:3 ....
   स) प्रेरितों 20:32 ....

5) प्रभु का वचन किन चार बातों के लिए लाभदायक है ? 2 तीमुथियुस 3:16
   अ) .... स) ....
   ब) .... ड) ....

6) भजनसंहिता 119:11 कहता है "मैं ने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरुद्ध पाप न करूँ।" इस वचन से आप बताएँ कि प्रभु का वचन याद करना क्यों महत्त्वपूर्ण है ? ....
....

7) क्या प्रभु का वचन पढ़ने या सुनने से हमारा विश्वास बढ़ता है ? रोमियों 10:17 ....
....

2) प्रार्थना

एक नवजात सिशु की बढ़ोतरी के लिए न केवल भोजन की आवश्यकता है, बल्कि साँस लेने के लिए हवा की भी जरूरत होती है। जिस प्रकार शरीर को जीवित रहने के लिए हवा जरूरी है, उसी प्रकार हमें आत्मिक जीवन के लिए प्रार्थना की आवश्यकता है। प्रार्थना प्रभु के साथ संगति है और हमारे आत्मिक जीवन की साँस है।

1) यीशु ने प्रार्थना के बारे में क्या कहा? लूका 18:1 ....
....
2) क्या आपको प्रार्थना करना, त्याग देना या बन्द करना चाहिए? 1 थिस्सलुनीकियों 5:17 ....
3) हमें प्रार्थना क्यों करनी चाहिए? यूहन्ना 16:24 ....
....
4) आप निश्चित रूप से कैसे कह सकते हैं कि परमेश्वर आपकी प्रार्थना सुनता है? 1 यूहन्ना 5:14 ....
....
5) हमें कैसे प्रार्थना करनी है?
   अ) यूहन्ना 14:13 ....
   ब) 1 यूहन्ना 5:14 ....
   स) मरकुस 11:24 ....
6) प्रभु उत्तर देने से पहले हम से क्या दो बातें चाहता है?
   अ) यूहन्ना 15:7 ....
   ब) 1 यूहन्ना 3:22 ....
7) यीशु ने परीक्षा से निकलने के लिए किन दो बातों को बताया? मत्ती 26:41
   अ) .... ब) ....

3) साक्षी

जिस प्रकार व्यायाम हमारी सेहत के लिए जरूरी है, उसी प्रकार साक्षी देना भी हमारे आत्मिक स्वास्थ्य के लिए जरूरी है। जैसे हम आत्मिक तौर पर बढ़ते, प्रार्थना द्वारा, बाइबल अधययन द्वारा, हमें उन बातों को अपने जीवन में अनुकरण करना है, जो गम ने सीखी हैं। इससे आपको बोलने और करने की साक्षी प्रकट होगी।

1) यीशु हमें मरकुस 16:15 में क्या करने को कहता है? ....
....
2) हमें मत्ती 5:14 में क्या कह कर बुलाया गया है? ....
3) हमारा प्रकाश क्यों जगमगाता है? मत्ती 5:16 ....
....
4) वह लोग जो यीशु को नहीं जानते उनके प्रति हमारा क्या वचन होना चाहिए?
   अ) रोमियों 3:23 ....
   ब) रोमियों 6:23 ....
   स) रोमियों 14:12 ....
   ड) रोमियों 10:9 ....
5) क्या प्रेरित पौलुस सुसमाचार सुनाने से लजाता था? क्यों? रोमियों 1:16 ....
....
6) प्रभु का यह वायदा है, "स्वयं मैं तुझे कभी न छोडूँगा, और न कभी तुझे त्यागूँगा" (इब्रानियों 13:5), यीशु ने कहा जब पवित्र आत्मा आएगा तो हम उसके सामर्थी गवाह होंगे। (प्रेरितों 1:8), तब क्या हमें दूसरों को प्रभु यीशु मसीह के बारे में बताने से डरना चाहिए? ....
....
7) क्या परमेश्वर ने हमें भय का आत्मा दिया है? 2 तीमुतियुस 1:7 ....
....
8) वह शैतान है जो हमारे मन में भय लाता है, इस भय को हम कैसे निकाल सकते हैं? 1 यूहन्ना 4:18 ....

....
....

पाठ करो: 1) **बाइबल पढ़ना** अ) 2 **तीमुथियुस** 3:16 ब) **यहोशू** 1:8
2) **प्रार्थना** अ) **यूहन्ना** 15:7 ब) **फिलिप्पियों** 4:6-7
3) **साक्षी** अ) **मत्ती** 4:19 ब) **रोमियों** 1:16

पाठ 5 -- विजयता में चलना

....

माता-पिता आनन्दित होते हैं जब बालक चलने लगता है, पहली बार बच्चा लडख़ड़ाता और गिर पड़ता है, लोकिन जल्दी ही उसे ताकत होगी कि वह विश्वास के साथ चले, इसी प्रकार आत्मिक जीवन में परमेश्वर चाहता है कि उसके बच्चे जय पूर्ण चाल चलें।

1) एक मसीही का सबसे बड़ा विरोधी कौन है? 1 पतरस 5:8 ....
....
2) शैतान को भगाने के लिए आपको क्या दो कदम उठाने हैं? याकूब 4:7
अ) ....
ब) ....
3) जब शैतान हमें गलत कार्य के लिए उत्तेजित करता है, परमेश्वर क्या करने में विश्वासयोग्य है? 1 कुरिन्थियों 10:13
....
....
4) हमें शैतान का विरोध करने का सामर्थ्य कौन देता है? फिलिप्पियों 4:13 ....
....
....
5) इस वचन को पूरा करें "जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ ....
....1 यूहन्ना 5:4
6) यदि हमें शरीर की वासनापूर्ति से बचना है तो हमें किस प्रकार जीवन व्यतीत करना है? गलातियों 5:16 ....
....
....
7) आपको प्रभु की साक्षी बनने के लिए सामर्थ्य कौन देगा? प्रेरितों 1:8 ....
....
8) क्या यीशु ने शत्रु (शैतान) की सारी सामर्थ्य पर अधिकार दिया है? लूका 10:19 (उत्तर हाँ/ना) ....
9) उसके सुसमाचार का तेजोमय प्रकाश उन पर न चमके, इस संसार के ईश्वर ने अंधा कर दिया ....
.... 2 कुरिन्थियों 4:4
10) शैतान कई बार क्या रूप धारण करता है? 2 कुरिन्थियों 11:14 ....
....
....
11) शैतान से लड़ने के लिए हमारे पास क्या हथियार हैं? इफिसियों 6:17 ....
....
....
12) इफिसियों 6:13-17 पढ़ें और सही उत्तर को लाइन मिलाएँ, जो मसीही सैनिक के हथियार हैं।

अ) कमरबन्द	धार्मिकता
ब) झिलम	विश्वास
स) जूते	प्रभु का वचन
ड) ढाल	उद्धार
इ) टोप	सत्य से
फ) आत्मा की तलवार	शान्ति के सुसमाचार की तैयारी

13) यीशु मसीह ने शैतान का सामना करने में क्या हथियार प्रयोग किया? मत्ती 4:4,7,10 ....
....
....

14) भजनसंहिता 119:11 कहता है "मैंने तेरे वचन को (हृदय में छिपाया, याद किया) अपने हृदय में रखा कि तेरे विरुद्ध पाप न करूँ। हमें पाप पर विजय प्राप्त करने के लिए प्रभु के वचन का कैसे प्रयोग करना चाहिए? ....
....
....

15) परमेश्वर का पुत्र (यीशु मसीह) क्यों प्रकट हुआ? 1 यूहन्ना 3:8 ....
....
....

16) अन्त में शैतान का क्या होगा? प्रकाशितवाक्य 20:10 ....
....
....

परमेश्वर आप से एक विजयी जीवन का वायदा करता है क्योंकि आप उसके वालक हैं। और अभी हमें उस विजयी जीवन को ले लेना है। यीशु ने कहा "मैं इसलिए आया हूँ कि जीवन पाएँ और बहुतायत का जीवन पाएँ।" (यूहन्ना 10:10)। आप बहुतायत का जीवन प्रभु के वचन पर विश्वास करके और उसका पालन करके पा सकते हैं।

पाठ करो: **शैतान के विरुद्ध विजय**

अ) इब्रानियों 2:18
ब) भजनसंहिता 119-9-11
स) 1 **यूहन्ना** 3:8
ड) यशायाह 54:17

पाठ 6 -- कलीसिया

....

कलीसिया आपका आत्मिक घर है, वह आपको आत्मिक भोजन, सुरक्षा प्रशिक्षण, और सहभागिता देती है। चर्च शब्द यूनानी भाषा के एकलीसिया से लिया गया है जिसका अर्थ "अलग बुलाया गया"। मसीही लोगों को संसार में से मसीह के साथ रहने के लिए बुलाया गया, नए नियम चर्च शब्द का अर्थ सबसे पहले विश्वासियों के पूरे समूह से लगाया जाता है, विश्वासियों की सभाएं जो स्तुति आराधना, आत्मिक उत्थान एवं सेवकाई के लिए मिलती हैं।

1) पूरी कलीसिया की तुलना .... मसीह जिसका .... और सभी विश्वासी .... (कुलुस्सियों 1:18; 1 कुरिन्थियों 12:27)।

2) इसका क्या सबूत है कि हम मसीह से प्रेम करते हैं जो कलीसिया का सिर है ? यूहन्ना 14:21 ....

....

3) प्रेरितों 2:41-42 के अनुसार उन पाँच बातों को बताएँ जो वे करने लगे "जिन्होंने खुशी से प्रभु को स्वीकारा"।

अ) ....

ब) ....

स) ....

ड) ....

इ) ....

4) परमेश्वर की सन्तान के नाते तुम्हें किसका तिरस्कार नहीं करना चाहिए/क्या नहीं भूलना चाहिए ? इब्रानियों 10:25

....

5) रोमियों 8:34 के अनुसार

अ) यीशु अभी कहाँ हैं ? ....

ब) वह क्या कर रहा है ? ....

6) यीशु कलीसिया के लिए किन दो प्रार्थनाओं को करता है ?

अ) यूहन्ना 17:15 ....

ब) यूहन्ना 17:17 ....

7) कलीसिया का लक्ष्य, उद्देश्य यहाँ लिखा है, ठीक वचन को लाइन लगाएँ।

अ) परमेश्वर की महिमा के लिए	गलातियों 6:10
ब) विश्वासियों को उत्साहित करना	इफिसियों 4:11,12
स) स्वयं को पाप से शुद्ध करना	रोमियों 15:6
ड) प्रभु का वचन सब जगह सुनाना	इफिसियों 5:25-27
इ) सब भलाई के कार्य करना	मरकुस 16:15

पाठ करो: सहभागिता **अ) मत्ती** 18:20
ब) इब्रानियों 10:24,25

पाठ 7 -- कलीसिया के दो सिद्धान्त

हम सिद्धान्त (ओरडिनेन्स) को बाहरी रीति-रिवाज कह सकते हैं जो मसीह द्वारा कलीसिया में लागू किए गए थे। और ये दो रिवाज नए नियम यीशु मसीह की विशेष आज्ञा के साथ किए गए हैं। पहला **पानी का बपतिस्मा**, दूसरा **प्रभु भोज**।

अ) 'पानी का बपतिस्मा' शब्द "बपतिस्मा" का अर्थ है जो कि यूनानी भाषा "बेपतीज़ो" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "डुबाना, डुबकी लगाना और पूरी तरह गीला होना।" जब एक विश्वासी मनुष्य प्रभु यीशु को अपने पापों को क्षमा माँग कर प्रभु और उद्धारकर्त्ता कबूल करता है तब पानी में डुबकी लगाना बपतिस्मा कहा जाता है।

1) मरकुस 1:4-5 पढ़ कर उत्तर दें।

अ) यूहन्ना अपने अनुयायियों को कहाँ बपतिस्मा देता था ? (वचन 4) ....

ब) यूहन्ना ने किस प्रकार के बपतिस्मा का प्रचार किया ? ....

स) यूहन्ना ने उसके पास आने वालों को किस नदी में बपतिस्मा दिया ? ....

2) मत्ती 3:13-17 पढ़ें और उत्तर दें।

अ) यीशु यूहन्ना के पास क्यों आया ? ....

ब) यीशु का बपतिस्मा छिडक़ाव, डुबकी लगाकर, या ऊपर से पानी बहा कर (गिरा कर) हुआ। सही उत्तर के नीचे लाइन लगाएँ।

स) जब यीशु का बपतिस्मा हुआ क्या परमेश्वर प्रसन्न हुआ? ....

ड) परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह के बारे में क्या कहा? ....

....

3) प्रभु यीशु मसीह ने अपने चेलों को मत्ती 28:19 में क्या आज्ञा दी? ....

....

....

4) नीचे लिखे वचनों से हम बपतिस्मा का अर्थ जान सकते हैं। (रोमियों 6:11,18; रोमियों 6:3-6; मत्ती 3:13-17; मत्ती 28:19)। कृपया सही वचन नम्बर खाली पर लिखें।

अ) प्रभु यीशु की आज्ञा का पालन ....

ब) यीशु के उदाहरण का पालन अनुसरण करो ....

स) मृत्यु द्वारा पाप से अलग होना ....

ड) बाहरी रूप से गवाह बनना कि तुम परमेश्वर में और उसकी धार्मिकता में पुनर्जीवित हुए हो ....

महत्त्वपूर्ण सूचना

बपतिस्मा आपके मसीही जीवन का एक महत्त्वपूर्ण कदम है, यीशु ने हमें बपतिस्मा की आज्ञा दी है। क्या आप जानते हैं कि यदि आप बपतिस्मा लेने से इन्कार करते हैं तो आप मसीह की आज्ञा का उलंघन कर रहे हैं। बपतिस्मा लेने के लिए केवल आप में एक ही खूबी होनी चाहिए कि आपने यीशु मसीह को उद्धारकर्त्ता स्वीकार किया है और आप अपने पुराने पाप-भरे जीवन को छोड़ने के लिए तैयार हैं। क्यों नहीं आप अभी निर्णय लेते कि यीशु मसीह का अनुकरण कर बपतिस्मा लेंगे?

5) कृपया आप अपनी इच्छा व्यक्त करें कि आपका बपतिस्मा के लिए क्या निर्णय है? लिखें(√) एक या दो लाइनों के आगे।

अ) मैं बपतिस्मा की इच्छा रखता/रखती हूँ। ( )

ब) मैं अभी बपतिस्मा के लिए तैयार नहीं। ( )

स) मैं बपतिस्मा के बारे में और जानना चाहूँगा/चाहूँगी। ( )

ड) मेरा डुबकी द्वारा पहले बपतिस्मा हो चुका है। ( )

ब) प्रभु भोज का अनुष्ठान यह वाचा मसीह ने विश्वासघात की रात को की। मत्ती 26:26-30; मरकुस 14:22-26; लूका 22:17-20। पानी के बपतिस्मा की तरह यह केवल विश्वासियों के लिए है। प्रभु भोज में भाग लेने के लिए जरूरी है कि आपका पुनर्जन्म हुआ है (विश्वासी है) और प्रभु की आज्ञाओं के अनुसार जीवन बिताने हैं।

1) प्रभु भोज में रोटी और दाखरस का प्रयोग होता है।

अ) रोटी किस बात को दर्शाती है? (मत्ती 26:26) ....

आ) दाखरस किस बात को दर्शाता है? (मत्ती 26:27-28) ....

2) 1 कुरिन्थियों 11:23-34 पढ़ें और नीचे लिखित उत्तर दें।

अ) धन्यवाद देने के बाद यीशु ने रोटी का क्या किया? ....

....

आ) यीशु ने रोटी को क्यों तोड़ा? ....

....

इ) वचन 25 के अनुसार प्रभु भोज का उद्देश्य क्या है? ....

....

ई) जब हम प्रभु भोज में भाग लेते हैं तो हमें यह क्या याद कराता है? (वचन 26) ....

....

उ) प्रभु भोज में रोटी खाने, दाखरस पीने से पहले एक व्यक्ति को क्या करना चाहिए? (वचन 28) ....

....

ऊ) प्रभु भोज लेने से पहले हमें क्यों यह निश्चित रीति से देखना है, हमारा सम्बंध प्रभु से ठीक है? ....

....

ए) अनुचित रीति से प्रभु भोज में शामिल होने वाले व्यक्ति को क्या होता है? (वचन 30) नोट : यहाँ नींद शब्द का अर्थ वह मर गया, ...
ऐ) हमें दण्ड न मिले इसके लिए क्या करना चाहिए? (वचन 31) ....
....

3) क्या प्रभु भोज को केवल स्थायी (लोकल) कलीसिया में ही लेना चाहिए या यह घर, जेल, हॉस्पीटल में भी लिया जा सकता है? (प्रेरितों 2:46) ....
....

यह महत्त्वपूर्ण है

प्रभु भोज लेने से पहले, यह कुछ प्रश्न आप स्वयं को जाँचने के लिए खुद से कर सकते हैं।

1) क्या मैं सचमुच प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करता हूँ?
2) क्या मेरे जीवन में कोई ऐसा पाप है जो मैं ने कबूल नहीं किया (पश्चाताप नहीं किया), स्वयं के प्रति दयनीयता, घमण्ड, धूर्तता, आलस्य, अनज्ञाकारी होना, सांसारिक चीजों से प्रेम, क्या मेरे सोच विचार शुद्ध हैं, क्या मैं प्रभु यीशु की साक्षी देता हूँ, क्या मैं बाइबल पढ़ना और प्रार्थना करने में विश्वासयोग्य रहा हूँ? (बराबर करता रहा)
3) क्या मैं परमेश्वर को अपने पूरे मन, हृदय, ताकत, दिमाग, दिमाग से प्रेम करता हूँ?
4) क्या मैं अपने पड़ोसी से अपने समान प्यार करता हूँ?

पाठ करो:	**अ) बपतिस्मा**	1) **प्रेरितों** 2:38	2) **मत्ती** 28:19
	आ) प्रभु भोज	1) 1 **कुरिन्थियों** 11:26,27	2) **यूहन्ना** 6:51, 63

पाठ 8 -- देने का अनुग्रह

....

हर एक जन जैसा मन में निश्चय करे वैसा ही दान करे, न कुढ़ कुढ़ के और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देने वाले से प्रेम करता है। (2 कुरिन्थियों 9:7)

संसार पूछता है :	"उसने क्या दिया?"
यीशु पूछता है :	"उसने कैसे दिया?"
संसार पूछता है :	"उसके पास क्या-क्या है?"
यीशु पूछता है :	"वह उसका प्रयोग कैसे करता है?"
संसार पूछता है :	"उसने कितना दिया?"
यीशु पूछता है :	"उसने कितना बचा के रख लिया?"

1) नीतिवचन 23:26 में परमेश्वर कहता है "हे मेरे पुत्र, अपना मन मेरी ओर लगा", वह क्या पहली चीज है जो प्रभु हम से चाहता है? ....
2) आपका शरीर (देह) किसका है? (1 कुरिन्थियों 6:19-20) ....
3) प्रेरित पौलुस के अनुसार हमें अपनी देह का क्या करना चाहिए? रोमियों 12:1 ....
....
4) लूका 10:27 के अनुसार प्रभु हम से क्या चाहता है? ....
....

5) प्रेम हमेशा देखता है कि वह कितना दिया जा सकता है। बाइबल रहती है कि 'प्रेम स्वार्थी नहीं होता' यीशु ने दान देने के बारे में क्या कहा? प्रेरितों 20:35 ....
....

6) यीशु ने दान देने वालों के साथ क्या वाचा बाँधी है? लूका 6:38 ....
....
....
....

7) यदि कोई आप से उधार माँगता है तो क्या आपको उसे मना कर देना चाहिए? मत्ती 5:42 ....
....

8) बाइबल कहती है "जो निर्धन को दान देता है उसे घटी नहीं होती" (नीतिवचन 28:27) किस के साथ यह वायदा किया गया कि उसे घटी न होगी देने वाले के साथ या लेने वाले के साथ। (फिलिप्पियों 4:18-19) ....
....

9) हमें किस प्रकार देना चाहिए? मत्ती 10:8 ....
....

10) परमेश्वर किस प्रकार के दान देने वाले से प्रेम करता है? 2 कुरिन्थियों 9:7 ....
....

बाइबल सिखाती है जो कुछ हमारे पास है उसका दशमांश प्रभु का है। यदि हम वह अपने लिए रखते हैं तो हम प्रभु को लूटते हैं। मलाकी की पुस्तक में हम पढ़ते हैं – "क्या मनुष्य परमेश्वर को धोखा दे सकता है? देखो तुम मुझ को धोखा देते हो ... सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजन वस्तु रहे। और सेनाओं का यहोवा प्रभु यह कहता है कि ऐसा करके मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिए खोलकर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की वर्षा करता हूँ कि नहीं" (मलाकी 3:8,10)। यीशु ने दशमांश के लिए अपनी सहमति दी, (मत्ती 23:23), (लूका 11:42)। हमारा दशमांश हमारी चीजों का दसवाँ अंश है। दसवें हिस्से अधिक का दान प्रभु के लिए भेंट है। यदि हम परमेश्वर को अपने पूरे मन से प्रेम करते हैं तो हम प्रभु को दशमांश और भेंट देना चाहेंगे।

याद रखें

अ) परमेश्वर दान की गिनती जो हम बढ़ती में से देते हैं उस से नहीं बल्कि कितनी हम घटती में से देते हैं उस से करता है। (मरकुस 12:41-44)

ब) परमेश्वर देने वाले के हृदय को उसके दान से ज्यादा महत्त्व देता है। (2 कुरिन्थियों 9:7)

आओ हम आनन्दित मन से अपने प्रभु को दें जिसने हमारे लिए अपना जीवन तक दे दिया।

पाठ करो: **देना** 1) 2 **कुरिन्थियों** 9:6-8
2) **लूका** 6:38

पाठ 9 -- घर का रहन सहन

....

पहला स्थान जहाँ हमें मसीही जीवन जीना है वह है घर (अपना अपना घर) और यहाँ पर प्रभु के लिए पहला कदम है। और यह शायद आसान न हो, विशेषता जब आपके परिवार के सदस्य परमेश्वर को उद्धारकर्त्ता करके न जानते हों, आपको विरोध का सामना करना पड़े और शायद आपको सताया जाए, लेकिन याद रखें हमारे प्रभु ने कहा है वह हमें न छोड़ेगा, कभी न त्यागेगा। (इब्रानियों

13:5)। हमारा पहला कर्तव्य प्रभु की आज्ञा का पालन करना है। हमें मनुष्यों की आज्ञा से बढ़ कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही कर्तव्य कर्म है। (प्रेरितों 5:29)

1) बाइबल प्रत्येक के साथ जीवन बिताने के बारे में क्या कहती है? रोमियों 12:18 ....
....
2) यीशु ने ऐसा वायदा नहीं किया जो उसे स्वीकारते हैं उन्हें सब कुछ ठीक-ठाक होगा, वह जानते थे कि सुसमाचार का विरोध होगा, इसलिए उन्होंने कहा "यह न समझो कि मैं पृथ्वी पर मेल-मिलाप ....
लेकिन .... (मत्ती 10:34)
3) मत्ती 10:35, 36 पढ़ें, तब यह वचन पूरा करें "मनुष्य के शत्रु ....
....
4) हमें सबसे अधिक किस से प्रेम करना चाहिए? (मत्ती 10:37) सही उत्तर के नीचे लाइन लगाएँ।
   अ) हमारे माता-पिता
   आ) प्रभु यीशु मसीह
   इ) हमारे बेटे-बेटियाँ
   ई) हमारे भाई-बहन
5) हमें युवावस्था में किसे स्मरण करना चाहिए? (सभोपदेशक 12:1) ....
....
6) एक बालक का बचपन में सुव्यवस्थित प्रशिक्षण क्यों जरूरी है? नीतिवचन 22:6 ....
....
7) यदि माता-पिता अपनी सन्तान से प्रेम करते हैं तो क्या उन्हें बच्चों के गलत कार्य करने पर दण्ड देना चाहिए? नीतिवचन 13:24..
....
8) यदि माता-पिता बच्चों के गलती करने पर दण्ड नहीं देते, तो क्या वे सही मायने में उनसे प्रेम करते हैं? नीतिवचन 13:24
....
....
9) एक माता की क्या दुर्दशा होती है (लज्जित होती है) जब वह अपनी सन्तान को मनमानी करने देती है और दण्ड नहीं देती है? नीतिवचन 29:15 ....
....
10) जो माता-पिता समय निकाल कर बच्चों की ताड़ना करते हैं, वे दो प्रकार से पुरस्कार पायेंगे। नीतिवचन 29:17
   अ) तब बच्चों से उन्हें ....
   आ) बच्चे उन्हें ....
11) माता-पिता अपने बच्चों को सिखाने के लिए, परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी है बाइबल में परमेश्वर चार-बार कब-कब बच्चों को सिखाने के लिए कहता है? (व्यवस्थाविवरण 6:7)
   अ) जब तुम ....
   आ) जब तुम ....
   इ) जब तुम ....
   ई) जब तुम ....
12) बच्चों को माता-पिता की आज्ञा का पालन क्यों करना चाहिए?
   अ) इफिसियों 6:1..
   आ) कुलुस्सियों 3:20 ....
13) बच्चों को, परमेश्वर में माता-पिता की आज्ञा का पालन करो, इसका का अर्थ है बच्चों को माता-पिता की आज्ञा पालन करना है यदि वह आज्ञा परमेश्वर के विरुद्ध नहीं है। एक नवयुलक या बालक को जब वह जानता है कि जो कार्य माता-पिता कह रहे हैं परमेश्वर की आज्ञा के विरुद्ध है उस स्थिति में क्या करना चाहिए? सही उत्तर के नीचे लाइन लगाएँ)
   अ) वह परमेश्वर की इच्छा के बजाय माता-पिता की आज्ञा का पालन करे।
   आ) वह परमेश्वर की आज्ञा का पालन करे चाहे वह माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध है।

इ) वह न माता-पिता और न परमेश्वर की आज्ञा का पालन करे।

14) किन दो बातों का प्रभु ने उनसे वायदा किया है जो लोग अपने माता-पिता का सम्मना करते हैं ? (इपिसियों 6:2-3)

अ) ....

आ) ....

"हमें नम्र होना है घर के जैसा कोई स्थान नहीं है। अर्थात् घर में ही हमें नम्र होकर रहना है।"

<u>**पाठ करोः**</u> **शिक्षण** 1) **नीतिवचन** 22:6

आज्ञापालन 1) **इफिसियों** 6:1

पाठ 10 -- हमारी रोज की रोटी

....

खाना-पीना हमारे जीवन का प्रत्येक दिन का महत्त्वपूर्ण भाग है। इस अध्याय में परमेश्वर अपने लोगों से क्या चाहता है ?

अ) खाने से पहले धन्यवाद देना

1) मसीह यीशु में परमेश्वर की आपके लिए क्या इच्छा है ? 1 थिस्सलुनीकियों 5:18 ....
....

2) यीशु ने हमारे लिए उदाहरण उपस्थित किया, खाना खाने से पहले उसने क्या किया ? यूहन्ना 6:11 ....
....

3) पौलुस के उदाहरण से प्रभु का धन्यवाद सार्वजनिक स्थानों में देने हमें कभी लज्जित नहीं होना चाहिए, किन शब्दों से हम जान सकते हैं कि पौलुस लज्जित न था ? प्रेरित 27:35 ....
....

4) भोजन किस प्रकार ग्रहण करना चाहिए ? 1 तीमुथियुस 4:4 ....
....

ब) खाना-पीना

1) हमें खाने-पीने के बारे में चिन्ता क्यों नहीं करनी चाहिए ? मत्ती 6:31-32 ....
....

2) सही उत्तर के नीचे लाइन लगाएँ जब हम खाने-पीने की चिन्ता करते हैं।

अ) हम चिन्ता करके परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं।

आ) हम प्रभु की भलाई और भरपूरी देने की ताकत पर सन्देह करते हैं।

3) यीशु ने अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखाया "हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे" इस प्रार्थना द्वारा यह दर्शाता है कि उन्हें परमेश्वर पर पूरी तरह निर्भर रहना है। (सही उत्तर के नीचे लाइन लगाएँ)

अ) हमें प्रभु से भोजन माँगना है।
1) एक समय पर पूरे दिन के लिए।
2) पूरे सप्ताह के लिए उपलब्ध।
3) अपने भविष्य के वर्षो के लिए।

ब) हमें प्रभु से माँगना है।
1) जो भी हमारी इच्छाएं हैं उनकी पूर्ति।
2) एक विलासता भरा जीवन।
3) जीवन की जरूरतें।

4) हमें कौन से तीन भोजन नहीं खाने चाहिए? प्रेरितों 15:20
अ) .... ब) .... स) ....
5) हमारे खान-पान में हमारी क्या विचार-धारा होनी चाहिए? 1 कुरिन्थियों 10:31 ....
....
6) नीतिवचन 23:20 से इन प्रश्नों का उत्तर दें।
अ) क्या ज्यादा मदिरापान करना गलत है? ....
ब) क्या ज्यादा खाना-पीना गलत है? (नोटः लोभ से खाने वाला पेटू होता है।) ....
7) शराब लगातार पीने वाले के साथ क्यो होगा? नीतिवचन 23:29-30
अ) .... ब) .... स) .... ड) .... क) ....
8) नीतिवचन 23:32 के अनुसार शराब मनुष्य को किस प्रकार प्रभावित करती है? ....
....
9) पियक्कड़, अधिक खाने वालों को कौन-सी तीन चीज भोगनी पड़ती है? नीतिवचन 23:21
अ) .... ब) .... स) ....
10) इफिसियों 5:18 को पूरा करें।
दाखरस (शराब) से .... क्योंकि ....
पर ....

स) उपवास (व्रत)

उपवास का अर्थ : 'स्वयं को नकारना' इसका सही अर्थ जानबूझकर खाना न खाना ताकि आत्मिक उत्थान हो, उन सभी चीजों को नकारना जिस से प्रभु के साथ सधन सम्बंध स्थापित करने में कठिनाई हो।

1) परमेश्वर के द्वारा उपवास का उद्देश्य था। यशायाह 58:6-7
अ) .... ब) ....
स) .... ड) ....
इ) .... फ) ....
ज) .... ह) ....
2) बहुत से अवसर जब परमेश्वर के लोगों ने उपवास किया यहीं दिए हैं यही बाइबल वचन के साथ लाइन लगाएँ।

अ) जब परमेश्वर का न्याय आने वाला था।	2 शमूएल 12:15-16
ब) बीमारी के समय में	प्रेरितों 13:2-3
स) जब पाप से पश्चाताप करते हैं	प्रेरित प्रेरितों 14:23
ड) दुष्टात्माओं को निकालने में	प्रेरितों 27:14-20, 29-34
इ) मार्गदर्शन के लिए	एज्रा 10:6
फ) जब खतरा के समय में	योना 3:1-10
ज) अगुवाओं की नियुक्त के समय	मत्ती 17:14-21

3) यशायाह 58:8-11 सही उपवास से क्या-क्या आशीष मिलती है?
अ) तेरा प्रकाश ....
ब) तेरा स्वास्थ्य ....
स) तेरा धर्म ....
ड) महिमा तेरा ....
इ) तू दोहाई देगा ....
फ) प्रभु लगातार ....
ज) काल के समय ....
ह) तेरी हड्डियों को ....
4) दिखावा करने वाले क्यों उपवास करते हैं? मत्ती 6:16 ....
5) हमें उपवास से किसे प्रसन्न करने की इच्छा होनी चाहिए? मत्ती 6:18 ....
6) क्या हमें अपनी प्रार्थना और उपवास का मनुष्यों के आगे दिखावा करना चाहिए? ....

हाँ / नहीं

7) गुप्त में प्रार्थना और उपवास करने से क्या लाभ होगा? मत्ती 6:18

....

पाठ करो:	**रोज की रोटी**	1) 2 **कुरिन्थियों** 9:10	2) **मत्ती** 6:31-32
		1) **मत्ती** 6:16	2) **योएल** 2:12-13

पाठ 11 -- तुम्हारा पहिरावा और बोलचाल

....

हम एक मनुष्य के पहिनावे, बोलचाल, और सफाई से उसके चरित्र का अंदाजा लगाते हैं। मसीह के राजदूत होने के नाते (2 कुरिन्थियों 5:20) हम राजाओं के राजा के राजदूत हैं। इसीलिए हमारी बोलचाल पहिरावा इस प्रकार हो जो प्रभु को प्रसन्न करें।

अ) साफ-सफाई

किसी ने कहा है - "धार्मिकता के बाद साफ-सफाई है" जब यीशु का आत्मा आप पर आता है तो आपके हृदय में यह साफ होने की इच्छा पैदा करती है।

1) बाइबल के अनुसार हमारा शरीर क्या है? 1 कुरिन्थियों 6:19 ....
....

2) एक मसीही को अपने शरीर का प्रयोग कैसे करना चाहिए? 1 कुरिन्थियों 6:20 ....
....

3) यदि कोई अपने शरीर को भ्रष्ट करता है तो परमेश्वर उस के बारे में क्या कहता है? (परमेश्वर का मन्दिर)
1 कुरिन्थियों 3:17 ....
....

4) किस कारण परमेश्वर कहता है कि उसके लोग साफ और पवित्र हों? लैव्यव्यवस्था 20:26 ....
....

5) गिनती 8:21-22 से हम पाते हैं, लेवीय परमेश्वर के लोग (सही उत्तर के नीचे लाइन लगाएँ)
अ) सोचा परमेश्वर से मिलने से पहले उनके लिए साफ कपड़े जरूरी हैं।
ब) सोचा साफ-सफाई का धार्मिकता के साथ कोई सम्बंध नहीं।

6) परमेश्वर ने मूसा से क्यों कहा कि लोग अपने-अपने कपड़े धोएँ? निर्गमन 19:10-11 ....
....

7) इब्रानियों 10:22 में परमेश्वर के निकट आने की चार शर्तें हैं। (कृपया उत्तर पूरा करें)
अ) तो आओ ....
ब) पूरे विश्वास से ....
स) हृदय पर छिड़काव ....
ड) देह को ....

8) हमें किन दो चीजों से स्वयं को शुद्ध करना है? 2 कुरिन्थियों 7:1 ....
....

ब) पहिरावा

कुछ लोग कहते हैं कपड़े पहनना मनुष्य की विचारधारा है। यह जरूरी नहीं है। लेकिन हम बाइबल से देखेंगे परमेश्वर इस विषय में क्या कहता है? आदि में परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी महिमा का पहिरावा दिया। जब आदम और हव्वा ने पाप किया तो उस महिमा के पहिरावे को खो दिया और महसूस किया कि वस्त्रहीन हैं।

1) परमेश्वर ने आदम और हव्वा के लिए क्या किया? उत्पत्ति 3:21 ....
2) शुरू में पहिरावा (कपड़ा) ढकने और बचाव के लिए दिया गया। लेकिन मनुष्य ने इस पहिरावे का उद्देश्य बदल दिया है। आजकल कपड़े इस प्रकार बनाए जाते हैं कि दूसरों का ध्यान आकर्षित करें और विपरीत लिंग को अपनी ओर उकसाएँ।
   अ) हमारे कपड़े पहनने से दूसरे को व्यभिचार करवा सकते हैं। मत्ती 5:27-28 पढ़ें। (सही या गलत उत्तर दें।)
      1) यदि स्त्री जानबूझकर कपड़ों द्वारा मनुष्य को उपसाती है। (अपने द्वारा मनुष्यों की वासना उत्तेजित करती है।) वे व्यभिचार के दोषी हैं। ....
      2) यदि कोई मनुष्य स्त्री को देखता है तो वह व्यभिचार है। ....
      3) यदि कोई पुरुष स्त्री को बुरी नज़र से देखता है तो वह व्यभिचार है। ....
3) क्या स्त्री को पुरुष का, पुरुष को स्त्री का पहिरावा पहनना चाहिए? व्यवस्थाविवरण 22:5 ....
   ....
4) जो लोग ऐसा करते हैं, परमेश्वर उनके बारे में क्या सोचता है? व्यवस्थाविवरण 2:5 ....
   ....
5) बाइबल लम्बे केश रखने वाले मनुष्यों के बारे में क्या कहती है? 1 कुरिन्थियों 11:14 ....
   ....
6) लम्बे बालों का स्त्री के लिए क्या महत्त्व है? 1 कुरिन्थियों 11:15 ....
   ....
7) नए फैशन के बारे में मसीही लोगों का क्या दृष्टिकोण होना चाहिए? रोमियों 12:2 ....
   ....
8) यीशु ने कहा, "आप अपने ढकने के लिए कपड़ों की चिन्ता न करें।" (कृपया सही वाक्य के नीचे लाइन लगाएँ।)
   अ) हमें अपने पहिरावे और रख-रखाव के प्रति ध्यान देना है और परमेश्वर में विश्वास रखना है कि वह हमारी जरूरत पूरी करगा।
   ब) हमें अपने पहिरावे के प्रति ध्यान नहीं देना चाहिए।
   स) हमें अपने पहिरावे के लिए चिन्ता करनी चाहिए।

स) बातचीत का तरीका

हमारी बातचीत हमारे रोजमर्रा जीवन का महत्त्वपूर्ण भाग है, और शब्दों के प्रयोग के द्वारा हम एक दूसरे से संगति करते हैं।

1) बाइबल के अनुसार हमारे शरीर के किस भाग को वश में करना मुश्किल है। याकूब 3:8 ....
2) बाइबल कहती है, "उसी मुँह से .... और .... याकूब 3:10।
3) क्या यह दोनों मसीही के मुँह से आनी चाहिए? याकूब 3:10 ....
4) वह शब्द जो हम बोलते हैं कहाँ से आता है? मत्ती 12:34 ....
   ....
5) सही उत्तर के नीचे लाइन लगाएँ - हमें अपनी बोलचाल सुधारने के लिए।
   अ) जो कुछ मन में आता है बोल दो।
   ब) सही शब्दों के लिए अधिकतर बिकने वाले उपन्यासों को पढ़ना चाहिए।
   स) जब बोलने वाले हैं उससे पहले स्वयं को पूछना है। क्या यह दयालु है? क्या यह सच है? क्या यह जरूरी है?
6) मत्ती 12:36 पढ़कर सही उत्तर के नीचे लाइन लगाएँ।
   अ) बेकार (व्यर्थ) के वचन से कुछ फर्क नहीं पड़ता और हम जल्दी ही भूल जाते हैं।
   ब) व्यर्थ के वचन का बुरा प्रभाव पड़ता है और न्याय के दिन उसका उत्तर देना पड़ेगा।
7) वह व्यक्ति जो कहता है कि धार्मिक है परन्तु उसकी जुबान पर कोई अंकुश नहीं उसके बारे में क्या दो चीजें कही गई हैं? याकूब 1:26
   अ) ....
   ब) ....

8) बाइबल कहती है "तुम्हें अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ में नहीं लेना चाहिए।" इस से आप क्या समझते हैं ? लिखिए।
....
....
9) इफिसियों 4:25 पढ़ें इस कारण झूठ बोलना .... सच बोले.......................................
क्योंकि हम आपस में एक दूसरे के अंग हैं ?
10) जो कोई जीवन की इच्छा रखता है, और अच्छे दिन देखना चाहता है उसे क्या दो शर्तें पूरी करनी हैं ? 1 पतरस 3:10
अ) ....
ब) ....
11) भजनसंहिता 141:3 हर सुबह के लिए उठते समय की अच्छी प्रार्थना है। (शाली स्थान भर कर पूरा करें।)
हे प्रभु मेरे मुख पर .... बैठा ....
मेरे होठों के द्वार .... कर।

<u>पाठ करो:</u>	**परमेश्वर का मंदिर**	1) 1 **कुरिन्थियों** 6:19-20
	जीवन और मृत्यु	2) **नीतिवचन** 18:21

पाठ 12 -- हमारी नागरिकता

....

बाइबल बताती है कि "यीशु बुद्धि और डीलडौल में तथा परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया" (लूका 2:52)। हमें भी अपना जीवन प्रभु और मनुष्य के साथ शान्ति से बिताना चाहिए। हमारा सबसे बड़ा कर्तव्य परमेश्वर के प्रति निभाना है ताकि उसकी प्रथम आज्ञा के अनुसार परमेश्वर को पूरे मन से प्रेम करें। और दूसरी महान आज्ञा यह कि हम अपने पड़ोसी से अपनी तरह प्यार करें। रोमियों 12:18 में हम पढ़ते हैं "जहाँ तक हो सके, तुम अपनी ओर से सब मनुष्यों के साथ मेल-मिलाप रखो।" यदि हम इन दो महान आज्ञाओं का पालन करते हैं तब हम अपने देश के अच्छे नागरिक होंगे और हमारे जीवन से प्रभु प्रसन्न होगा।

1) हमारा स्वदेश कहाँ है ? फिलिप्पियों 3:20 (नोटः स्वदेश यहाँ नागरिकता दर्शाता है।)
2) यदि (जब कि) हमारा स्वदेश (सच्चा घर) स्वर्ग में है और पृथ्वी पर हम केवल मुसाफिर हैं तो हमारा मुख्य ध्यान कहाँ होना चाहिए ? (सही उत्तर के नीचे लाइन लगाएँ))
अ) इस संसार की भौतिक वस्तुओं पर।
ब) हम परमेश्वर के लिए जीएं और दूसरों की परमेश्वर को जानने में सहायता करें।
3) चाहे हमारा स्वदेश (नागरिकता) स्वर्ग है फिर भी हमें यहाँ कुछ जिम्मेवारियाँ पूरी करनी है। क्या यहाँ के शासकों के बारे में बुरा बोलना ठीक है ? प्रेरितों 23:5 ....
....
4) अपने प्रधानों की बुराई करने के बजाय हमें उनके लिए .... करनी चाहिए। 1 तीमुथियुस 2:1,2
5) हमें क्यों राजाओं और उँचे पद वालों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए ? 1 तीमुथियुस 2:2 ....
....
6) रोमियों 13:1 कहता है "हर एक व्यक्ति प्रधान अधिकारियों के अधीन रहे क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं जो परमेश्वर की ओर से न हो। जो अधिकार हैं वे परमेश्वर द्वारा ठहराए गए हैं।" (सही उत्तर के नीचे लाइन लगाए।)
अ) परमेश्वर संसार की अधिकार की शक्तियों को नज़रअंदाज करता है।
ब) परमेश्वर स्वयं अधिकार देता है या अधिकारी होने की सामर्थ्य देता है।
7) हम जब सरकार की आज्ञा का उल्लंघन करते हैं तो हम किस की विधि का विरोध (सामना) कर रहे हैं ? रोमियों 13:2

....

8) जो परमेश्वर द्वारा स्थापित किए गए अधिकार का विरोध करता है उन्हें क्या होगा? रोमियों 13:2 ....

....

9) रोमियों 13:7 में आज्ञा है कि "हर एक का हक्क चुकाया करो, जिसे कर देना चाहिए उसे कर दो, जिसे महसूल देना चाहिए उसे महसूल दो, जिससे डरना चाहिए उससे डरो, जिसका आदर करना चाहिए उसका आदर करो।" इसका अर्थ है। (सही उत्तर के नीचे लाइन लगाएँ।)
   अ) हमें कर नहीं देना चाहिए, परमेश्वर को छोड़ किसी का सम्मान नहीं करना चाहिए।
   ब) हमें नम्र होना, अपना कर देना, कर्तव्य पूरा करना और आदर करना चाहिए जहाँ जरूरत है।
   स) हमें कर देने से मना नहीं करना है। कि हम कर्तव्य का पालन करें, आदर करें, जब हम से माँगा जाता है।

10) कैसर रोम का राजा था जब यीशु ने यह वचन कहे "जो कैसर का है वह कैसर को दो, और जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर को दो।" (लूका 20:25) इसका अर्थ है। (सही उत्तर के नीचे लाइन लगाएँ।)
   अ) हमें सरकार को, और परमेश्वर को जो कुछ हम से आशा की जाती है देना चाहिए।
   ब) हमें अपनी सरकार की निन्दा लेकिन परमेश्वर की प्रशंसा करनी चाहिए।
   स) हमें सरकार के लाभ को लेकर परमेश्वर को देना चाहिए।

11) प्रेरितों 4:18-20, 5:7-29, जब हमारे देश के नियम प्रभु के नियम के विरुद्ध है तब हमें किस की आज्ञा का पालन करना है, मनुष्य या परमेश्वर का? ....

....

12) इब्रानियों 13:17 से यह वचन पूरा करें।
   अपने अगुवों की बात मानो ....

....

.... तुम्हें कुछ लाभ नहीं।

एक मनुष्य जिसकी परमेश्वर के साथ शान्ति है, वह एक अच्छा नागरिक होगा, चाहे सरकार में कितनी भी अव्यवस्था हो, चाहे उसे कितनी ही कठिनाइयों का सामना करने पड़े, वह जानता है कि परमेश्वर के हाथ में सब नियंत्रण है। यदि आप आनन्दपूर्ण जीवन चाहते हैं तो इन वचनों पर ध्यान दें। (फिलिप्पियों 4:6-7) "किसी भी बात की चिन्ता न करो हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ, परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ, तब परमेश्वर की शान्ति, जो हमारी समझ से बिलकुल परे है, तुम्हारे हृदय और विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेंगी।" (जीवित पत्र)

पाठ करो: **हमारी नागरिकता** 1) **फिलिप्पियों** 3:20
1) **इब्रानियों** 13:17

पाठ 13 -- जीविका की जिम्मेवारी

....

यह परमेश्वर की इच्छा है कि हम सभी किसी प्रकार कार्य में व्यस्त रहें। जब हम उसके निर्धारित स्थान पर कार्य करते हैं, हम परमेश्वर के वायदे के पूरे होने का विश्वास कर सकते हैं। हमारा यह पहला कार्य है कि हम परमेश्वर के स्थान पर हम कार्य करें, और ऐसे कार्य करें जैसे हम परमेश्वर के प्रति कार्य करें।

1) संसार में पाप प्रविष्ठ होने से पहले, और मानव जाति पर शाप आने से पहले, परमेश्वर ने मनुष्य को काम करने, जिम्मेवारी उठाने को उसके जीवन का महत्त्वपूर्ण भाग बनाया। परमेश्वर ने आदम को क्या काम दिया? उत्पत्ति 2:15

....

2) परमेश्वर का शाप आदम पर पाप के कारण आया, परमेशवर ने उन्हें बाग में से निकाल दिया, और मेहनत से माथे का पसीना बहाकर उसे कार्य करने को कहा। परमेश्वर ने उसे किस प्रकार का काम दिया ? उत्पत्ति 3:23 ....

....

3) तीन छोटी-छोटी आज्ञाएं 1 थिस्स 4:11 में, उनके लिए दी गई हैं जो परमेश्वर के पीछे चलते हैं। कृपया उन्हें लिखें।
अ) .... ब) .... स) ....

4) पौलुस इन छोटी आज्ञाओं के दो कारण बताता है कृपया यह वचन पूरा करें। 1 थिस्स 4:12
अ) ताकि मेरे विश्वासी लोग ....
ब) तुम्हें किसी ....

5) बाइबल इस व्यक्ति के बारे में क्या दो बातें कहती है, जो अपने परिवार की जरूरत को पूरा नहीं करता है ?
1 तीमुतियुस 5:8 (नोटः जो परिवार की चिन्ता न करे वह अविश्वासी है।)
अ) .... ब) ....

6) प्रेरित पौलुस के द्वारा परमेश्वर उन लोगों को आज्ञा (नियम) देता है जो कार्य नहीं करना चाहते हैं। पौलुस ने क्या लिखा ? 2 थिस्स 3:10 ....

7) अगले वचन से हम जानते हैं यदि हम कार्य में व्यस्त नहीं होते तो हम अशान्ति फैलाने वाले और दूसरे की बुराई करते हैं। वचन पूरा करें।
"हम सुनते हैं कि अनेक लोग तुम्हारे बीच में अनुचित आचरण कर रहे हैं, वे कुछ काम नहीं करते बल्कि ....
...." 2 थिस्स 3:11

8) जो लोग काम नहीं करते उनके लिए प्रेरित पौलुस क्या आज्ञा देते हैं ? 2 थिस्स 3:12 ....
....

अ) सेवक

1) कुलुस्सियों 3:22-24 पढ़ने के बाद सब से सही उत्तर दें या (अ, ब, स) लिखें।
अ) सेवक (काम करने वालों को) मालिक की आज्ञा पालन करना है सही बातों में, कुछ बातों में, नहीं।
ब) सेवक को मालिक की सेवकाई करनी है।
1) वही करना जिसकी आज्ञा मिली है।
2) मालिक को प्रभावित करने के लिए काम करें।
3) आशा से अधिक कार्य करें।
स) हमें अपना कार्य करना चाहिए।
1) अनिच्छा से, यह जानते हुए कि हमें कम वेतन मिलता है।
2) उत्सुकता से, परमेश्वर को खुश करने के लिए कार्य करें।
3) इस इच्छा से कि हम यह दिखा सकें कि दूसरों का काम कितना अकुशल है।

2) हम शायद सरकारी नौकर, व्यवसाय करने वाले, या मसीही संस्था में कार्यरत हों लेकिन-
अ) यदि हम मसीह के अनुयायी हैं, तो हम सचमुच किस की सेवा कर रहे हैं ? कुलुस्सियों 3:23 ....
ब) अन्त में हमारा सही वेतन कौन देगा ? कुलुस्सियों 3:24 ....

3) प्रभु के दास होने के नाते हमारी अपने मालिक के प्रति क्या विचार धारा होनी चाहिए ? सबसे सही उत्तर के नीचे लाइन लगाएँ।
अ) हमें अपने स्वर्गीय पिता का सम्मान करना चाहिए, लेकिन अपने मालिक को शाप देना चाहिए।
ब0 हमें अपने मालिक को प्रेम और सम्मान देना चाहिए।

4) मसीही सेवक को अपने मालिकों को सभी सम्मान योग्य समझना चाहिए, क्यों ? 1 तीमुतियुस 6:1
"वे सब .... और उसका .... निन्दा न हो।"
(नीचे गिराने का अर्थ निन्दा करना है।)

5) एक मसीही सेवक को ईमानदारी से परिश्रम के मसीही मालिक का कार्य करना चाहिए। 1 तीमुथियुस 6:2
अ) "वे ...."
ब) "वे .... और ...."

6) सही उत्तर के नीचे लाइन लगाएँ। 1 पतरस 2:18

अ) हमें, सेवक होने के नाते केवल अच्छे, दयालु मालिक की आज्ञा का पालन करना चाहिए।
ब) हमें अच्छे, कठोर दोनों मालिकों की आज्ञा का पालन करना चाहिए।

ब) मालिक

1) मालिक को काम करनेवालों को पूरा वेतन बराबर देना चाहिए। मालिक को अपने सेवकों को न्यायपूर्ण होने का कारण बताओ। कुलुस्सियों 4:1

....

....

2) क्या सेवकों को डराना धमकाना सही है ? इफिसियों 6:9 (सही उत्तर के नीचे लाइन लगाएँ)
3) इफिसियों 6:9 पढ़ कर सही उत्तर के नीच लाइन लगाएँ।
   अ) परमेश्वर मालिक का सम्मान, सेवक से ज्यादा करता है।
   ब) परमेश्वर नौकरों से प्यार, मालिकों को धिक्कारता है।
   स) परमेश्वर मालिक व सेवक दोनों का बराबर सम्मान करता है।
4) जो व्यक्ति अपने सेवक की पूरी मजदूरी नहीं देता है, परमेश्वर की नज़र में वह .... शापित/आशीषित/ऊँचा उठाया हुआ है (सही उत्तर के नीचे लाइन लगाएँ)। यिर्मयाह 22:13
5) प्रभु यीशु ने दो साधारण आज्ञाएं दीं कि कौन महान और बड़ा हो सकता है और किस से वास्तविक महानता प्रकट होती है। लूका 22:26, वह क्या आज्ञाएँ हैं ?
   अ) "वह जो तुम में से महान है, ...
   ब) "वह जो अगुवा है, ...
6) वह लोग जो ऊँचे स्थान (पद) पर हैं उनके लिए यीशु किस प्रकार से विशेष उदाहरण है ? फिलिप्पियों 2:5-7

....

....

....

<u>पाठ करो:</u> **जीविका की जिम्मेवारी** 1) **प्रेरितों का काम** 20:35 2) 1 **तीमुथियुस** 5:8

पाठ 14 -- पैसा और सम्पत्ति

....

सराफ लोग सोने की परीक्षा अम्ल से करते हैं। यदि उसमें कोई मिलावट या अवगुण होता है तो अम्ल उसे जला देता है। इसे अम्लीय परीक्षा कहते हैं। प्रभु यीशु के अनुयायी की परीक्षा उसकी इमानदारी और पैसों के प्रति उसके दृष्टिकोण से होती है। निश्चय ही शैतान ने कई मसीही लोगों को इस क्षेत्र में हराया है। आप पैसों के मामले में कितने इमानदार हैं। आइए देखें प्रभु हम से क्या आशा रखते हैं।

1) व्यवस्थाविवरण 16:19 में लिखा है तुम मनुष्यों को सम्मान न दो इसका सम्मान न देना नहीं बल्कि पक्षपात न करना है। हमें बताया गया है कि उपहार नहीं लेना उपहार ये यहाँ हमें घूस न लेना समझते हैं। इसके अनुसार हमें घूस क्यों नहीं लेना चाहिए ?
   अ) ....
   ब) ....
2) हमें पैसों के सभी मामलों में इमानदार रहने का नियम दिया गया है ? इसे पूरा कर याद करें। व्यवस्थाविवरण 16:20

"जो कुछ नितान्त .... पीछा पकड़े रहना।"

3) किन मुख्य चार बातों में इसे अन्याय करने से सावधान रहना है? नीतिवचन 19:34

अ) .... ब) ....

स) .... ड) ....

4) परमेश्वर पड़ोसी की सम्पत्ति के बारे में क्या कहता है? व्यवस्थाविवरण 19:14 ....

....

5) जक्कई ने दूसरों को धोखा देकर बहुत धन कमाया, लेकिन एक दिन उसने प्रभु यीशु को उद्धारकर्त्ता माना, उसका जीवन बदल गया, उसने दो बातें कहीं जिससे पता चलता है कि बदल गया (उसका हृदय परिवर्तन हुआ)। वे क्या बातें थीं? लूका 19:8

अ) ....

ब) ....

अ) हमें अपने दिल को धन पर केन्द्रित नहीं करना चाहिए –

1) बहुत लोग महसूस करते हैं धन मिलना, सांसारिक वस्तुओं की प्राप्ति से बहुत लाभ है, लेकिन बाइबल किसे सबसे बड़ा लाभ बताती है? 1 तीमुथियुस 6:6 ....

....

2) ज्यादा लोग अमीर (धनवान) होने के धन की बुराइयों से नहीं बच सकते हैं वह क्या तीन बुराइयाँ इन्तज़ार करती हैं, उन लोगों का जो धनवान होने की इच्छा रखते हैं? कृपया इस प्रश्न का उत्तर दें। 1 तीमुथियुस 6:9

अ) वे गिरते ....

ब) वे गिरते ....

स) वे गिरते ....

3) परमेश्वर के अनुसार बुराई की जड़ क्या है? 1 तीमुथियुस 6:10 ....

....

4) कौन से दो उदाहरण दिए गए हैं उनके बारे में जो पैसे के पीछे भागते हैं? 1 तीमुथियुस 6:10

अ) ....

ब) ....

5) जो लोग धार्मिक हैं धनवानों को क्या आज्ञा दें, वह क्या सात आज्ञाएँ हैं धनवानों के लिए? 1 तीमुथियुस 6:17-18

अ) .... ब) ....

स) ....

ड) .... इ) ....

फ) .... ज) ....

6) प्रभु यीशु ने कहा धनवान को प्रभु के राज्य में प्रवेश करना कठिन है, यह सत्य है क्योंकि

अ) परमेश्वर धनवानों को प्रेम नहीं करता, इसलिए कुछ लोगों को प्रवेश देता है।

ब) धनी लगों का प्रभु उनका धन हो जाता है और उद्धार के लिए प्रभु यीशु पर विश्वास करना कठिन हो जाता है।

(कृपया सही उत्तर के नीचे लाइन लगाएँ)

7) अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा करने के बजाय क्या करना चाहिए? मत्ती 6:19-20 ....

....

8) अ) धन पृथ्वी पर और स्वर्ग में जमा किया जा सकता है, पृथ्वी पर जमा धन को क्या हो सकता है? मत्ती 6:20

....

ब) धरती पर धन जमा करने का एक और खतरा है कि हम स्वर्गीय बातों में ध्यान न देंगे। उस वचन को लिखें जो उसका विचार बताती है। मत्ती 6:21

"जहाँ तेरा धन होगा ...."

9) इब्रानियों 13:5 में क्या अच्छा कारण बताया गया है कि हमें धन से प्रेम नहीं करना चाहिए और जो कुछ है उस से तृप्त रहना चाहिए? ....

....

10) धन-सम्पत्ति अपने आप में बुरे नहीं हैं, यह जब हमारा मन प्रभु के बजाय धन-सम्पत्ति पर ज्यादा रहता है तो वह बुराई है। बाइबल कहती है कि परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग समृद्ध और स्वस्थ्य हों (3 यूहन्ना 2)। यहोशू 1:8 में हमें सफलता की कुंजी मिलती है "हमें प्रभु के वचन का रोज मनन करना है, (पढ़ना और सोचना है) और उसकी आज्ञाओं का पालन करना है। और तब परमेश्वर कहता है, "व्यवस्था की यह पुस्तक ....
...., और तू प्रभावशाली होगा" यहोशू 1:8।

ब) हमें भविष्य की चिन्ता नहीं करनी चाहिए -

1) वह तीन चीजें हैं जिनकी हमें चिन्ता नहीं करनी है। हम क्या खाएँगे, हम क्या पीएँगे, हम क्या कपड़े पहनेंगे। हमें इन तीन जरूरतों की पूर्ति के लिए क्या करना चाहिए? मत्ती 6:31-33 ....
....
2) हमें कहा गया कि चिन्ता न करो लेकिन हमें अपनी प्रार्थना परमेश्वर को बतानी है। वह कौन से तीन तरीके हैं जिनके द्वारा हम अपनी जरूरत परमेश्वर को बता सकते हैं? फिलिप्पियों 4:6
   अ) .... ब) .... स) ....
3) हमें अपनी जरूरतों और चिन्ताओं का क्या करना चाहिए? 1 पतरस 5:7 ....
....
4) भजनसंहिता 23:1 कहती है "प्रभु मेरा चरवाहा है, मुझे कोई घटी नहीं है" इसका अर्थ है :
   अ) जिस प्रकार चरवाहा, भेड़ों को चराता, देखभाल करता है, उसी प्रकार यीशु भी अपने लोगों की देखभाल करता है।
   ब) हमें कोई काम नहीं करना चाहिए क्योंकि परमेश्वर मेरी सारी जरूरतों को पूरा करता है।
   (कृपया सही उत्तर के नीचे लाइन लगाएँ।)

स) हमें अपने जीवन में परमेश्वर को पहला स्थान देना है-

1) हमारी आत्मा के प्रति क्या खतरा है जब हम खा पीकर तृप्त, अच्छे घर बना कर उसमें रहते हैं, और जब हमारा सोना, चाँदी बढ़ जाता है। व्यवस्थाविवरण 8:11-18 (कृपया खाली स्थान भरें।)
   अ) "तब तुम्हारा हृदय ...." (वचन 14)
   ब) "तब .... तुम्हारे प्रभु" (वचन 14)
   स) "तब तुम अपने हृदय में कहो, ...
   ...." (वचन 17)
2) यदि परमेश्वर की सन्तान धनी होती है उसे कमाने की ताकत कहाँ से आती है? व्यवस्थाविवरण 8:18
....
3) बाइबल कहती है दो प्रकार के लोग गरीब होते हैं वे कौन हैं? नीतिवचन 22:16
   अ) ....
   ब) ....
4) लूका 12:15-21, दृष्टान्त पढ़ने के बाद अपने शब्दों में लिखें कि प्रभु ने अमीर (धनवान) को मूर्ख क्यों कहा?
....
....
....
5) लभी लोग जिस वस्तु की इच्छा करते हैं उसे अपना मूर्ति पूजा की तरह प्रभु बना लेते हैं, ऐसे लोग परमेश्वर के राज्य में किस चीज के वारिस होंगे? 1 कुरिन्थियों 6:9-10 ....
....

ड) उदार देना और ब्याज लेना-

1) बाइबल हमें बताती है हमें किसी से उधार नहीं लेना चाहिए बल्कि सब मनुष्यों से प्रेम करो। रोमियों 13:8
....
2) महाजन बनकर ऋण देना ब्याज लेने के बराबर है यदि हम किसी गरीब को ऋण देते हैं इस आशा से कि हमें ब्याज मिलेगा। बाइबल इसके बारे में क्या कहती है? निर्गमन 22:25 ....

....

....

3) बाइबल ऐसे व्यक्ति का विवरण देती है जो कभी न डिगेगा (गिरेगा) वह कभी न डगमगाएगा (स्थिर रहेगा) और विश्वासयोग्य है। वही व्यक्ति प्रभु के तम्बू में, पवित्र पर्वत पर निवास करेगा। ऐसे व्यक्ति के लिए क्या आठ चीजें बताई गई जो प्रभु की संगति में प्रसन्न है। भजनसंहिता 15:3,5

अ) .... ब) ....

स) .... ड) ....

इ) .... फ) ....

ज) .... ह) ....

4) जो व्यक्ति कर्ज लेकर वापिस नहीं करता है वह किस प्रकार का व्यक्ति है? भजनसंहिता 37:21 ....

....

<u>**पाठ करो:**</u> **पैसा और सम्पत्ति** 1) **व्यवस्थाविवरण** 8:18

2) **मत्ती** 6:31-32

पाठ 15 -- सामाजिक जिम्मेवारियाँ

....

एक मसीही को सताने वाले, विरोध करने वाले, हमला करने वाले के प्रति क्या दृष्टिकोण (विचारधारा) होनी चाहिए? सुसमाचार प्रचारक डॉक्टर ओसवॉल्ड जे. स्मिथ कहते हैं, कई वर्षो से मैं ने एक उद्देश्य को माना है जो मेरे साथ रहा है जिसमें केवल चार शब्द हैं 'न हमला न बचाव'। मैं किसी पर व्यक्तिगत रूप में हमला नहीं करता और जब हमला होता है अपना बचाव नहीं करता। मैं पूरा मामला परमेश्वर के पास छोड़ देता हूँ। और हमारे लिए भी एक अच्छा विचार है जैसे हम इस अध्याय में पढ़ते हैं।

अ) बाद, प्रतिवाद

1) 1 **कुरिन्थियों** 6:1-7 में पौलुस दो मसीही संघटन के बीच के संघर्ष के बारे में लिखते हैं। सात वचन के अनुसार क्या यह मसीही के लिए उचित (सही) हैं कि वह न्याय के लिए अदालत में मुकद्दमा करे या दूसरे पर दोष लगाए? **हाँ/नहीं**

2) मसीही लोगों के वाद-प्रतिवाद (झगड़े) किस के आगे होने चाहिए? **(कृपया सही उत्तर के नीचे लाइन लगाएँ)**

अ) अविश्वासी प्रधानों के आगे (अधिकारियों) ब) मसीही सन्तों के आगे, बुद्धिमान मसीही भाई के सामने

3) यदि कोई मसीही भाई के प्रति कोई दूसरा मसीही भाई पाप करता है तो उसे न्यायालय के बजाय कहाँ जाना चाहिए? मत्ती 18:15 ....

4) यदि किसी भाई को उसका पाप आप बताते हैं वह उस को अनसुना करता है तब हमें क्या करना चाहिए? मत्ती 18:16

....

5) यदि वह भाई गवाही सुनने से इन्कार करता है तो क्या करना चाहिए?
"तब तू कलीसिया ...." मत्ती 18:17

6) यदि वह भाई कलीसिया की भी बात न माने, तब क्या करना चाहिए? मत्ती 18:17
"तब आप उसको ...."

7) यदि एक भाई पाप करता है तो हमें क्या करना चाहिए? लूका 17:3 (कृपया सही उत्तर के नीचे लाइन लगाएँ)

अ) हमें ऐसा व्यवहार नहीं करना जिससे उसे लगे कि उसने अपराध किया है।

ब) हमें उसकी ताड़ना करनी चाहिए और माफ करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

8) यीशु ने कहा "यदि दिन भर में वह सात बार अपराध करे और सातों बार तेरे पास आकर कहे मैं पछताता हूँ तो उसे क्षमा कर" लूका 17:4 (कृपया सही उत्तर के नीचे लाइन लगाएँ)

अ) हमें हमेशा क्षमा करने के लिए तैयार रहना चाहिए चाहे वह कितनी बार अपराध करे।

ब) यदि कोई व्यक्ति हम से सात बार क्षमा माँगता है तभी हमें क्षमा करना चाहिए।

स) जो भाई बार-बार अपराध करता है उस भाई को कभी क्षमा नहीं करना चाहिए।

9) यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा जाए तो उस की देखभाल या अपराधी को संभालना चाहिए? गलातियों 6:1

....

10) यदि कोई मनुष्य अपराध में पकड़ा जाए उसे किस मन से संभालना चाहिए? गलातियों 6:1 ....

ब) तुम्हारे दुश्मन

1) यदि लोगों ने यीशु मसीह से घृणा की, तब इसी कारण लोग तुम से घृणा करेंगे, यीशु मसीह ने सूली पर हमारे लिए क्या उदाहरण प्रकट किया जब उसने आखिरी वचन कहे? लूका 23:33-34 ....

....

2) अब्राहम लिंकन ने कहा, वह शत्रुओं को मिटाने (नाश करने) का सबसे अच्छा तरीका जानता था वह यह कि उनसे मित्रता कर लें। 'अपने शत्रु से प्रेम करो' इन वाक्यों को पूरा करो जो कि बताते हैं हम किस प्रकार शत्रु को जीत सकते हैं। लूका 6:27-29

अ) जो तुम से बैर करे .... ब) जो तुम्हें शाप दे ....

स) जो तुम्हारा अपमान करे .... ड) जो तेरे एक गाल पर थप्पड़ मारे..........................

3) बाइबल कहती है किसी व्यक्ति की बुराई के बदले बुरा न करो इस से आप क्या समझते हैं? संक्षप में लिखें।

....

4) यदि तुम्हारा शत्रु जरूरत की अवस्था में है तो हमारा उसके प्रति क्या व्यवहार होना चाहिए? रोमियों 1:20 ....

....

5) हमें बुराई को किस से जीतना है? (बुराई पर जय कैसे प्राप्त करें?) रोमियों 12:21 ....

6) यदि आपका शत्रु बुरी तरह घायल हुआ या कठिनाई में है तो आप का क्या दृष्टिकोण होना चाहिए?

नीतिवचन 24:17,29 **(कृपया सही उत्तर के नीचे लाइन लगाएँ)**

अ) उसको उचित सजा मिली और भी सजा मिलनी चाहिए। ब) अब मुझ को बदला लेने का मौका मिला।

स) अब एक मौका है यह दिखाने का चाहे मुझे उसके बुरे कार्यो से घृणा है पर मैं उस से प्रेम करता हूँ।

7) प्रभु का वचन कहता है, "यीशु मसीह ने दुख उठाया और हमारे लिए एक उदाहरण छोड़ा कि हम उसके कदमों पर चलें,' यहाँ पर तीन कदम बताए गए हैं जिस के द्वारा उस के दुख में शामिल हो सकते हैं। वे क्या हैं? (1 पतरस 2:23)

अ) .... ब) ....

स) ....

स) सही कार्य के लिए सताया जाना

1) यीशु ने कहा सेवक अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता, जब यीशु को सताया गया, उसके सेवकों को क्या आशा होनी चाहिए? यूहन्ना 15:20 ....

2) यीशु ने चेतावनी दी कि जो मेरा अनुसरण करते हैं एक समय आएगा कि तुम्हें सताया जाएगा, जेल में डाला जाएगा, लेकिन यीशु ने कहा, "वह तुम्हारे लिए एक दुर्घटना होगी", लेकिन वह तुम्हारे लिए मेरी गवाही ....

...." लूका 21:13

3) विरोधी का सामना करने के लिए हमें बोलने में कौन सहायता करेगा? लूका 21:14,15 ....

4) यीशु ने अपने चेलों (अनुयायियों) को सिखाया कि चाहे शरीर मर जाता है लेकिन आत्मा जो यीशु में विश्वास रखती है कभी न मरेगी, यीशु ने यह भी आज्ञा दी कि यदि हम उस पर विश्वास नहीं करते हैं तो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में डाला जाएगा। इस तथ्य को पूरा लिखें। मत्ती 10:28

अ) "उन का भय न करो ....

ब) "बल्कि उसका भय करो जो ....

5) जो धर्म के कारण सताए गए उन को क्या मिलेगा? मत्ती 5:10 ....

6) यीशु मसीह उस व्यक्ति को सबसे धन्य या आनन्दित बताते हैं जब मनुष्य मसीह के कारण उसकी निन्दा करें, सताएँ, यीशु कहता है, "तुम आनन्दित और मगन हो" ऐसे दो कारण बताएँ जब हम मसीह में सताए जाएँ तो हम आनन्दित हों। मत्ती 5:11,12
   अ) ....
   ब) ....
7) प्रभु यीशु में हमें दो चीजें मिली हैं वह क्या हैं ? फिलिप्पियों 1:29
   अ) .... ब) ....
8) जैसे-जैसे मसीह के दुखों में हम सहभागी होते हैं आनन्दित और मग्न हों फिर यदि मसीह के नाम के लिए तुम्हारी निन्दा की जाती है तो तुम धन्य हो। हम क्यों धन्य हैं ? 1 पतरस 4:13,14 ....
   ....
9) पर यदि मसीह होने के कारण हम सताए जाते हैं तो हमारी विचारधारा दृष्टिकोण क्या होना चाहिए ? 1 पतरस 4:16
   अ) ....
   ब) ....
10) प्रभु यीशु हमें बताते हैं कि यदि संसार में हमें सताया जाता है तो हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए, "बल्कि तुम खुश रहो और ढाढ़स बाँधो", खुश रहो और ढाढ़स बाँधो का क्या कारण बताया गया ? यूहन्ना 16:33 ....
   ....

प्रार्थनाः हे प्रभु जो मेरे साथ मुकद्दमा लड़ते हैं, उनके साथ तू मुकद्दमा लड़, जो मुझ से युद्ध करते हैं उन से तू युद्ध कर। जो मेरी हानि से आनन्दित होते हैं उनके मुँह लज्जा के मारे एक साथ काले हों। जो मेरे विरुद्ध बड़ाई मारते हैं वह लज्जा और अनादर से ढँप जाएँ। जो मेरे धर्म से प्रसन्न रहते हैं वह जय जयकार और आनन्द करें, और निरन्तर कहते रहें, प्रभु की बड़ाई हो, जो अपने दास के कुशल से प्रसन्न होता है। तब मेरे मुँह से तेरे धर्म की चर्चा होगी, और दिन भर तेरी स्तुति निकलेगी। भजन संहिता 35:1, 26-28

पाठ करोः **सामाजिक जिम्मेवारियाँः** **लूका** 6:27,28; **रोमियों** 12:20-21

पाठ 16 -- मूर्तिपूजा और जादू-टोना

परमेश्वर मूर्तियों की शक्ति को पूरी तरह इन्कार करता है। जबकि वह हमें चेतावनी देता है, आत्माओं की पूजा करना खतरनाक है, क्योंकि वे शैतान की शक्तियाँ हैं। इस अध्याय में हम दो खरतनाक शैतान के मन्त्रों के बारे में जानेंगे जो परमेश्वर की स्तुति लेते हैं।

अ) मूर्तिपूजा

शब्दकोष के अनुसार मूर्ति का अर्थ है एक मूर्ति जो ईश्वर को दर्शाती है, और एक ऐसी वस्तु है जिसकी पूजा की जाती है, लेकिन हमें यह भी याद है कि मूर्ति कोई भी वस्तु हो सकती है, जिसके हम तन मन से पीछ पड़े हैं।
(अपने आप को समर्पित कर दिया है।) चाहे वो पैसा, पढ़ाई, सुख या अभिमान हो।

1) निर्गमन 20:4,5 "खुदी हुई मूर्ति" के बारे में तीन कड़ी आज्ञाएँ देती है। ये तीन आज्ञाएँ क्या हैं ?
   अ) "तू अपने लिए मूर्ति खोदकर ...." ब) "तू उनको दण्डवत्...................................."
   स) "न ही उनकी ...."
2) क्या आप एक कारण बता सकते हैं कि ये आज्ञाएँ हमें क्यों दी गई हैं ? (निर्गमन 20:3)

....

3) परमेश्वर कहाँ रहता है ? (2 कुरिन्थियों 6:16) (सही उत्तर के नीचे लाइन लगाएँ।)
अ) मूर्तियों और मंदिरों में ब) चर्च और इमारतों में स) मनुष्यों में जो उसे प्रेम करते हैं

4) खाली स्थान भरें: जहाँ परमेश्वर कहता है, हमें मूर्तियों से, अशुद्ध वस्तुओं से दूर रहना है।
"उनके बीच में से .... और .... प्रभु कहता है अशुद्ध वस्तुओं को मत छुओ। (2 कुरिन्थियों 6:17-18)

5) वह लोग जो अन्धकार से निकलकर प्रभु यीशु की संगति करते हैं उनके लिए क्या तीन वायदे हैं ? (2 कुरिन्थियों 6:17, 18)
अ) .... ब) .... स) ....

6) खाली स्थान भरो: (1 कुरिन्थियों 8:4)
"हम यह जानते हैं .... जगत में"।
इसका अर्थ है: (सही उत्तर के नीचे लाइन लगाएँ)
अ) मूर्ति पर सांसारिक दिमाग का कोई असर नहीं होता है।
ब) हम जो में संसार हैं, उनके लिए मूर्ति का कोई उद्देश्य नहीं क्योंकि वह अदृश्य परमेश्वर को जानने में सहायता नहीं करती है।

7) बाइबल कहती है मूर्तियाँ मनुष्य के हाथों का काम हैं। वे शक्तिहीन हैं, उनके मुँह, आँखें, कान हैं वे बोल, देख, सुन नहीं सकती हैं। जो मूर्ति बनाते और उसमें विश्वास करते हैं उनके बारे में क्या कहा जाता है ? (भजन 135:15-18)
....

8) तब अन्य जाति के लोग बलि चढ़ाते हैं, वे परमेश्वर के लिए ननहीं बल्कि किसे बलि चढ़ाते हैं ? (1 कुरिन्थियों 10:20)
....

ब) जादू-टोना / भविष्य बताना

1) एक व्यक्ति को ओझाओं और भूत साधने वालों की ओर नहीं फिरना चाहिए। क्यों ? (लैव्यव्यवस्था 19:31)
....

2) परमेश्वर ने कठोरता से इस्राएलियों से कहा, वे ओझाओं, भूत साधने की वालों ओर न फिरें। परमेश्वर ने उन्हें क्या चेतावनी दी, क्या उस चेतावनी की ओर हमें ध्यान देना चाहिए? (लैव्यव्यवस्था 20:6)
....

3) कई लोग ऐसा सोचते हैं कि जो लोग बुरी आत्माओं को बुलाते हैं उन के साथ सम्बंध रखने से कुछ फर्क नहीं पड़ता जब तक वह खुद उस प्रक्रिया में भाग नहीं लेते, लेकिन बाइबल इन सब कार्यों को घृणित ठहराती है। परमेश्वर ऐसा सब करने वालों के बारे में क्या सोचता है ? (व्यवस्थाविवरण 18:10-12)
....

4) जो लोग आपको सलाह दें कि "आप ओझाओं और टोन्हा करने वालों से जाकर पूछो" उन्हें आप क्या सही उत्तर देंगे ? (यशायाह 8:19)
....

5) पुराने नियम के समय परमेश्वर के लोगों पर जिन्होंने जिन्होंने भावी कहने वालों से पूछना और टोन्हा करना शुरू किया उन को क्या दण्ड मिला ? (2 राजाओं 17:17,18) ....
....

6) खाली स्थान भरो: जो बताते हैं, कि भावी कहने वाले सच कहते हैं या नहीं (जकर्याह 10:2)
"भावी कहने वाले झूठा दर्शन देखते ....व्यर्थ शान्ति देते हैं।"

7) खाली स्थान भरो। (1 शमूएल 15:23)
"देख परमेश्वर से विद्रोह करना .... मूर्तियों और गृह देवता की पूजा के तुल्य है।"

8) डाइन के लिए व्यवस्था में क्या आज्ञा दी गई है ? (निर्गमन 22:18) ....
....

9) 1 शमूएल 28:7-25, ऐसा लगता है, कि शमूएल शाऊल को मिला लेकिन (2 इतिहास 10:13) से स्पष्ट है कि वह एक ऐसी आत्मा थी जो शमूएल जैसा आचरण करती थी न कि स्वयं शमूएल।

नोटः फैमिलियर आत्माएँ वह दुष्ट आत्माएँ हैं, जो कि मरे हुए मनुष्यों की नकल करती हैं, और भविष्यद्वाणी करती हैं, और नया सिद्धान्त बताती हैं।
राजा शाऊल को भूतसिद्धी करने वालों से पूछने की क्या सजा मिली? (1 इतिहास 10:13-14)

....

10) प्रेरित पौलुस 1 तीमुथियुस 4:1 में प्रेतात्मावाद की भविष्यदावाणी करता है।
"आत्मा स्पष्ट कहता है कि आने वाले समयों में लोग विश्वास से भटक जाएँगे और ....

....

(कृपया इस आयत को पूरा करो)

<u>पाठ करोः</u> **मूर्तिपूजा और जादूटोना** 1) 2 **कुरिन्थियों** 6:16 2) 1 **शमूएल** 15:23

पाठ 17 -- ईश्वरीय चंगाई

....

अच्छी सेहत एक सबसे मूल्यवान सम्पत्ति है जो हमारे पास हो सकती है। एक बड़े हास्यकार ने एक बार कहा, "सेहत के बिना, धन, सम्पत्ति, और प्रसिद्धि सब कीचड़ हैं।"
शरीर की चंगाई का प्राण के साथ अधिक करीबी सम्बंध है, जिसका बहुतों को पता नहीं है। चंगाई शारीरिक से अधिक, मानसिक से अधिक है, यह आत्मिक है। "शान्ति कैपसूलों में नहीं आती है।" यह दुख की बात है क्योंकि चिकित्सा-शास्त्र पहचानता है कि डर, दुख, ईर्ष्या, नाराज़गी और घृणा जैसी भावनाएँ हमारे अधिकतर रोगों के लिए जिम्मेवार हैं। अनुमान के अनुसार 60 से 100 प्रतिशत।

<u>अच्छी सेहत की मूल माँग है कि परमेश्वर और मनुष्य के साथ सही सम्बंध में जीया जाए।</u> हालाँकि बीमारियों के अनेक कारण होते हैं, काफी कुछ को अपने हृदयों में परमेश्वर की शान्ति के रहने देने से बचाया जा सकता है। सही प्रकार का खाना खाना भी महत्त्वपूर्ण है, और प्रतिदिन व्यायाम करना, और नियमित अन्तरालों पर उपवास करना भी।

परमेश्वर अनेक तरीकों से चंगा करता है। वह डाक्टरों और दवाइयों के द्वारा, प्रकृत्ति और मौसम के द्वारा, प्रेम और सहानुभूति के द्वारा, और परमेश्वर के चंगाई के चमत्कार के सामर्थ्य में विश्वास के द्वारा चंगा करता है।

अ. बीमारियों के कुछ कारण

उचित वचन की ओर रेखा खींचें:

1. ज्यादा काम करने से शारीरिक स्वास्थ्य में खराबी	निर्गमन 15:26
2. प्रभु की देह को न पहचानना	प्रेरितों 10:38
3. पाप (परमेश्वर की आज्ञा तोड़ना)	1 कुरिं. 11:29-30
4. शैतान द्वारा सताया जाना	फिलि. 2:5-30

ब. ईश्वरीय चंगाई की ओर कुछ विपत्तियाँ

1. क्या यह प्रभु की इच्छा है? कुछ लोग मानते हैं कि परमेश्वर कुछ को चंगा करता और दूसरों को उसकी इच्छा के अनुसार चंगा नहीं करता है। परन्तु बाइबल ऐसा नहीं सिखाती।

अ. क्या परमेश्वर एक के बदले दूसरे पर कृपा करता है ? (रोमियों 2:11)

....

ब. यीशु ने उस कोढ़ी को क्या उत्तर दिया जिसने यीशु से कहा कि यदि वह चाहे को उसे चंगा कर सकता है ? (लूका 5:12-13)

....

स. बैतहसदा के कुण्ड के पास पड़े उस व्यक्ति की कहानी पढ़ो जो 38 वर्षों से रोगी था (यूहन्ना 5:1-9)। इस समय यह व्यक्ति नहीं था जिसने यीशु को पूछा था कि क्या चंगा करने की उसकी इच्छा है, लेकिन यीशु ने उसे पूछा कि क्या वह चंगा होना चाहता है। यीशु ने उसे क्या शब्द कहे थे ? (यूहन्ना 5:6)

....

ड) दुष्टात्माग्रस्त लड़के की कहानी पढ़ो जिसे चेले चंगा नहीं कर सके थे (मरकुस 9:14-9)। लड़के का पिता उसे यीशु के पास लाया और कहा, "यदि तू कुछ कर सके, तो हम पर तरस खाकर हमारा उपकार कर।" लेकिन यीशु ने पिता को सुधारा। यीशु ने आय. 23 में क्या कहाः

....

2. कुछ सिखाते हैं कि बीमारी परमेश्वर को महिमा ला सकती है। लेकिन हमें ध्यान देना चाहिए कि यह बीमारी नहीं, बल्कि चंगाई है जो परमेश्वर को महिमा लाती है।

अ) उस मनुष्य की कहानी में जो जन्म से अंधा था, 'परमेश्वर के काम उसमें प्रकट' कैसे हुए थे ? (यूहन्ना 9:1-38) (कृपया सही उत्तर के नीचे रेखा खींचें)।

1. उसके अंधा बने रहने से।
2. उसके चंगा होने से।

ब) यीशु ने कहा कि लाज़र की बीमारी "मृत्यु की नहीं, परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिए है, कि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो" (यूहन्ना 11:14)। परमेश्वर के पुत्र की महिमा कैसे हुई थी ?

1. लाज़र के बीमार रहने से।
2. लाज़र की मृत्यु से।
3. लाज़र को मरे से जीवित करने से। (सही उत्तर के नीचे रेखा खींचें)

3. पौलुस के कुछ साथी सेवक बीमार हो गए थे। बाइबल यह कभी नहीं सिखाती कि एक मसीही कभी भी बीमार नहीं होगा, जैसे यह नहीं सिखाती कि एक मसीही कभी भी पाप नहीं करेगा। लेकिन जैसे यह परमेश्वर की इच्छा नहीं कि एक मसीही पाप करे, वैसे ही उसकी इच्छा नहीं कि एक मसीही बीमार रहे।

2 तीमुथियुस 4:20 में पौलुस ने कहा, "त्रुफिमुस को मैं ने मीलेतुस में बीमार छोड़ा है।" हम फिलिप्पियों 2:25-30 में इपफ्रुदीतुस की बीमारी के बारे में पढ़ते हैं। यह स्पष्ट जान पड़ता है कि ये दो पुरुष सुसमाचार की सेवा के काम में अधिक परिश्रम के कारण बीमार हो गए थे। पौलुस इपफ्रुदीतुस की बीमारी के विषय में क्या कहता है ? (आयत 30)

....

....

4. पौलुस के शरीर में काँटा - 2 कुरिं. 12:7-10

पौलुस के शरीर में काँटे के बारे में आम शिक्षा यह है कि यह एक बीमारी थी जिसे आँख की समस्या माना जाता है। पौलुस ने इसे शैतान का एक "दूत" कहा था। "दूत" शब्द का अर्थ एक व्यक्ति हो सकता है, एक बीमारी नहीं। परमेश्वर ने पौलुस को आश्वासन दिया कि शैतान का यह दूत उसकी इच्छा थी और कि उसे दुख सहने के लिए अनुग्रह दिया जाएगा ताकि वह पूर्ण रूप से परमेश्वर के सामर्थ्य पर निर्भर होना सीखेगा। बाइबल में एक काँटे या शरीर में एक काँटे का जिक्र एक शत्रु के रूप में किया गया है।

अ. परमेश्वर ने उसके लोगों को कहा कि वे कनान देश को अपने अधिकार में ले लें और कनानियों को निकाल दें। यदि वे ऐसा न करेंगे तब कनानी उनके लिए क्या होंगे ? (यहोशु 23:13)

1. "तुम्हारी आँखों में ...."

2. "तुम्हारे पाँजरों में ...."

ब. 2 कुरिन्थियों 12:10 में पौलुस हमें कुछ सुराग देता है कि शरीर में यह काँटा क्या हो सकता है। वह किन पाँच चीजों का जिक्र करता है ?

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....

स. पुराने नियम में चंगाई

1. परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को कहा था कि यदि वे उसकी सेवा करेंगे तो वह उनकी रोटी और पानी को आशीष देगा। उसने बीमारियों के बारे में उनको क्या प्रतीज्ञा दी थी ? (निर्गमन 23:25)
   ....
2. हिजकिय्याह की कहानी में, उसने लोगों के लिए जब वे उसके साथ सही सम्बंध में हुए क्या किया था ? (2 इतिहास 30:20)
   ....
3. परमेश्वर का एक नाम "यहोवा राफा" है। निर्गमन 15:26 के अनुसार इसका अर्थ क्या है ?
   "मैं तुम्हारा ....
4. इस्राएल को किन शर्तों को पूरा करना था जिससे कि मिस्र के रोग उनके ऊपर न डाले जाएँगे ? (निर्ग 15:26)
   अ. ....
   ब. ....
   स. ....
   ङ ....
5. भजन 103:3 में, हम प्रभु को पापों से उद्धार करनेवाला और रोगों को चंगा करनेवाला के रूप में देखते हैं।
   अ. उसने कितने पाप क्षमा किए थे ?...
   ब. उसने किनी बीमारियाँ चंगी की थीं ?...
6. भजन 107:20 में हम प्रभु को उसके लोगों को चंगा करते देखते हैं........................... के द्वारा।

ङ नए नियम में चंगाई

1. यशायाह 53:4 कहता है, "निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुखों को उठा लिया।" आयत पाँच कहती है, "उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएँ"। यह भविष्यद्वाणी मत्ती 8:16-17 में पूरी होती है। आयत 16 के अनुसार, यीशु नेः
   अ. जिनमें दुष्टात्माएँ थीं उनके लिए क्या कियाः
   ....
   ब. जो बीमार थे उनके लिए क्या कियाः
   ....

2. मरकुस 2:1-12 में, हम यीशु को लकवे के मारे को चंगा करते देखते हैं। यहाँ उद्धार और चंगाई सम्बंधित लगते हैं। मनुष्य की चंगाई के लिए यीशु दो में से एक कह सकता थाः
   अ. तेरे पाप ...., या
   ब. उठ ...."
3. बाइबल में चंगाई का कोई स्थिर नमूना नहीं है। कभी-कभी यीशु बीमारों के पास आए तो कभी-कभी बीमार उसके पास आए, और कभी-कभी उसने अपना वचन भेजा।

चंगाई का एक तरीका जिसे कलीसिया को दिया गया है, याकूब 5:14-15 में पाया जाता है।

अ) रोगी को .... को बुलाना है।

ब) प्राचीन उसे प्रभु के नाम से तेल मल कर उसके लिए ....।

स) और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा ....।

ड) और प्रभु उसको ....।

4. यीशु ने कितने रोगों और बीमारियों को चंगा किया? (मत्ती 4:23)

....

5. जब खबर आई कि याईर की बेटी मर गई है, तब यीशु ने क्या कहा? (लूका 8:50)

"मत डर; ...., तो वह बच जाएगी।"

6. यीशु ने अपने चेलों को सामर्थ्य न केवल आत्मिक जरूरतों को पूरे करने के लिए, बल्कि शारीरिक जरूरतों को पूरा करने के लिए दिया था।

कौन सी दो चीजें उसने चेलों को करने भेजा? (लूका 9:1-2)

अ) ....

ब) ....

पाठ करोः **ईश्वरीय चंगाई** **भजन** 103:2-3; **निर्गमन** 23:25

पाठ 18 -- दुख उठाना

....

एक सर्राफ (सोनार) सोने को बहुत गर्म आग में तपाता है, ताकि उस की जो मिलावट है वह बाहर आ जाए, वह सोने को गँवाना नहीं चाहता बल्कि वह उसे उपयोगी और बहुमूल्य बनाना चाहता है। परमेश्वर अपने बच्चों के जीवन को अशुद्ध सोने की तरह देखता है वह चाहता है कि उनका जीवन शुद्ध हो जाए, वह उनको दुखों, तकलीफों और अफसोस में से गुज़ारता है।

1) यीशु मसीह जब कि वह परमेश्वर का पुत्र था उसने आज्ञापालन एक विशेष प्रक्रिया से सीखा, वह यह कैसे सीखा? (इब्रानियों 5:8) ....

....

2) यदि हम यीशु में दुख उठाते हैं..। (रोमियों 8:17)

3) "यदि हम .... तो हम ....भी करेंगे। (2 तीमुथियुस 2:12)

4) 2 तीमुथियुस 2:3 के अनुसार हमें क्या करना चाहिए? ....

5) जब यीशु अफसोस को खुशी में बदल देता है, क्यो उसे कोई छीन सकता है? (यूहन्ना 16:20,22) ....

6) यीशु के चेले यूहन्ना ने यीशु का प्रकाशित होना देखा और जिस तरह का स्वर्ग होगा देखा, स्वर्ग में वह पाँच चीजें दुख-तकलीफ न होंगी वह लिखो। (प्रकाशितवाक्य 21:4)

अ)........................ ब) .... स) .... ड) .... इ) ....

7) रोमियों 8:18 कहता है इस समय के दुख और क्लेश उस महिमा के सामने जो हम पर प्रकट होने वाली है कुछ भी नहीं है, इसका अर्थ क्या है। (कृपया सही उत्तर के नीचे लाइन लगाएँ)

अ) हम बेकार में दुख उठाते हैं। ब) हमारी महिमा और दुख तकलीफ हमेशा हमारे साथ रहेंगे।

स) हमारा अनन्तकाल का पुरस्कार इतना ज्यादा होगा कि उसके सामने यह दुख क्लेश तुच्छ दिखाई देगा।

8) हमारे संकट के समय प्रभु कौन है? (भजनसंहिता 46:1) ....

9) हमें दुखों में घमण्ड क्यों करना है? (रोमियों 5:3) ....

....

10) पुराने समय (प्राचीनकाल) में परमेश्वर इस्राएलियों का उद्धारकर्त्ता हुआ, जब उसके लड़कों को संकट आया तब परमेश्वर को क्या हुआ? (यशायाह 63:8.9) ....

11) यशायाह 43:2 से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं जिसमें प्रभु बताता है कि उसके पुत्र पानी से, नदियों से, आग से होकर जाएँगे। इस वचन को पढ़ कर, सही उत्तर के नीचे लाइन लगाएँ।
    अ) परमेश्वर के लोग दुख तकलीफ के पानी से गुजरना चाहते हैं / नहीं चाहते हैं।
    ब) विरोध की नदियाँ परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध बहेंगी / नहीं बहेंगी।
    स) परमेश्वर के लोग दुख तकलीफ की अग्नि से गुजरें / न गुजरें।
    ड) जब विश्वासी लोग तकलीफ के पानी से गुज़रें, परमेश्वर साथ रहने का वायदा करता है / नहीं करता है।
    इ) परमेश्वर के बच्चों के विरोध में नदी बहेगी / नहीं बहेगी।
    फ) जब संकट की अग्नि से परमेश्वर के बच्चे गुज़रेंगे, वे जलेंगे / न जलेंगे।

12) हम किस प्रकार अपने आप को दुख तकलीफ में घिरे लोगों को सान्तवना देने के लिए तैयार कर सकते हैं? (2 कुरिंन्थियों 1:3-5) ....

....

पाठ करो: **दुख उठाना** 1) **यशायाह** 43:2,3 2) 2 **कुरिन्थियों** 1:3–5

पाठ 19 –– मृत्यु

....

बाइबल कहती है "जैसे मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय को होना नियुक्त है" (इब्रानियों 9:27), मसीह लोगों को मृत्यु का भय नहीं, क्योंकि यह केवल इस धरती के जीवन से निकल कर बहुत ही महिमा भरा स्वर्गीय जीवन है, लेकिन अविश्वासियों के लिए यह एक न्याय, नरक और अनन्तकाल की पीड़ा है। हमें यह सम्पूर्ण रीति से समझना है। दो मृत्यु है एक शरीर के लिए और दूसरी आत्मा के लिए। एक मसीह की आत्मा कभी न मरेगी क्योंकि उसे अनन्त जीवन मिला है, लेकिन उसकी शरीर मर जाएगा लेकिन हमारे शरीर भी हमें नए रूप से मिल जाएंगे। यीशु मसीह के कहने का अर्थ यही था, "जो कोई मुझ पर विश्वास करता है यदि वह मर भी जाए तो भी जीएगा, और जो जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है वह अनन्त काल तक नहीं मरेगा।" (यूहन्ना 11:25,26)

1) सभोपदेशक 12:7 कहता है तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी और आत्मा परमेश्वर के पास जिसने उसे दिया लौट जाएगी।
    अ) जब व्यक्ति मरता है तो शरीर कहाँ जाता है? ....
    ब) उसकी आत्मा कहाँ जाती है? ....

2) प्रेरित पौलुस ने मृत्यु का इस प्रकार वर्णन किया (2 कुरिन्थियों 5:8) उस के लिए मृत्यु का अर्थ "देह से अलग होकर, प्रभु के साथ रहना ...."

3) कृपया यीशु के वचनों को प्रकाशितवाक्य 1:18 में पढ़ो और उत्तर लिखो।
    अ) क्या यीशु का शरीर एक बार मरा? ....
    ब) क्या यीशु दोबारा मरेगा? ....
    स) मृत्यु की कुंजी किसके हाथ में है? ....

4) एक विश्वासी की मृत्यु के समय उसके रिश्तेदार मसीही कह सकते हैं कि "प्रभु के नाम की आशीष हो," हम प्रभु की प्रशंसा ऐसे समय में क्यों कर करते हैं? (अय्यूब 1:21) ....

....

5) मृत्यु का दुख उठाने के कारण यीशु को किस प्रकार का मुकुट मिला है ? (इब्रानियों 2:9)

....

6) हमारे उद्धारकर्त्ता यीशु ने सुसमाचार द्वारा दो कार्य किए, वे क्या हैं ? (2 तीमुथियुस 1:10)

अ) ....

भ) ....

7) क्योंकि यीशु पुनरुत्थान और जीवन है, वह उस पर विश्वास करने वालों से क्या वायदा करता है ? (यूहन्ना 11:25-26)

....

....

8) यीशु पर जो विश्वास रखते हैं मृत्यु उन पर विजय नहीं पा सकती और न मृत्यु का डंक। (1 कुरिन्थियों 15:55-57)

अ) हमें मृत्यु पर विजय कौन देता है ? ....

ब) कैसे ? ....

9) जब हमारा पृथ्वी पर का तम्बू सरीखा घर गिराया जाएगा तो हमारे पास क्या रह जाएगा ? (2 कुरिन्थियों 5:1)

....

10) हमें बताया जाता है जब दूसरों के प्रिय जन की मृत्यु हो जाती है वे अफसोस करते हैं। मसीही लोगों को इस प्रकार का अफसोस नहीं करना चाहिए जब उनके विश्वासी प्रियजन मर जाते हैं। इसका कारण यह है कि हमारा अफसोस वैसा नहीं है और हम व्याकुल नहीं होते क्योंकि हमारी महान आशा है। संक्षेप में मसीही लोगों की आशा उन प्रियजनों के लिए है जो मृत्यु में सो गए हैं। (1 थिस्सलुनीकियों 4:13,14) ....

....

....

....

11) सबसे उत्साहित करने वाला सत्य यह है कि यीशु मसीह वापस आने वाला है, उस समय दो अजीब अदभुत बातें होंगी। वे क्या हैं ? निम्नलिखित लाइनों को पूरा करें। (1 थिस्सलुनीकियों 4:16-17)

अ) यीशु में मरे लोग ....

ब) और जो जीवित हैं वे बादलों में ....

12) जब हमारा शरीर मर जाता है और दफनाया जाता है उसकी तुलना बीज बोए जाने से की गई है। एक नया पौधा आने के लिए बीज को मरना पड़ता है। इसलिए हमारे शरीर को मरना ही चाहिए, लेकिन जब यीशु वापस आएँगे हमारा शरीर को भी नई काया मिलेगी। (1 कुरिन्थियों 15:35-44)। वचन 42-44 से कृपया चार तरीके बताएँ जिसमें शरीर बोया और उठाया जाएगा।

अ) शरीर नाश्वान दशा में बोया जाता है .... उठाया जाता है।

ब) शरीर नाश्वान दशा में बोया जाता है .... उठाया जाता है।

स) शरीर नाश्वान दशा में बोया जाता है .... उठाया जाता है।

ड) शरीर नाश्वान दशा में बोया जाता है .... उठाया जाता है।

13) यदि हम मृत्यु पर्यंत विश्वासी रहें तो प्रभु हमें क्या देगा ? (प्रकाशितवाक्य 2:10) ....

....

....

__पाठ करो:__ **मृत्यु**

1) 1 **कुरिन्थियों** 15:55–58
2) 2 **कुरिन्थियों** 5:1
3) **प्रकाशितवाक्य** 2:10–11

पाठ 20 -- परमेश्वर की पवित्र आत्मा की शक्ति में सेवकाई

हमारा बचाव किया गया इसलिए कि हम सेवा करें। यह केवल हमारा सौभाग्य ही नहीं बल्कि जिम्मेवारी भी है कि प्रभु की गवाही दूसरों को दो (या प्रभु के बारे में दूसरों को बताओ, साक्षी दो)। लेकिन यह कार्य अकेले करना असंभव है। यीशु ने स्वयं कहा, "मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।" (यूहन्ना 15:5) लेकिन प्रभु की प्रशंसा हो "जो यीशु मुझे सामर्थ्य देता है, उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ।" (फिलिप्पियों 4:13)। यीशु हमारी कमज़ोरी जानता है इसलिए उसने अपने चेलों से कहा कि वे पवित्र आत्मा का इन्तज़ार करें जो उन्हें सेवकाई के लिए शक्ति व सामर्थ्य देगा। और यही वह सामर्थ्य थी जिसने जो भयभीत, शक्तिहीन, डरपोक चेलों को अडिग निडर साक्षी देने वालों में बदल दिया। हमें भी यदि प्रभु यीशु मसीह के लिए जोरदार साक्षी बनना है तो हमें पवित्र आत्मा से भरपूर होने की जरूरत है।

अ) पवित्र आत्मा से बपतिस्मा या पवित्र आत्मा से भर जाने का क्या उद्देश्य है?

1) प्रेरितों 1:8 में पवित्र आत्मा के पाने के दो कारण देखते हैं ?
   अ) परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम ...."
   ब) तब तुम मेरे ...."
2) पवित्र आत्मा के बपतिस्मा का पहला उद्देश्य मसीही के जीवन को शुद्ध करना और सामर्थ्य से भरना है। बाइबल में 90 बार से अधिक प्रभु की आत्मा के साथ पवित्र लगाया गया है, और कौन कौन से कार्य पवित्र आत्मा हमारे जीवन में करता है।
   अ) रोमियों 5:5 "पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर का .... हमारे मन में उँडेला गया है।"
   ब) यूहन्ना 14:26 "वह तुम्हें .... स्मरण कराएगा।"
   स) यूहन्ना 16:13 "वह तुम्हें सब ....।"
   ड) यूहन्ना 16:13 "वह तुम्हें ....।"
   इ) यूहन्ना 16:14 "वह मेरी महिमा करेगा ....।"
3) बाइबल कहती है कि यीशु मसीह पवित्र आत्मा द्वारा पैदा हुआ (मत्ती 1:18,20)। उसका पूरा जीवन परमेश्वर की आत्मा की अगुआई से चला। उसके बपतिस्मा के समय पवित्र प्रभु की आत्मा ने क्या किया? (लूका 3:21,22)
   ....
4) बपतिस्मा के तुरन्त बाद प्रभु ने पवित्र आत्मा से उसका अभिषेक किया। यीशु पवित्र आत्मा से भरे हुए यरदन नदी से लौटे और आत्मा की प्रेरणा से निर्जन प्रदेश में फिरते रहे। (लूका 4:1)
   लूक 4:14 और प्रेरित 10:38 में पाँच अक्षरों वाला एक शब्द है, जो बताता है यीशु ने पवित्र आत्मा से क्या पाया। कृपया लिखें।

ब) क्या पवित्र आत्मा में बपतिस्मा आज भी लागू है?

प्रचीनकाल से प्रत्येक व्यक्ति जिस का प्रयोग परमेश्वर के महान कार्यो के लिए हुआ वह परमेश्वर के स्वर्गीय शक्ति से भरा गया ऐसे मनुष्य जैसे फिन्नी, ब्रेनार्ड, मूडी और कई दूसरे लोग जो अपनी पूरी शक्ति से कार्य करते थे। लेकिन पवित्र आत्मा की अगुआई का अनुभव हुआ और पवित्र आत्मा से बपतिस्मा हुआ। जिस समय उन पर पवित्र आत्मा पूरी भरपूरी से आया तब उनकी सेवकाई में नई शक्ति सामर्थ्य आई जिसने चरित्र को पूरी तरह से बदल दिया। आर. ए. टोरी ने कहा कि यह संभव है कि हमें कुछ प्राप्त हो, पवित्र आत्मा की उपस्थिति हमारे मन में कार्य करे जबकि हमें पवित्र आत्मा की भरपूरी जो बाइबल लिखी है उस तरह का बपतिस्मा न हो। डॉक्टर बिली ग्रहम कहते हैं कि मुझे आश्चर्य होता है कि कलीसिया क्यों कर पेन्टीकोस्ट का भेद क्यों नहीं जान सकती जिसमें पवित्र आत्मा पर बहुत ही जोर डाला जाता है। अब समय आ गया है कि पवित्र आत्मा को उसका सही स्थान दिया जाए।

हमें यह सीखने की जरूरत है कि पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाने का क्या अर्थ है, हमें यह जानना है पौलुस जब वह लिख रहा था तो उसके लिए क्या अर्थ था: "पवित्र आत्मा से भर जाओ।" इसे चाहे आप कोई भी संज्ञा दें, हमें यह स्वीकार करना है, हमें कुछ प्राप्त करना है जो कि पहली कलीसिया में अदभुत सामर्थ्य था जो हमारे पास नहीं है।

1) पतरस ने पवित्र आत्मा का आना योएल में की गई भविष्यद्वाणी का पूरा होना बताया है (प्रेरितों 2:16)। पतरस ने लोगों से क्या दो चीजें करने को कहा जिस से वे पवित्र आत्मा का दान पाएँ ? (प्रेरितों :38)

अ) .... ब) ....

2) अगले वचन में हम पढ़ते हैं कि योएल में किया गया वायदा किन लोगों के लिए था, कृपया वचन पूरा करें। (प्रेरितों 2:39) "यह प्रतिज्ञा .... (वर्तमान) और आनेवाली .... और .... जिनको हमारा प्रभु परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।

3) इफिसियों 5:18 में क्या आज्ञा दी गई है ? ....

महत्त्वपूर्ण सूचना

इस बात पर ध्यान देना महत्त्वपूर्ण है कि यीशु पवित्र आत्मा से जन्मा, और पवित्र आत्मा की अगुआई से, पवित्र जीवन जीया। फिर भी उसने उसी पवित्र आत्मा का अभिषेक अपने तीन वर्ष के सेवाकाल के लिए किया। यीशु ने कोई भी आश्चर्यकर्म न किया न ही उसका समाज पर कोई प्रभाव पड़ा जब तक वह पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से न भर गया। (प्रेरितों 10:38; लूका 4:14,15)। हमें पवित्र आत्मा में दोबारा जन्म लेना है। पवित्र आत्मा अगुआई से भर कर अपनी सेवकाई के लिए सामर्थ्य से काम करना है।

स) क्या पवित्र आत्मा का बपतिस्मा होना, मन फिराव से अलग है।

बाइबल में तीन तरह के बपतिस्मा का वर्णन किया गया है। पहला, पवित्र आत्मा द्वारा बपतिस्मा जो हमें यीशु के शरीर में मिलाता है, जब हमारा मन परिवर्तित होता है तब होता है। (1 कुरिन्थियों 12:13)। दूसरा, पानी का बपतिस्मा जो हमारे भीतर परिवर्तन होने का बाहरी चिन्ह है कि तुम पाप के लिए मर गए और परमेश्वर में जीवित हुए (रोमियों 6:4)। तीसरा, पुत्र द्वारा पवित्र आत्मा में बपतिस्मा जो हमें प्रभु यीशु का सामर्थी गवाह बनाता है। (प्रेरतों 1:8; यूहन्ना 1:33)

1) कृपया सही उत्तर के नीचे लाइन लगाओ।
   अ) पहले बपतिस्मा का कार्य सेवकाई/शुद्धता/उद्धार है।
   ब) दूसरा बपतिस्मा का कार्य सेवकाई/शुद्धता/उद्धार है।
   स) तीसरा बपतिस्मा का कार्य सेवकाई/शुद्धता/उद्धार है।

2) एक साधारण उदाहरण में हम पवित्र आत्मा के कार्य को पानी द्वारा दिखा सकते हैं। जब हमारा उद्धार होता है यह एक घूँट पीने के बराबर है, तब पवित्र आत्मा को आप अपने जीवन में लेते हैं। और पानी में डुबकी लगाकर बपतिस्मा लेने को पानी में धोने के तुल्य है यह एक चिन्ह है कि तुम प्रभु यीशु के लहू में धोए गए। तुम्हारा पवित्र आत्मा द्वारा सफाई किया गया। पवित्र आत्मा में बपतिस्मा का उदाहरण एक स्विमिंग पूल में कूदने के समान लगाते हैं जहाँ पर पानी को नहीं बल्कि पानी आप को निमंत्रित करता है। पवित्र आत्मा तुम्हें स्वीकार कर लेता है। इस नमूने को बाइबल में देखें।
   सही वचन पर लाइन लगाएँ।

अ) यीशु पवित्र आत्मा से उत्पन्न हुआ		मत्ती 3:16
ब) पौलुस (शाऊल) का दमिश्क की सड़क पर उद्धार हुआ	प्रेरितों 9:18	
स) यीशु का यरदन नदीं में बपतिस्मा हुआ	मत्ती 1:20	
ड) पौलुस को पवित्र आत्मा से भरा गया	प्रेरितों 9:5-6	
इ) यीशु को पवित्र आत्मा से अभिषेक हुआ		मत्ती 3:13
फ) पौलुस का पानी में बपतिस्मा हुआ		प्रेरितों 9:17

इस नमूने को बाइबल में देखें। सही वचन पर लाइन लगाएँ।

अ) सामरिया के लोगों का उद्धार हुआ	प्रेरितों 8:1
ब) इफिसुस नगर में कुछ चेले थे	प्रेरितों 19:6
स) सामरिया के लोगों ने पानी का बपतिस्मा लिया	प्रेरितों 8:14
ड) ये चेले बपतिस्मा पाए थे	प्रेरितों 19:1
इ) सामरिया के लोगों ने पवित्र आत्मा पाया	प्रेरितों 8:16
फ) चेलों ने पवित्र आत्मा पाया	प्रेरितों 19:3

ड) मैं पवित्र आत्मा का बपतिस्मा या पवित्र आत्मा की परिपूर्णता कैसे पाऊँ

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा एक दान है जो कि विश्वास द्वारा प्राप्त किया जाता है जिस प्रकार आप को अपने पापों की क्षमा प्रभु यीशु में विश्वास के द्वारा मिली थी। (प्रेरितों 2:38)

1) पवित्र आत्मा का दान पाने के लिए आपको क्या कदम उठाना है ? (प्रत्येक का उत्तर एक या दो शब्द में दें।)

अ) प्रेरितों 2:38 ....
ब) प्रेरितों 5:32 ....
स) यूहन्ना 7:37 ....
ड) यूहन्ना 7:38,39 ....
इ) लूका 11:13 ....

2) पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने के चिन्ह क्या हैं ? अपने शब्दों में लिखो।

अ) प्रेरितों 1:8 ....
ब) रोमियों 5:5 ....
स) प्रेरितों 4:31 ....
ड) प्रेरितों 19:6 ....
इ) यूहन्ना 16:14 ....

3) यह जरूरी है कि हमें शुरूआत में पवित्र आत्मा की परिपूर्णता प्राप्त हो, परन्तु हमें पता होना चाहिए कि यह अनुभव शुरूआत है अन्त नहीं। यह पवित्र आत्मा की परिपूर्णता जीवन का पहला कदम है मसीही जीवन में पवित्र आत्मा के साथ चलना, प्रतिदिन स्वयं को पापों से शुद्ध करना, प्रभु के वचनों पर आधारित होना, प्रभु से सम्बंध बनाए रखना, पवित्र आत्मा की अगुआई में चलना और प्रतिदिन पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना है।
कृपया निम्नलिखित वचन पूरा करें जो पवित्र आत्मा में जीवन व्यतीत करने के भिन्न पहलू बताते हैं।

अ) रोज की शुद्धता - "मुझे भली भाँति धोकर मेरा अधर्म दूर कर और ....
...." भजन संहिता 51:2
ब) रोज का भोजन - "व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान लगाए रहना, इसलिए कि जो कुछ उस में लिखा है ....
....यहोशू 1:8
स) रोज का सम्बंध - "जो मुझ में बना रहता है, ... मैं उस में, वह ....
.... मुझ से अलग होकर ...." यूहन्ना 15:5
ड) रोज का आज्ञापालन - "... वह पवित्र आत्मा, जो हमें प्रभु ने दिया
...." प्रेरितों 5:32
इ) रोज की परिपूर्णता - "शराब में मतवाले न बनो पर तुम (लगातार) ....
...." इफिसियों 5:18

<u>पाठ करो:</u> **परमेश्वर की पवित्र आत्मा की शक्ति में सेवकाई**

1) **प्रेरितों** 1:8;
2) **लूका** 11:11-13;
3) **प्रेरितों** 2:38

पाठ 21 – क्रूस

जब यीशु मसीह को एक लकड़ी के क्रूस पर ठोक कर मार डाला गया था, तो दुष्ट लोगों ने सोचा कि वे केवल एक मनुष्य को फाँसी दे रहे थे जो उनके जीने के तरीके को अस्तव्यस्त कर रहा था। वे समझे नहीं थे कि परमेश्वर ने क्रूस की योजना संसार की उत्पत्ति के पहले से बनाई हुई थी।

अ. परमेश्वर सब पापों से निपटता है

क्रूस पर उसके पत्र की मृत्यु के द्वारा, महान सृजनहार परमेश्वर हर व्यक्ति के पाप और दुख से निपट रहा था। यीशु संसार के लिए मर रहा था। जो यीशु ने क्रूस पर किया है उसे अपने जीवन में स्वीकार करने से हमारी सारी आवश्यकताएँ मिट जाती हैं।

1. परमेश्वर क्रूस के द्वारा उसके सामर्थ्य को प्रकट करता है

"क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के लिए मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के लिए परमेश्वर की सामर्थ्य है" (1 कुरिं. 3:18)। रोमियों 1:16 भी देखो।

2. परमेश्वर क्रूस पर उसके प्रेम को प्रकट करता है

"परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा" (रोमियों 5:8)।

3. परमेश्वर क्रूस पर हमारे दुखों को मिटाता है

"निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुखों को उठा लिया; तौभी हम ने उसे परमेश्वर का मारा-कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा" (यशायाह 53:4)।

4. यीशु ने क्रूस पर हमारे पापों की सजा ली थी

"परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएँ। हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया" (यशायाह 53:5-6)। 1 पतरस 2:24 भी देखो।

आ. क्रूस के द्वारा परमेश्वर के साथ नया सम्बंध

क्योंकि परमेश्वर इतना पवित्र और धर्मी है कि पाप उसे हम से अलग करता है। कोई भी उसके हृदय में पाप लिए हुए उसकी उपस्थिति में रह नहीं सकता।

तो, न केवल यीशु ने हमारे स्थान पर क्रूस पर मर कर हमारे लिए दुख उठाया; बल्कि उसने हमारे लिए सम्भव किया कि हम परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से जानें और उसके प्रेम, शान्ति और आनन्द को उसके साथ संगति के द्वारा अनुभव करें।

1. क्रूस के द्वारा परमेश्वर हमें स्वीकार करता है

"जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।" (2 कुरिन्थियों 5:21)

2. क्रूस के द्वारा हमें क्षमा मिलती है

"उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया, जिस में हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा मिलती है।" (कुलुस्सियों 1:13-14)। 1 यूहन्ना 2:1-2 भी देखो।

3. क्रूस के द्वारा हम परमेश्वर के परिवार के सदस्य बन गए

"क्योंकि पवित्र करनेवाला और जो पवित्र किए जाते हैं, सब एक ही मूल से हैं, इसी कारण वह उन्हें भाई कहने से नहीं लजाता। वह कहता है, मैं तेरा नाम अपने भाइयों को सुनाऊँगा, सभा के बीच में मैं तेरा भजन गाऊँगा।" (इब्रानियों 2:11-12)। यूहन्ना 1:12 भी देखो।

4. क्रूस के द्वारा जातिभेदों को तोड़ा गया है

"पर अब मसीह यीशु में तुम जो पहले दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा निकट हो गए हो। क्योंकि वही हमारा मेल है जिसने दोनों को एक कर लिया और अलग करनेवाली दीवार को जो बीच में थी ढा दिया, और अपने शरीर में बैर अर्थात् वह व्यवस्था जिसकी आज्ञाएँ विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न कर के मेल करा दे, और क्रूस पर बैर को नाश करके इसके द्वारा दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए।" (इफिसियों 2:13-16)

इ. क्रूस के द्वारा स्वतंत्रता

क्रूस पर यीशु की मृत्यु हमारे लिए एक महान विजय थी। क्योंकि परमेश्वर हमारे पापों से क्रूस पर निपटा था, तो इसका अर्थ यह भी था कि पाप के कारण जो दुख और तकलीफ आते हैं उनसे भी निपटा गया था।
क्रूस ने हमारे लिए महान स्वतंत्रता लाई है!

1. शैतान से स्वतंत्रता

"और उसने प्रधानताओं और अधिकारों को ऊपर से उतारकर उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के द्वारा उन पर जयजयकार की ध्वनि सुनाई।" (कुलुस्सियों 2:15)। कुलु. 1:13 भी देखो।

2. पूर्व के पापों से स्वतंत्रता

"इसलिए यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे।" (यूहन्ना 8:36)। कुलुस्सियों 2:13 भी देखो।

3. वर्तमान के पापों से स्वतंत्रता

"तब तुम पर पाप की प्रभुता नहीं होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं वरन् अनुग्रह के अधीन हो।" (रोमियों 6:14)

4. बीमारी से स्वतंत्रता

"ताकि जो वचन यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा होः उसने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया।" (मत्ती 8:17)

5. शाप से स्वतंत्रता

"मसीह ने जो हमारे लिए शापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के शाप से छुड़ाया, क्योंकि लिखा है, जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह शापित है।" (गलातियों 3:13)। व्यवस्थाविवरण 28:15-68 भी देखो।

6. न्याय से स्वतंत्रता

"नहीं तो जगत की उत्पत्ति से लेकर उसको बार बार दुख उठाना पड़ता; पर अब युग के अन्त में वह एक ही बार प्रगट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे। और मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है।" (इब्रानियों 9:26-27)

7. अनन्त मृत्यु से स्वतंत्रता

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। (यूहन्ना 3:16)

ई. प्रेम और न्याय क्रूस पर मिलते हैं

क्रूस वह स्थान है जहाँ परमेश्वर के प्रेम और धर्मी न्याय ने पाप के दण्ड मृत्यु की माँग की थी। उसके प्रेम ने इस माँग को पूरा किया और परमेश्वर का पुत्र यीशु हमारे स्थान पर मर गया।

परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा। अतः जब कि हम अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से क्यों न बचेंगे? क्योंकि बैरी होने की दशा में उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ, तो फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएँगे। केवल यही नहीं, परन्तु हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, जिसके द्वारा हमारा मेल हुआ है, परमेश्वर में आनन्दित होते हैं।" (रोमियों 5:8-11)

उ. क्रूस इतिहास के मध्य में है

यीशु मसीह का क्रूस मनुष्य के पृथ्वी पर अस्तित्व का केन्द्र-बिन्दु है। पहले पुरुष और पहली स्त्री के पाप करने के लेकर (उत्पत्ति 3 देखो), परमेश्वर ने पहले से योजना बनाई थी कि यीशु क्रूस पर मरेगा।
तब से लेकर, लोग परमेश्वर की प्रतिज्ञा की प्रतीक्षा कर रहे थे। आज हम मुड़ कर देखते हैं और जो यीशु ने क्रूस पर किया है उस पर विश्वास करते हैं, और पापों की क्षमा और नया जीवन पाते हैं।

मेरी वचनबद्धता

आज मैं उस चीज में अपना पूरा भरोसा रखता हूँ जो परमेश्वर मेरे लिए कर रहा था जब यीशु क्रूस पर मरा था। मैं विश्वास करता हू कि उसने मेरे पापों का दण्ड अपने ऊपर लिया। मैं उस क्षमा को स्वीकार करता हूँ जो परमेश्वर मुझे दे रहा है। और मैं उसका इस सम्बंध के लिए धन्यवाद करता हूँ जो मुझे मिल रहा है। मैं आज फैसला करता हूँ कि मैं परमेश्वर के साथ इस व्यक्तिगत सम्बंध में जीऊँगा और दूसरों को यह सच्चाई बताने के लिए अपने आप को समर्पित करता हूँ।

पाठ 22 – मसीह का लहू

क्रूस पर यीशु मसीह के लहू के बहने के कारण हमें हमारे पापों से क्षमा और परमेश्वर की उपस्थिति में स्वीकृति मिली है।
"बिना लहू बहाए पापों की क्षमा नहीं" (इब्रानियों 9:22)।

अ. जीवन लहू में है

"क्योंकि शरीर का प्राण लहू में रहता है; और उसको मैं ने तुम लोगों को वेदी पर चढ़ाने के लिए दिया है कि तुम्हारे पापों के लिए प्रायश्चित किया जाए; क्योंकि प्राण के कारण लहू ही से प्रायश्चित होता है।" (लैव्यव्यवस्था 17:11)
जब हम पाप करते हैं, हम मृत्यु कमाते हैं। "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है" (रोमियों 6:23)। यीशु ने अपना लहू बहाकर हमारे लिए यह दण्ड चुकाया है (हमारे स्थान पर -हमारे लिए मर कर)।
प्रायश्चित का अर्थ है परमेश्वर के साथ एक होना। यीशु ने हमारे प्रायश्चित के लिए क्रूस पर अपना जीवन दिया (अपना लहू बहाया)। यीशु के लहू का अर्थ है कि अब हम उसके शत्रु नहीं परन्तु उसके मित्र, उसके पुत्र और पुत्रियाँ हैं।

आ. पाप हमारे जीवनों के साथ क्या करता है

1. हमें परमेश्वर से अलग करता है

"परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुँह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता।" (यशायाह 59:2)

2. हमें दोषी महसूस करवाता है

"मेरे अधर्म के कामों में मेरा सिर डूब गया, और वे भारी बोझ के समान मेरे सहने के बाहर हो गए हैं।" (भजन 38:4)

3. शैतान को हम पर दोष लगाने देता है

"...हमारे भाइयों पर दोष लगानेवाला, जो रात दिन हमारे परमेश्वर के सामने उन पर दोष लगाया करता है...।" (प्रकाशित. 12:10)

4. मृत्यु दण्ड की माँग करता है

"...जो प्राणी पाप करे वही मर जाएगा।" (यहोजकेल 18:4)
मसीह का लहू हमारी सारी आवश्यकताओं को पूरा करता है।

इ. लहू परमेश्वर के लिए है

मसीह का लहू परमेश्वर की व्यवस्था का सम्पूर्ण रूप से प्रायश्चित करता है - परमेश्वर की व्यवस्था इसके तोड़ने के दण्ड की माँग करता है। 1 यूहन्ना 3:4 कहता है "पाप तो व्यवस्था का विरोध है।"
लहू हमारी व्यवस्था को तोड़ने के दण्ड (मृत्यु) से रक्षा करता है।
निर्गमन 12 में, परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को आज्ञा दी थी कि वे एक मेम्ने के लहू को लेकर उनके द्वारों के अलंगों और चौखट पर लगाएं जिससे वे नष्ट करनेवाले से बच जाएँ - जो सब पहलौठों को मार देगा।
यह मेम्ना मेम्ना-यीशु का चित्र था - जो बाद में आया था। परमेश्वर ने कहा, "...मैं उस लहू को देखकर तुम को छोड़ जाऊँगा...।" (आय. 13)

1. संगति पुनःस्थापित की गई है

"परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा। अतः जब कि हम अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से क्यों न बचेंगे।" (रोमियों 5:8-9)

2. हमारा उद्धार हुआ है (गुलामी से मोल देकर छुड़ाया)

"हम को उसमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् पापों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है।" (इफिसियों 1:7)

ई. लहू मनुष्य के लिए है

लहू ने परमेश्वर को संतुष्ट किया है; अब यह हमें हमारे विवेकों को दोष से शुद्ध करके संतुष्ट करता है।

1. लहू दोष से शुद्ध करता है

"तो मसीह का लहू जिसने अपने आप को सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के सामने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो।" (इब्रानियों 9:14)

2. लहू हमें शुद्ध करता है

"इसी कारण, यीशु ने भी लोगों को अपने ही लहू के द्वारा पवित्र करने के लिए फाटक के बाहर दुख उठाया।" (इब्रानियों 13:12)

3. लहू हमें परमेश्वर के करीब लाता है

"और उसके क्रूस पर बहे हुए लहू के द्वारा मेलमिलाप करके, सब वस्तुओं का उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले, चाहे वे पृथ्वी की हों चाहे स्वर्ग की। तुम जो पहले निकाले हुए थे और बुरे कामों के कारण मन से बैरी थे, उसने अब...तुम्हारा भी मेल कर लिया...।" (कुलुस्सियों 1:20-22)

4. लहू परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने का साहस देता है

"इसलिए हे भाइयो, जब हमें यीशु के लहू के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है जो उसने परदे अर्थात् अपने शरीर में से होकर, हमारे लिए अभिषेक किया है...तो आओ, हम सच्चे मन और पूरे विश्वास के साथ, और विवेक का दोष दूर करने के लिए हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर परमेश्वर के समीप आएँ।" (इब्रानियों 10:19-22)

5. लहू हमें परमेश्वर की दृष्टि में सिद्ध करता है

"उसने एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, सर्वद के लिए सिद्ध कर दिया है।" (इब्रानियों 10:14)

उ. लहू शैतान के लिए है

शैतान की इस युग में सबसे युद्धनीतिक कार्य भाइयों पर दोष लगाना है (प्रकाशित. 12:10) और इसी में प्रभु उसका अपने लहू के द्वारा महा याजक के रूप में सामना करता है (इब्रानियों 9:11-14)।

1. लहू परमेश्वर को शैतान के विरुद्ध मनुष्य के पक्ष में करता है

"...यदि परमेश्वर हमारी ओर है तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?...परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा?
"परमेश्वर ही है जो धर्मी ठहरानेवाला है? फिर कौन है जो दण्ड की आज्ञा देगा? मसीह ही है जो मर गया वरन् मुर्दो में से जी भी उठा, और परमेश्वर के दाहिनी ओर है, और हमारे लिए निवेदन भी करता है।" (रोमियों 8:31, 3-34)
जिन्होंने मसीह के बहे हुए लहू के कार्य को उनके जीवनों में लिया है उनके विरुद्ध शैतान को दोष लगाने का कोई आधार नहीं है।

2. लहू शैतान के स्वामित्व के सारे कानूनी अधिकारों को खत्म कर देता है

"जिस में हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है।" (कुलुस्सियों 1:14)
'छुटकारा का अर्थ है कीमत देकर वापस छुड़ाना।' हमारा अब नया मालिक है, और जो कीमत हमारे लिए थी यीशु का बहा लहू था।
"...परमेश्वर की कलीसिया...जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है।" (प्रेरितों 20:28)। 1 कुरिन्थियों 6:19-20; 1 तीमुथियुस 2:6 भी देखो।

ऊ. मसीह के लहू ने हमारे लिए क्या लाया है

1. एक शुद्ध हृदय

"पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो हम एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।" (1 यूहन्ना 1:7)

2. अनन्त जीवन

"यीशु ने उनसे कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ, और उसका लहू न पीयो, तुम में जीवन नहीं।" (यूहन्ना 6:53-54)

3. परमेश्वर तक पहुँच

"पर अब मसीह यीशु में तुम जो पहले दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा निकट हो गए हो।" (इफिसियों 2:13)

मेरी वचनबद्धता

मैं अब समझता हूँ कि मसीह के बहे लहू का परमेश्वर, शैतान और मेरे लिए क्या अर्थ है। मैं मसीह के लहू की सच्चाई के विषय में दूसरों को बताने के लिए समर्पित होता हूँ। मैं अपने आप को परमेश्वर की वाचा अकसर याद दिलाऊँगा जिसमें वह मेरे पाप क्षमा करता, पाप से मुझे शुद्ध करता और शैतान की हानि से मेरी रक्षा करता है।

पाठ 23 – परीक्षा

अ. शैतान के आक्रमण

शैतान मसीही पर अधिकतर परीक्षा के द्वारा आक्रमण करता है। और वह उसका आक्रमण दो क्षेत्रों पर ही करता है:

1. संसार की इच्छाएँ

वह एक विश्वासी को संसार के तरीकों में मगन हो जाने में लुभाने का प्रयास करेगा:

* संसार द्वारा पेश की जा रही चीजों को एक केन्द्रीय इच्छा बनाना;
* इस संसार के सम्मान और प्रशंसा को एक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य बनाना; और
* इस संसार के लोगों के साथ एक होने के सुख को सुरक्षा का आधार बनाता है।

"तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो। यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं।" (1 यूहन्ना 2:15)। याकूब 4:14; 1 तीमुथियुस 6:6-11।

2. शरीर की इच्छाएँ

क्रूस पर मसीह के कार्य के द्वारा, सच्चे मसीही ने पाप के परिणामों, और पाप के सामर्थ्य से छुटकारा पाया है (रोमियों 6:6-14)। परन्तु वह अभी भी एक शरीर में रहता है जो स्वाभाविक अभिलाषाओं और इच्छाओं के अधीन है। शैतान इन्हें एक मसीही को उसके अन्दर पवित्र आत्मा की प्रेरणाओं से अधिक उन पर भरोसा रखने के लिए इस्तेमाल करेगा (रोमियों 8:5-9)। याकूब 1:14; इफिसियों 2:3 भी देखो।

आ. शैतान की पहली विजय

शैतान ने जब पहले पुरुष और स्त्री को ललचाया था तब यह संसार और शरीर के क्षेत्रों में ही था, और ये आज भी उसकी युक्तियाँ हैं।

"क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा (कामुक तृप्ति की लालसा) और आँखों की अभिलाषा (मन की लालची लालसा) और जीविका का घमण्ड (अपने साधनों या पृथ्वी की चीजों में स्थिरता का भरोसा), वह पिता की ओर से नहीं परन्तु संसार ही की ओर से है।" (1 यूहन्ना 2:15)

हव्वा की परीक्षा की इस आयत से तुलनाः

<u>उत्पत्ति 3:6</u>	<u>1 यूहन्ना 2:16</u>
-खाने के लिए अच्छा	-"शरीर की अभिलाषा"
-देखने में मनभाऊ	-"आँखों की अभिलाषा"
-बुद्धि देने के लिए चाहनेयोग्य	-"जीविका का घमण्ड"

आदम और हव्वा के पतन के बाद से लेकर, सारी मानवजाति उनके शरीर के वश में हैं (ऊपर दी गई तीन चीजें)।
शरीर हमारे पापी स्वभाव के द्वारा भ्रष्ट हो गया है (गलातियों 5:19-21)।

इ. मसीह द्वारा पाई जीत

1. उसके जीवन के द्वारा

यीशु सब बातों में हमारे समान परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला।" (इब्रा. 4:15)

यीशु की परीक्षा की इस आयत से तुलनाः

<u>लूका 4:1-13</u>	<u>1 यूहन्ना 2:16</u>
पत्थर से रोटी	-"शरीर की अभिलाषा"
पृथ्वी के राज्य	-"आँखों की अभिलाषा"
मन्दिर की चोटी	-"जीविका का घमण्ड"

2. उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा

जो विश्वास मसीह के कार्य को अपना बनाता है, मसीही को पाप के सामर्थ्य और अधिकार से मुक्त कर देता है जिसका उस पर अधिकार था (रोमियों 8:9)।
वह अब परमेश्वर की आज्ञाओं में चलने के लिए स्वतंत्र है। (रोमियों 6:8-14)

"क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात् अपने ही पापमय शरीर की समानता में और पापबलि होने के लिए भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी। इसलिए कि व्यवस्था की विधि हममें जो शरीर के अनुसार नहीं वरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए।" (रोमियों 8:3-4)

ई. मसीही की निरन्तर विजय

मसीह द्वारा हमारे लिए जीती इस महान विजय के आधार पर, मसीही अब शैतान के किसी भी आक्रमण को हरा सकता है। निरन्तर विजय की सात कुंजियाँ हैं:

1. जानो कि विजय पहले ही प्राप्त की जा चुकी है

क्रूस पर उसकी हार के कारण, शैतान की ताकत अब केवल मसीही की अज्ञानता में ही है (होशे 4:6)। परन्तु जब एक मसीही अपने जीवन में क्रूस के सम्पूर्ण कार्य और पुनरुत्थान को जानता है, तब शैतान मसीही की ओर किसी भी हथियार से निहत्था कर दिया जाता है।

2. आत्मा के साथ कदम मिलाकर चलो

मसीही के अन्दर एक नई सामर्थ्य डाली जाती है - स्वयं पवित्र आत्मा। हमें हर दिन अपने भीतर उसकी प्रेरणाओं के आज्ञापालन में जीना है (गलातियों 5:22-25)।

3. परीक्षा को पहचानों

परीक्षा पाप नहीं है, परीक्षा में दे देना पाप है! (याकूब 1:15)। उत्पत्ति 4:6-7 देखो।

4. समझो कि बचाव का मार्ग दिया गया है

"तुम ऐसी किसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है। परमेश्वर सच्चा है और वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन् परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको।" (1 कुरिन्थियों 10:13)। याकूब 4:7 निकास के मार्ग बताता है: परमेश्वर के अधीन हो जाओ, शैतान का सामना करो और वह भाग जाएगा!

5. जीवन में सही केन्द्र रखो

"अतः जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहाँ मसीह विद्यमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ।" (कुलुस्सियों 3:1-2)। फिलिप्पियों 4:8; 1 तीमुथियुस 6:11-12; 2 पतरस 3:11-13 भी देखो।

6. परीक्षा के प्रत्यक्ष क्षेत्रों से दूर रहो

"मैं किसी ओछे काम पर चित्त न लगाऊँगा।" (भजन 101:3)। 1 तीमुथियुस 6:9-11 भी देखो।

7. शैतान की युक्तियों से सावधान रहो

हमारे लिए आवश्यक है कि हम शैतान की उन युक्तियों की जानकारी रखें जिन्हें वह हमारे विरुद्ध इस्तेमाल करता है ताकि वह हमें मात न दे सके। (2 कुरिन्थियों 2:11)

- अ. वह झूठा है (यूहन्ना 8:44)।
- आ. वह निन्दक और दोष लगानेवाला है (प्रकाशित. 12:10)।
- इ. वह धोखेबाज है (प्रकाशित. 12:9)।
- ई. वह परखनेवाला है (मत्ती 4:1-11)।
- उ. वह सतानेवाला है (प्रेरितों 10:38)।
- ऊ. वह रुकावट डालनेवाला है (1 थिस्स. 2:18)।
- ए. वह गरजनेवाला सिंह है (1 पतरस 5:8)।
- ऐ. वह एक ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण कर लेता है (2 कुरिं. 11:14)।

हम मसीहियों / विश्वासियों को विजय में जीने के लिए बुलाया गया है! मसीह के द्वारा, यह विजय हमारी है:

- संसार पर (1 यूहन्ना 5:4)।
- शरीर पर (गलातियों 5:16)।
- शत्रु पर (इफिसियों 6:11, 13)।

मेरी वचनबद्धता
मैं परमेश्वर का मुझे परीक्षा के समयों में छुड़ाने की प्रतिज्ञा के लिए धन्यवाद देता हूँ। मैं उसकी सहायता की ओर जो सदा उपलब्ध है प्रतिक्रिया करने के लिए अपने आप को समर्पित करता हूँ ताकि मैं विजय में जी सकूँ। मैं यह सत्य दूसरों को भी बताऊँगा।

पाठ 24 – संगति

अ. संगति का उद्देश्य

मसीहियों की इकट्ठी संगति बहुत महत्त्वपूर्व है, क्योंकि हमारी इस इकट्ठी एकता में...........

1. विश्वासी प्रोत्साहन पाता और मसीह में बढ़ता है

"मैं तुम से मिलने की लालसा करता हूँ कि मैं तुम्हें कई आत्मिक वरदान दूँ जिससे तुम स्थिर हो जाओ; अर्थात् यह कि जब मैं तुम्हारे बीच में होऊँ, तो हम उस विश्वास के द्वारा जो मुझ में और तुम में है, एक दूसरे से प्रोत्साहन पाएँ।" (रोमियों 1:11-12)

2. संसार को पता चलता है कि यीशु को परमेश्वर ने भेजा था

"वह महिमा जो तू ने मुझे दी मैं ने उन्हें दी है, कि वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं, मैं उन में और तू मुझ में कि वे एक होकर सिद्ध हो जाएँ, और संसार जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तू ने मुझे से प्रेम रखा वैसा ही उनसे प्रेम रखा है।" (यूहन्ना 17:22-23)

आ. संगति की शर्तें

1. एक दूसरे की ओर एक मूल वचनबद्धता

"भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे से स्नेह रखो; परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़े चलो।" (रोमियों 12:10)

बिना एक बुनियादी भरोसे के कोई संगति नहीं हो सकती है। वचनबद्धता की गहराई के अनुसार संगति की गहराई भिन्न होगी।

2. हमारी वचनबद्धता 'आगापे' पर आधारित होनी चाहिए

'अगापे' एक तरफा प्रेम है, जो 'के बावजूद', न कि 'के कारण' प्रेम करता है। दूसरे शब्दों में, यह बलिदान सम्बंधी, पाने की आशा किए बिना देना है। इसलिए इस प्रकार की वचनद्धता दूसरे व्यक्ति की असंगत व्यवहार से प्रभावित नहीं होगा।

"मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ कि एक दूसरे से प्रेम रखो; जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।" (यूहन्ना 13:34)।

3. सच्ची संगति मसीह-केन्द्रित होती है

हमारे एक दूसरे के साथ संगित मसीह की ओर हमारी सामूहिक वचनबद्धता पर आधारित होती है।

"...हमारी यह सहभागिता पिता के साथ और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है।" (1 यूहन्ना 1:3)। फिलिप्पियों 2:1-2 भी देखो।

4. ज्योति में चलना

हमारी संगति में एक दूसरे के साथ खुला, ईमानदार और सच्चा होने की आवश्यकता है। इसमें सम्मिलित हो सकता है:

अ) दूसरों के सामने अपने पापों को मान लेना, या दूसरे के पापों को ढाँप देना।

"यदि हम कहें कि उसके साथ हमारी सहभागिता है और फिर अन्धकार में चलें, तो हम झूठे हैं और सत्य पर नहीं चलते। पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।" (1 यूहन्ना 1:6-7)। मत्ती 18:15 भी देखो।

आ. ज्योति का आज्ञापालन - परमेश्वर द्वारा दी गई सामान्य और विशेष आज्ञाएँ।

इ. नकाबों या झूठे आवरकों को हटाना

संसार की कितनी सारी संगति पाखण्डी होती है - अभिनय करना, और सच्ची नहीं है।

"अतः जब कि तुम ने भाईचारे की निष्कपट प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है, तो तन-मन लगाकर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो।" (1 पतरस 1:22)

5. दूसरे के कल्याण में एक सच्ची रुचि दिखाना

अपने लाभ का कुछ भी गुप्त अभिप्राय नहीं होना चाहिए। हमारी इच्छा देने की न कि पाने की होनी चाहिए।

"विरोध या झूठी बड़ाई के लिए कुछ न करो, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपने ही हित की नहीं, वरन् दूसरों के हित की भी चिन्ता करे।" (फिलि. 2:3-4)

6. अपने जीवन को देने की उत्सुकता

"मेरी आज्ञा यह है, कि जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिए अपने प्राण दे।" (यूहन्ना 15:12, 13)

जीवन में शारीरिक जीवन से अधिक होता है। इसमें हमारी धन-सम्पत्ति, हमारी रुचियाँ और पसन्द आदि सम्मिलित होते हैं। (याकूब 2:15, 16)। इसका अर्थ है अपने आपको खुल कर देने की उत्सुकता। हम लोगों को उतना ही जान सकते हैं जितना वे उनको प्रकट करना चाहते हैं।

इ. कलीसिया में संगति का अर्थ है.....।

1. सब चीजें सोझे में होना

प्रेरितों 2:32 में उनकी संगति में विकास की तीन अवस्थाएँ थीं - पहले, वे एक हृदय थे (आत्मा), फिर वे एक प्राण थे (मन), और फिर सब चीजें साझे की होने की शारीरिक अभिव्यक्ति हुई थी।

"सब विश्वास करनेवाले इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएँ साझे में थीं। वे अपनी-अपनी सम्पत्ति और सामान बेच-बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बाँट दिया करते थे।" (प्रेरितों 2:44-45)

2. उनके जीवन दे देना

"प्रिस्का और अक्विला को जो मसीह यीशु में मेरे सहकर्मी हैं, नमस्कार। उन्होंने मेरे प्राण के लिए अपना ही जीवन जोखिम में डाल दिया था; और केवल मैं ही नहीं, वरन् अन्यजातियों की सारी कलीसियाएँ भी उनका धन्यवाद करती हैं।" (रोमियों 16:3-4)

3. भाइयों की सेवा करने में लगे हुए

"तुम स्तिफनास के घराने को जानते हो कि वे अखया के पहले फल हैं, और पवित्र लोगों की सेवा के लिए तैयार रहते हैं।" (1 कुरिं. 16:15)

4. दूसरों की आवश्यकता पूरी करने में एक माध्यम बनना

"परन्तु बराबरी के विचार से इस समय तुम्हारी बढ़ती उनकी घटी में काम आए, ताकि उनकी बढ़ती भी तुम्हारी घटी में काम आए कि बराबरी हो जाए।" (2 कुरिं. 8:14)। 1 कुरिं. 16:17 भी देखो।

5. दुखों में भागी होना

"तौभी तुम ने भला किया कि मेरे क्लेश में मेरे सहभागी हुए।" (फिलि. 4:14)

6. बलिदान से देना

"कि क्लेश की बड़ी परीक्षा में उनके बड़े आनन्द और भारी कंगालपन में उनकी उदारता बहुत बढ़ गई। उनके विषय में मेरी यह गवाही है कि उन्होंने अपनी सामर्थ्य भर वरन् सामर्थ्य से भी बाहर, मन से दिया। (2 कुरिं. 8:2-3)

7. अतिथि-सत्कार करना

"हे प्रिय, जो कुछ तू उन भाइयों के साथ करता है, जो परदेशी हैं, उसे विश्वासी के रूप में करता है।" (3 यूहन्ना 5)। इब्रानियों 13:2 भी देखो।

8. एक दूसरे की उन्नति करना और प्रोत्साहित करना

"वैसे ही हम तुम्हारी लालसा करते हुए, न केवल परमेश्वर का सुसमाचार पर अपना अपना प्राण भी तुम्हें देने को तैयार थे, इसलिए कि तुम हमारे प्रिय हो गए थे। (1 थिस्स. 2:8)। 2 तीमुथियुस 3:10-14 भी देखो।

ई. संगति के परिणाम

प्रारम्भिक कलीसिया में संगति के परिणाम थे:

* परमेश्वर का भय (प्रेरितों 2:43);
* आनन्द (प्रेरितों 2:46);
* सब लोग प्रसन्न थे (प्रेरितों 2:47);
* नए विश्वासियों का जुड़ना (प्रेरितों 2:47);
* सब आवश्यकताएँ पूरी होना (फिलि. 4:19)
* अगुआई बनना (1 कुरिं. 16:15-16)

मेरी वचनबद्धता

इस अध्ययान के द्वारा दूसरे मसीहियों के साथ निरन्तर संगति के महत्त्व को मैं समझ गया हूँ। आज मैं विश्वासियों के दल का एक भाग होने के लिए वचनबद्ध होता हूँ जिन्हें मैं अपनी वफादारी, अपना प्रेम और अपनी सेवा दूँगा।

अनुग्रह में बढ़ना पर शिक्षकों के लिए अतिरिक्त टिप्पणियाँ

पाठ 1 और 2 पर टिप्पणियाँ

इस पाठ का उद्देश्य विश्वासी को वचन पर आधारित भरोसा दिलाना है कि उसका उद्धार सुनिश्चित है और उसकी सुरक्षा उसके जीवन में परमेश्वर के कार्य के कारण है।

विश्वासियों को भी उनके उद्धार पर क्यों संदेह होता है के कुछ कारण:

1. उनकी भावनाएँ ऊपर-नीचे होती रहती हैं: कभी-कभी वे आत्मिक महसूस करते हैं और कभी नहीं करते। जब वे "नीचे" महसूस करते हैं, तब कुछ उनके उद्धार पर संदेह करने लगते हैं।
2. उनकी प्रार्थनाएँ सुनी नहीं जातीं; अनसुनी प्रार्थनाओं के कारण विश्वासी उनका विश्वास खोने लगते हैं और फिर उनके उद्धार पर संदेह प्रकट करते हैं।
3. उनके जीवन "सिद्ध" नहीं हैं और इस कारण से उनको लगता है उनका उद्धार नहीं हुआ है।
4. उनके जीवन में कठिनाइयाँ आती हैं और इन कठिनाइयों के कारण वे उनका विश्वास खो देते हैं।

इन संदेहों के उत्तर हैं:

हमारा उद्धार न तो हमारे "कर्मों" पर और न ही हमारी भावनाओं पर आधारित है। हमारा उद्धार मुख्य रूप से मसीह ने जो क्रूस पर हमारे लिए किया है, पाप की दोषसिद्धि और परमेश्वर का अनुग्रह लाने के पवित्र आत्मा के कार्य और पश्चाताप और विश्वास द्वारा हमारी प्रतिक्रिया दिखाने पर आधारित है। उद्धार परमेश्वर का कार्य और हमारे जीवनों में उसके कार्य की ओर हमारे विश्वास की प्रतिक्रिया है।

प्रार्थनाओं के उत्तर नहीं मिलने का कारण, या तो गलत अभिप्राय से माँगने के कारण है या जो हम ने माँगा है हमारे लिए नहीं हैं। प्रार्थना के उत्तर नहीं मिलना कभी देर से उत्तर आना भी हो सकता है। नहीं सुनी गई प्रार्थनाएँ एक काफी बड़ा विषय हैं कि इस पर एक सम्पूर्ण शिक्षा दी जाए। इस पाठ में महत्त्व की बात यह है कि प्रार्थनाओं के उत्तर नहीं मिलने के कारण से यह परिणाम नहीं निकालना चाहिए कि परमेश्वर हम से प्रेम नहीं करता है, या हमारा उद्धार नहीं हुआ है या परमेश्वर प्रार्थनाओं को नहीं सुनता है।

हमारे उद्धार का आश्वासन है क्योंकि परमेश्वर ने हमें पवित्र आत्मा दिया जो हमारे उद्धार की छाप है (इफि. 1:13-14)। और अब हम अपने स्वर्गीय पिता के लेपालक पुत्र और पुत्रियाँ हैं।

पाठ के अध्ययन की तैयार के लिए कुछ अतिरिक्त वचन भी पढ़िए, जैसे कि:

-रोमियों 8:28-39
-इफि. 4:30
-1 यूहन्ना 1:9
-फिलि. 1:3-6
-याकूब 1:2-4
-भजन 23, 91, 103

पाठ 3 पर टिप्पणियाँ

इस पाठ का उद्देश्य नए मसीही की उसके मसीही जीवन के तीन महत्त्वपूर्ण पहलुओं से पहचान करवाना है: प्रेम, विश्वास और धर्मी जीवन जीना।

इस पाठ का संदर्भ मसीह में मसीही की 'स्थिति' और मसीह में उसकी 'चाल' में अन्तर है। हम ने पाठ 2 में सीखा था कि जब एक व्यक्ति का नया जन्म होता है तब वह एक नई सृष्टि बन जाता है, और वह परमेश्वर का लेपालक पुत्र बन जाता है। यह मसीह में मसीही की 'स्थिति' है।

उसके विपरीत, मसीही के उद्धार के बाद उसका रोजाना का जीवन उसकी मसीह में 'चाल' है। यह पाठ इस बात पर जोर देता है कि जैसे एक मसीही मसीह के साथ चलने लगता है वह प्रेम, विश्वास और पवित्रता में बढ़ते जाए।

प्रश्न 2 "शरीर" के कामों, जो स्वभाव जिसने हमें हमारे नए जन्म से पहले वश में किया हुआ था, और आत्मा के फलों में अन्तर दिखाता है। जब हमारा नया जन्म होता है, तब पवित्र आत्मा हमारे जीवनों में निवास बनाता है और हमें आत्मा से नियंत्रित जीवन जीने की आवश्यकता होती है। ध्यान देने वाली बात यहाँ "फल" शब्द है जो आत्मा से नियंत्रित जीवन के चरित्र के विभिन्न गुण हैं। स्वाभाविक फल बढ़ने और पकने में समय लेते हैं और आत्मिक फलों के साथ भी ऐसा ही होता है। नए विश्वासियों को समझाना आवश्यक है कि मसीही चरित्र हमारे नया जन्म लेने पर तुरन्त प्रकट नहीं हो जाता है, परन्तु हमें अपने मसीही चरित्र में अपनी इच्छाओं को प्रतिदिन के आधार पवित्र आत्मा के अधीन करने से बढ़ने की आवश्यकता होती है।

प्रश्न 5, 6 और 7 पवित्र जीवन जीने के विषय में हमारे शरीरों की ओर हमारे रवैयों पर हैं। यहाँ मुख्य बात यह समझने की है कि हमारे शरीर पवित्र आत्मा के मंदिर हैं और इसलिए हमें अपने जीवन पाप से दूर रखने हैं। रोमियों 12:1 हमें उपदेश देता है कि हम अपने शरीरों को परमेश्वर को एक जीवित बलिदान करके चढ़ाएँ। प्रश्न 5, 6 और 7 को सिखाने के बाद, विद्यार्थी को यह करने के लिए प्रोत्साहित करना उचित होगा:

1) उनकी जीवनशैली पर विचार करें और यदि आवश्यक हो तो उनके पाप से मन फिराएँ
2) आत्मा के नियंत्रण में जीवन जीने के लिए उनके जीवन और विशेषकर उनके शरीरों को पुनःसमर्पित करें।

प्रशेन 8 से 10 जो प्रेम पर हैं दूसरों से प्रेम करने पर जोर देते हैं। आप दूसरों से प्रेम करने के विभिन्न व्यावहारिक पहलू लाने के लिए के लिए 1 कुरिन्थियों 13 भी सिखा सकते हैं।

प्रश्न 11 से 15 विश्वास पर हैं। इन प्रश्नों की पृष्ठभूमि के रूप में, उद्धार लानेवाला विश्वास जो मसीह के क्रूस के कार्य पर विश्वास है जो हमारा उद्धार लाया है और प्रतिदिन के विश्वास में जो हम अपने रोजाना के जीवन में विभिन्न स्थितियों में से जीने के लिए मसीह में भरोसा रखते हैं अन्तर बताना उपयोगी होगा। हमें मसीह में अपने भरोसे और विश्वास में बढ़ने के लिए बुलाया गया है जो परिपक्व मसीही का एक महत्त्वपूर्ण चरित्र का गुण है।

पाठ 4 पर टिप्पणी

इस पाठ का लक्ष्य एक व्यक्ति की आत्मिक बढ़त के लिए प्रार्थना, बाइबल अध्ययन और गवाह होने के महत्त्व पर जोर देना है। पाठ समझने में बहुत सरल है और किसी व्याख्या की आवश्यकता नहीं है।

फिर भी, नीचे की बातों पर ध्यान दीजिए:

1) नियमित बाइबल पढ़ना/अध्ययन और नियमित प्रार्थना करने में अनुशासन और वचनबद्धता की आवश्यकता होती है। कलीसिया के सदस्यों को इस प्रयास के लिए और इसमें वचनबद्ध होने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
2) एक व्यावहारिक दृष्टिकोण से, बाइबल अध्ययन और व्यक्तिगत प्रार्थना के लिए एक निश्चित समय होना बहुत उपयोगी होता है। कलीसिया के सदस्यों को एक उचित समय निश्चित करने के लिए - जब वे साधारणतः बाधा अनुभव नहीं करेंगे - और परमेश्वर के साथ समय के लिए इस समय को हर दिन बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित करो।
3) एक व्यक्तिगत प्रार्थना के समय के अतिरिक्त, सदस्यों को सामूहिक प्रार्थनाओं में भाग लेने और कलीसिया की प्रार्थना सभाओं में नियमित भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
4) गवाह होने के विषय में, कई कहते हैं कि यह कठिन है। यदि यह मनुष्य के डर के कारण है तो सम्भवतः इससे मन फिराने की और प्रार्थना करने की आवश्यकता है कि परमेश्वर का अभिषेक उन्हें गवाह होने का साहस देगा।
5) इस शिक्षा के अंश के रूप में, कलीसिया सभाओं में नियमित उपस्थित रहने के महत्त्व का अध्ययन करना उपयोगी होगा। (इब्रानियों 10:25)

प्रश्न 1, 9 और 10 की सुर्खियाँ हैं:

1) शैतान मसीही का सबसे बड़ा शत्रु है।
2) शैतान हमें आत्मिक रूप से अंधा करने की कोशिश करता है।
3) शैतान कभी-कभी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत के रूप में प्रकट होकर हमें धोखा देता है। यह इस तथ्य को प्रकट करता है कि शैतान न केवल हमें खुलेआम लुभाता है बल्कि हमारा पतन लाने के लिए धोखा और चतुराई भी उपयोग करता है।

प्रश्न 2 - 8 और 11 - 14 परमेश्वर के प्रबंध हैं और जयवन्त जीवन जीने के लिए उठाने वाले कदम हैं।

परमेश्वर का प्रबंध:

1) प्रभु हमें शक्ति देता है - फिलि. 4:13; लूका 10:19
2) परमेश्वर विश्वासयोग्य है कि वह हमें हमारी शक्ति से अधिक परीक्षा में पड़ने नहीं देता है और निकास का मार्ग भी सदा बनाता है - 1 कुरिं. 10:13
3) पवित्र आत्मा हमें सामर्थ्य देता है - प्रेरितों 1:8
4) आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है शैतान के आक्रमणों से लड़ने की हमें सामर्थ्य देता है - इफि. 6:17
5) हमारा विश्वास - 1 यूहन्ना 5:4

जो कदम हमें उठाने हैं:

1)हमें परमेश्वर के अधीन होना और शैतान का सामना करना है - याकूब 4:7
2)हमें आत्मा में चलना है - गलातियों 5:16
3)हमें परमेश्वर के हथियार पहनने हैं - इफि. 6:13-17
4)हमें परमेश्वर का वचन इस्तेमाल करना है - मत्ती 4:4, 7, 10; भजन 119:11

प्रश्न 15 और 16 शैतान का अन्तिम विवरण देते हैं कि यीशु शैतान के कामों को नष्ट करने आया था और कि उसे अन्त में आग की झील में डाल दिया जाएगा जहाँ उसे सदा के लिए यातना दी जाएगी।

पाठ 5 पर टिप्पणियाँ

यह आत्मिक युद्ध की मूल बातों का एक पाठ है। पाठ मान कर चलता है कि पाठक जानता है कि शैतान परीक्षा करनेवाला है। फिर भी, शैतान की वास्तविकता और हर विश्वासी को हार और पाप में लाने के उसके प्रयासों का अध्ययन करना भी आवश्यक है।
नया नियम शैतान को बालजबूल, इस संसार का राजकुमार - यूहन्ना 14:30, आकाश के अधिकार का हाकिम - इफि. 2:2 कहती है। शैतान परमेश्वर का विरोधी है और परमेश्वर के उद्देश्यों को उलट देने का काम करता है।

यीशु की उसकी सेवा के आरम्भ में बहुत परीक्षा हुई थी - मत्ती 4 और लूका 4। वह "सब बातों में हमारे समान परखा तो गया" - इब्रा. 4:15। यह संघर्ष महत्त्वपूर्ण था क्योंकि यीशु संसार में शैतान के कार्यों को नष्ट करने के उद्देश्य से ही आया था - 1 यूहन्ना 3:8।
शैतान परमेश्वर के लोगों के निरन्तर विरुद्ध रहता है। मसीही एक ऐसे युद्ध में है जो चल रहा है और चतुराई से लड़ा जा रहा है। फिर भी, जब हम शैतान का सामना करते हैं तब वह भाग जाता है - याकूब 4:7।

शैतान मनुष्य की परीक्षा करता रहता है। जिन तरीकों से वह करता है वे हैं:

1) परमेश्वर द्वारा निर्धारित सीमाओं के भीतर परिस्थितियों को चालाकी से प्रभावित करके - अय्यूब 1:12; 2:6; 1 कुरिं. 10:13।
2) कठिन परिश्रम और पीड़ा के द्वारा - अय्यूब 1:11 - 2:7; 1 पतरस 5:9; प्रकाशित. 2:10।
3) स्वाभाविक इच्छाओं की गलत पूर्ति के लिए उकसा कर - मत्ती 4:3-11; 1 कुरिं. 7:5।
4) उन्हें आत्मसन्तुष्ट, असावधान और स्वाग्राही बनाकर - गला. 6:1; इफि. 4:27।
5) परमेश्वर का गलत रूप प्रकट करके और उसके सत्य और उसकी इच्छा के गलत विचार पैदा करके - उत्प. 3:1-5; 2 कुरिं. 11:3; मत्ती 4:5-11; 2 कुरिं. 11:14; इफि. 6:11।

पाप में पड़ने की इच्छा हमारी अपनी है और पाप में पड़ना घातक हो सकता है - याकूब 1:13-15। यीशु ने उसके चेलों को सिखाया कि वे परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह उन्हें परीक्षा में न ले जाए परन्तु वे प्रार्थना करें और जागते रहें ताकि वे दबाव में न आ जाएँ - मत्ती 6:13; मत्ती 26:14। परीक्षा पाप नहीं है क्योंकि मसीह भी हमारे समान परखा गया था और वह फिर भी निष्पाप रहा। परीक्षा पाप तब ही बनती है जब बुराई का सुझाव स्वीकार किया और माना जाता है।
यह पाठ शैतान के कुछ कार्यों का पता लगता है और उन प्रबंधों का भी पता लगाता है जिन्हें परमेश्वर शैतान और परीक्षा को जीत लेने के लिए हमें दिया है।

पाठ 6 की टिप्पणियाँ

इस पाठ में सात प्रश्न हैं। प्रश्नों के उत्तर मुख्य रूप से हैं:

प्रश्न 1: कलीसिया एक 'देह' है, मसीह देह का सिर है और हर विश्वासी देह का एक सदस्य का अंग है।

प्रश्न 2: मसीह के लिए हमारे प्रेम का प्रमाण उसकी आज्ञाओं का हमारा आज्ञापालन है।

प्रश्न 3: संदेश स्वीकार करने पर, प्रारम्भिक मसीहियों को बपतिस्मा दिया गया था। तब वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, संगति, रोटी तोड़ने और प्रार्थना में लग गए।

प्रश्न 4: मसीहियों को संगति में इकट्ठे होने की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

प्रश्न 5: मसीह पिता के दाहिनी ओर हमारे लिए प्रार्थना कर रहा है।

प्रश्न 6: मसीह प्रार्थना करता है कि उसके लोग बुराई से बचाए जाएँ और कि वे पवित्र किए जाएँ।

प्रश्न 7: यह प्रश्न कलीसिया के कुछ उद्देश्यों को पहचानता है।

इस पाठ के परिचय में, विश्वव्यापक कलीसिया और स्थानीय कलीसिया में एक भिन्नता बताई गई है। यह एक महत्त्वपूर्ण भिन्नता है। बाइबल में स्थानीय कलीसिया के कुछ संदर्भ हैं: प्रेरितों 5:11; 13:1; 18:22; 1 कुरिं. 1:2; 1 थिस्स. 1:1 और विश्वव्यापक कलीसिया के संदर्भ हैं: कुलु. 1:18; इफि. 5:23, 26-28।

एक और बहुत ही बुनियादी परन्तु महत्त्वपूर्ण बात यह है कि कलीसिया एक इमारत नहीं है बल्कि लोग है जो मसीह में विश्वास के द्वारा परमेश्वर के हैं। वे सब जो मसीह को उनका व्यक्तिगत प्रभु और उद्धारकर्त्ता मानते हैं कलीसिया हैं। मसीही कभी-कभी कलीसिया जाने की बात करते हैं - हम कलीसिया नहीं जाते; हम कलीसिया हैं! फिर भी, हम आराधना, रोटी तोड़ने, संगति और बाइबल की खरी शिक्षा पाने के लिए इकट्ठे होते हैं। यह इकट्ठा होना यूनानी शब्द 'ecclesia' से आता है जिसे अकसर कलीसिया अनुवाद किया गया है। पाठ के प्रश्न 3 में उन क्रियाओं के विषय में बताया गया है जिन्हें हम इकट्ठे होने पर करते हैं। प्रश्न 4 इकट्ठे होने के महत्त्व पर जोर देता है।

प्रश्न 1 बहुत महत्त्वपूर्ण सत्य को प्रकट करता है कि कलीसिया मसीह की देह है जिसका सिर यीशु है और हर सदस्य उस देह का एक अंग है। यीशु की प्रधानता से प्रश्न 2 में निपटा गया है जहाँ हम से जो उसकी देह के सदस्य हैं, उसकी आज्ञाओं का पालन करने को कहा गया है। हमारा उसका आज्ञापालन हमारे जीवनों में उसकी प्रधानता के स्वाकीर का संकेत है।

उसकी देह के सदस्यों के रूप में विश्वासियों की भूमिका पर जोर दिया जाना चाहिए। 1 कुरिं. 12 और 14 को यह महत्त्व समझने के लिए पढ़ना है कि हर सदस्य को कलीसिया के जीवन में कार्य करना है और योगदान देना है। और साथ में हर सदस्य भिन्न है और सबकी अपनी अपनी भिन्न भूमिका है। जब हर सदस्य कलीसिया में कार्य करता है तब कलीसिया प्रभावशाली होगी और इसके अतिरिक्त, सदस्य भी बढ़ेंगे और उनके लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करेंगे।
हर सदस्य का योगदान अकसर उनके आत्मिक और स्वाभाविक वरदानों से सम्बंधित होता है। पता लगाने का प्रयास करो कि आपके 'वरदान' क्या है और कि वे योग्यताएँ और वरदान कलीसिया की आशीष के लिए उपयोग में लाए जा रहे हैं या नहीं। इसके अतिरिक्त, हर एक को सभा में भाग लेने और योगदान देने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए - 1 कुरिं. 14:26।

कलीसिया का एक और गुण कलीसिया में सब की बराबरी है - गला. 3:28। सब मसीह में एक हैं, सब मसीह में बराबर हैं।

प्रश्न 5 और 6 बताते हैं कि यीशु हमारे लिए प्रार्थना कर रहा है और पिता की दाहिनी ओर है। और, कलीसिया के लिए उसकी प्रार्थना थी कि कलीसिया पवित्र हो और बुराई से बचाई जाए। (पूरा यूहन्ना 17 देखो)

प्रश्न 7 कलीसिया के उद्देश्य के विषय में बताता है - कलीसिया को क्या करना है और इसे क्या बनना है।

पाठ 7 की टिप्पणियाँ

इस पाठ में, कलीसिया की दो धर्मविधियों के विषय में सिखाया गया है, जो हैं बपतिस्मा और प्रभु भोज। इस पाठ की शिक्षा दो भागों में है: भाग अ में है बपतिस्मा और भाग आ में है प्रभु भोज।

भाग - अ: बपतिस्मा

इस पाठ में बपतिस्मा पर चार प्रश्न हैं: पहला प्रश्न यूहन्ना के बपतिस्मा पर है, दूसरा यीशु के बपतिस्मा पर, तीसरा उस आज्ञा पर है जिसे यीशु ने उसके चेलों को बपतिस्मा देने के लिए दी थी और चौथा बपतिस्मा के प्रश्न पर है।

अतिरिक्त बातें जिन पर विचार और जिनका अध्ययन किया जाना चाहिए, वे हैं:
1) मसीही बपतिस्मा मसीह के साथ संयोग (गलातियों 3:26-27), पापों की क्षमा (प्रेरितों 2:38), मसीह के साथ उसकी मृत्यु, गाड़े जाने और नए जीवन के लिए पुनरुत्थान में पहचान (रोमियों 6:3-5), और मसीह की देह का एक सदस्य बनने का प्रतीक है (बपतिस्मा की आशीषें विश्वास से पाई जाती हैं) (रोमियों 6:8-11)।

2) बपतिस्मा एक सार्वजनिक घोषणा है अपने लिए, संसार, अन्धकार की प्रधानताओं और अधिकारों और परमेश्वर के लिए कि व्यक्ति ने नया जन्म पाया है, मसीह में नई सृष्टि है और पूर्व और पुराने जीवन के लिए मर चुका है।

3) बपतिस्मा डुबकी लगाकर होता है। यह बाइबल के व्यवहार के अनुसार है, और यूनानी शब्द 'baptizo' - डुबकी लगाना के अनुसार भी है, जिसमें से हमारा हिन्दी शब्द मिलता है, जो पुराने मनुष्य की मृत्यु और गाड़े जाने और मसीह में नए मनुष्य के जीवन में पुनरुत्थान का प्रतीक है।

4) बपतिस्मा विश्वासियों के लिए है - जिन्होंने उनके जीवन मसीह को दिए हैं। बपतिस्मा एक व्यक्ति को एक मसीही विश्वासी नहीं बनाता है - यह उस परिवर्तन का संकेत देता है जो पहले हो चुका है। इसलिए बच्चे का बपतिस्मा व्यर्थ है। बाइबल हमें कहती है 'विश्वास करो और बपतिस्मा लो' जो प्रकट है बच्चे नहीं कर सकते हैं।

5) बपतिस्मा में आशीष है क्योंकि यह आज्ञापालन का एक महत्त्वपूर्ण कदम है। अनेक मसीहियों ने उनके बपतिस्मे के बाद छुटकारा और मसीह की ओर बड़ी वचनबद्धता अनुभव की है। बपतिस्मा के आत्मिक महत्त्व के कारण, शैतान अकसर व्यक्ति के बपतिस्मा में रुकावट डालता है।

6) बपतिस्मा अतीत को अलग करता है। विश्वासियों के जीवन में इसका प्रभाव विशेषकर जो गैर-मसीही जीवन से आते हैं बहुत बड़ा होता है। इसलिए जिन्होंने नया जन्म पाया है उन्हें जितनी जल्दी हो सके बपतिस्मा लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। फिर भी, नाबालिग और विवाहित स्त्रियों के मामले में, यदि बपतिस्मा का विरोध होता है तो बपतिस्मा लेनेवाले को माता-पिता/पति की सहमति लेनी चाहिए।

भाग - आ: प्रभु भोज

प्रभु भोज की हमारी सम्पूर्ण समझ इसे नीचे दिए ढाँचे में देखकर मजबूत की जा सकती है:

व्यक्ति से सम्बंधित:
पूर्व: याद करो - अ) जो यीशु ने मृत्यु के द्वारा मनुष्य के लिए किया है।
आ) दुख जो यीशु ने सहे।
इ) जिस प्रकार हम जब हम ने मसीह को अपने हृदयों में स्वीकार किया था परमेश्वर के अनुग्रह से उद्धार पाए थे।

वर्तमानः -वर्तमान पापों के लिए क्षमा माँगो।

-स्वीकार करो कि हम अनुग्रह द्वारा उद्धार पाए हैं।

-मसीह की आज्ञापालन के लिए पुनःसमर्पित हो जाओ।

-विश्वास से प्रभु भोज में भाग लेकर नवीकरण और मजबूती को अपना बना लो।

भविष्यः उसके पुनरागमन की अपेक्षा करो।

प्रभु भोज की तैयारीः

हमें भाग लेते समय देह को पहचानने को कहा गया है। और हम एक देह में भाग लेते हैं जिसका प्रतीक रोटी है। कुरिन्थुिस की कलीसिया में, प्रभु भोज के समय लोग दूसरों का विचार किए बिना स्वार्थीपन से व्यवहार कर रहे थे और इसलिए उनका न्याय हुआ था। यह सब दिखाता है कि प्रभु भोज कलीसिया की एकता का प्रतीक है जैसे कि एक दूसरे के लिए प्रेम, एक दूसरे के साथ अच्छे सम्बंध और एक सामान्य लक्ष्य और दर्शन।

इसलिए, प्रभु भोज लेने के समय, यह आवश्यक है कि कलीसिया के सदस्य अपने आप को जाँच लें कि उनका एक दूसरे और सारी कलीसिया के साथ सम्बंध कैसे हैं।

प्रभु भोज के समय को न केवल अपनी जाँच करने और परमेश्वर के निकट आने के समय के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए परन्तु उत्सव के रूप में भी इस्तेमाल किया जाना चाहिए - अपने लिए उसकी भलाई को मनाना और हमारे जीवनों में उसके कार्य के कारण एक दूसरे के लिए हमारा प्रेम जो है उसे मनाना।

कुछ अतिरिक्त प्रश्न और उनके उत्तरः

1. क्या बच्चे उनके बपतिस्मे से पहले प्रभु भोज ले सकते हैं ?
   हाँ, यदि उनके बच्चे विश्वासी हैं, उन्हें मसीह के ज्ञान में पाला-पोसा गया है और वे इसका अर्थ समझते हैं।
2. प्रभु भोज कौन दे सकता है - पादरीजन या साधारण विश्वासी ?
   सब विश्वासी परमेश्वर का 'याजक' है। पादरियों या जो नियुक्त किए गए हैं और जो नहीं किए गए हैं उनमें परम्परागत भिन्नता मनुष्य का काम है। कोई भी जो यीशु मसीह को प्रभु और उद्धारकर्त्ता के रूप में जानता है प्रभु भोज में भाग ले सकता है और आवश्यकता पड़ने पर, दे भी सकता है।
3. यदि आप पाप का जीवन जी रहे हैं, तो क्या आप भाग ले सकते हैं ?
   नहीं। फिर भी, प्रभु भोज के समय को पश्चाताप के लिए उपयोग किया जाना चाहिए और पश्चाताप के बाद, विश्वासी भाग ले सकता है।
4. क्या गैर-मसीहियों को भाग लेने से रोका जाना चाहिए ?
   ऐसा किया जाता है कि प्रभु भोज लेने से पहले, घोषणा की जाती है कि वे सब जो यीशु को प्रभु और उद्धार के रूप में जानते हैं भाग ले सकते हैं और जो उसे इस प्रकार नहीं जानते या समझते नहीं हैं क्या घोषणा की जा रही है उनसे विनती है कि भाग न लें। इसके अतिरिक्त, घोषणा की जानी चाहिए कि जो प्रभु भोज के विषय में जानना चाहते हैं वे सभा के बाद अगुवों से मिल सकते हैं। इसके बाद, व्यक्ति विशेष की जिम्मेवारी है कि वह भाग लेता है या नहीं।

पाठ 8 पर टिप्पणियाँ

पाठ अच्छी तरह लिखा गया है और देने के बारे में मुख्य बातें सिखाता है। प्रश्नों के उत्तर हैंः

1. हमारे हृदय (अपने आप को और केवल अपना रुपया-पैसा ही नहीं)।
2. परमेश्वर को। हम अपने नहीं हैं, हमें मोल देकर खरीदा गया है। हमारे शरीर पवित्र आत्मा के मंदिर हैं।
3. हमें अपने शरीरों को एक जीवित बलिदान करके परमेश्वर को चढ़ाना चाहिए। यहाँ, शरीर शब्द केवल हमारे शरीरों के लिए ही नहीं है बल्कि हम सबकुछ जो हैं जिसमें हमारे शरीर भी शामिल हैं।
4. हमारा प्रेम।
5. लेने से देना अधिक धन्य है।
6. दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा। लोग पूरा नाप दबा दबाकर और हिला हिलाकर और उभारता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा।
7. नहीं। (फिर भी, देने और उधार देने में बुद्धि इस्तेमाल की जानी चाहिए क्योंकि इससे व्यर्थ निर्भरता बन सकती है।)

8. देनेवाले को।
9. बिना रोक-टोक दो। और बिना प्रदर्शन किए या तमाशा बनाए दो। (मत्ती 8:1-4)
10. खुशी से देनेवाला। यह देते का रवैया दिखाता है - विवश होकर या शिकायत करते हुए नहीं परन्तु आनन्द के साथ।

देने के विषय में कुछ प्रश्न जो अकसर पूछे जाते हैं:

1. क्या दसवाँ अंश देना आवश्यक है?
   पुराने नियम में दसवें की आज्ञा दी गई थी। हम अब अनुग्रह के अधीन हैं व्यवस्था के नहीं। फिर भी, नई वाचा में भक्तिपूर्ण जीवन का स्तर जो यीशु ने निर्धारित किया था पुरानी वाचा से कहीं ऊपर है। इसलिए, दसवाँ अंश देने की पुरानी वाचा की आवश्यकता को न्यूनतम माना जाना चाहिए और हम जो मसीह के हैं उन्हें उससे अधिक देना चाहिए।

2. हम दशमाँश किसे दें?
   दशमाँश उस कलीसिया को दिया जाना चाहिए जहाँ व्यक्ति संगति करता है और आत्मिक आशीष पा रहा है। सुझाव दिया जाता है कि पहला दसवाँ कलीसिया को दिया जाना चाहिए और यदि दूसरी सेवाओं को सहयोग देना है तब दशमाँश से अधिक दानों के द्वारा किया जाना चाहिए। दशमाँश को विभिन्न सेवाओं और कलीसियाओं में बाँटने के तरीके को हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

3. दशमाँश और दान देने का कारण क्या है? क्या यह मुख्य रूप से परमेश्वर की आशीष पाने के लिए है?
   दशमाँश परमेश्वर की प्रभुता और यह सच्चाई कि सब आशीषें और योग्यताएँ परमेश्वर से आती हैं स्वीकार करने के लिए दिया जाता है। हमारा सबकुछ परमेश्वर का है। इसलिए अपनी कमाई का दसवाँ अंश उसे देना इस बात का संकेत है। और बदले में परमेश्वर हमारे हृदय के रवैये को देखता है और हम जो दिया है उससे कहीं अधिक पाते हैं। परन्तु देने का अभिप्राय लेना नहीं होना चाहिए। हम परमेश्वर से अपने प्रेम और कृतज्ञता के कारण और इस स्वीकृति के कारण देते हैं कि जो उसने पहले ही हमें दिया है उसका केवल एक अंश ही उसे दे रहे हैं।

पाठ 9 पर टिप्पणियाँ

इस पाठ में जो घर के जीवन के विषय में है, दो महत्त्वपूर्ण पहलू हैं:

1) घर में अपने विश्वास के विरोध को सम्भालना, और
2) बच्चों का पालन-पोषण करना।

घर के जीवन के एक और महत्त्वपूर्ण पहलू पति पत्नी का सम्बंध है। हालाँकि मुख्य पाठ में इसे नहीं सिखाया गया है, इन लेखों में विवाह सम्बंध की कुछ महत्त्वपूर्ण बातें सिखाई गई हैं।

घर में सम्बंध:

बाइबल मसीही को सब के साथ अच्छे सम्बंध रखना सिखाती है। फिर भी, जब घर में एक व्यक्ति मसीही है और दूसरे नहीं हैं, तो झगड़े बड़ी सरलता से हो सकते हैं। उन परिस्थितियों में मसीही के लिए आवश्यक है कि वह उसके विश्वास के लिए खड़ा रहे, अपनी गवाही बनाए रखे और समझौता न करे। उसी समय, परिवार के दूसरे सदस्यों की ओर उसका रवैया श्रेष्ठता या विरोध का नहीं बल्कि प्रेम का होना चाहिए। और, अपने विश्वास की श्रेष्ठता के विषय में बहस कुछ अच्छा करने से अधिक हानि पहुँचाती है। बेहतर होगा यदि मसीही का जीवन केवल शब्दों के बजाय मसीही विश्वास की महानता की गवाही देता है।

माता-पिता - बच्चा सम्बंध:

इफिसियों 6 में बच्चों को उनके माता-पिता का प्रभु में आदर करने को कहा गया है, इस लिए बच्चों को उनके माता-पिता का कहना मानना और उनका आदर करना चाहिए। केवल एक अपवाद है यदि माता-पिता उनसे कुछ ऐसा करने को कहते हैं जो पाप है और प्रभु की इच्छा के विरुद्ध है।

बदले में माता-पिता को उनके बच्चों से प्रेम करना और उनकी देखभाल करनी है। माता-पिता को समझना है कि वे उनके बच्चों के भण्डारी हैं और परमेश्वर की ओर उत्तरदायी हैं। उन्हें उनसे प्रेम करना है, उनकी देखभाल करनी है, उनकी रक्षा करनी है और उनका सही विकास करना है ताकि प्रभावशाली और परिपक्व लोग बनने के लिए उन्हें सही बुनियाद मिल सके, और जब वे बड़े हों तो मसीह की ओर एक स्पष्ट समपर्ण हो।

पालन-पोषण की प्रक्रिया के एक भाग के रूप में, माता-पिता को उनके बच्चों का अनुशासन करना होता है परन्तु ऐसा कभी भी क्रोध और परेशानी में नहीं किया जाना चाहिए। अनुशासन का उद्देश्य बच्चे का विकास है। और अनुशासन उस सम्पूर्ण प्रशिक्षण का एक भाग है जो एक बच्चा माता-पिता से पाता है।

<u>पति - पत्नी का सम्बंध:</u>
बाइबल का मुख्य वचन जो इस सम्बंध की व्याख्या करता है इफिसियों 5:21-33 है। इन वचनों से जो मुख्य बातें हम सीख सकते हैं वे हैं:

1) पतियों को उनकी पत्नियों से प्रेम करना है जैसा मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया और अपने आप को उसके लिए दे दिया।
2) पतियों को उनकी पत्नियों से वैसे प्रेम करना है जैसे वे उनके शरीरों से करते हैं क्योंकि पति और पत्नी 'एक' हैं।
3) पत्नियों को उनके पतियों के अधीन होना है।

बाइबल बड़ी स्पष्टता से सिखाती है कि मसीह में सब बराबर हैं: नर, नारी, गुलाम, स्वतंत्र...। स्त्रियाँ कम कीमत की नहीं हैं। फिर भी, परिवार के सम्बंध में, यह पति होता है जो प्रमुख होता है। इसी कारण से पत्नी को पति के अधीन होना होता है।
जब पति अपनी पत्नी से प्रेम करता है और उसके लिए बलिदान होने के लिए इच्छुक होता है, तब पत्नी बड़ी इच्छा से उसके पति के अधीन होगी यह जानते हुए कि पति के हृदय में उसके लिए भला ही है। पत्नी का पति के अधीन होना वैसा ही है जैसा कलीसिया मसीह के अधीन होती है - स्वेच्छा से और पूरे भरोसे के साथ कि मसीह उसकी दुल्हन, कलीसिया की देखभाल करेगा।
विवाह के सम्बंध पर दूसरा महत्त्वपूर्ण वचन उत्पत्ति 2 है। खुलकर बातचीत करना, भरोसा, स्नेह प्रकट करना और विवाह का शारीरिक पहलू इन सब बातों का यहाँ उल्लेख है।

पाठ 10 पर लेख

इस पाठ में तीन विषय हैं: भोजन से पहले प्रार्थना, खाना और पीना और उपवास। इन तीनों विषयों को यहाँ उपयुक्त रूप से सिखाया गया है। यह लेख कुछ सुधार और स्पष्टीकरण देता है। 1 कुरिं. 10:23-24.

भाग आ में खाने और पीने के विषय में, यह विचार करना उपयोगी होगा कि परमेश्वर प्रबंधक है और कि वह हमारी आवश्यकताओं को पूरा करेगा। प्रश्न 3 आवश्यकताओं और इच्छाओं में अन्तर दिखाता है और कि परमेश्वर हमारी आवश्यकताओं को पूरा करता है और जरूरी नहीं वह हमारी इच्छाओं को पूरा करे।

भाग इ में जो उपवास के विषय में है बाइबल के विभिन्न प्रकार के उपवासों के विषय में नहीं बताया गया है - एक आँशिक उपवास, एक उपवास जहाँ ठोस भोजन नहीं खाया जाता है, एक उपवास जहाँ व्यक्ति ठोस और द्रव दोनों से परहेज करता है, एक भोजन का उपवास, एक दिन का उपवास, कुछ दिनों के लिए उपवास, विस्तारित उपवास। बाइबल में सबसे लम्बी अवधि का उपवास जिसका जिक्र है 40 दिन का उपवास है। उपवास में, एक उपयोगी दृष्टिकोण से, कम अवधि के उपवासों से आरम्भ करके अवधि बढ़ाना बुद्धिमानी होगा।

यशायाह 58 जिसे इस भाग में विस्तार से उपयोग किया गया है, सिखाता है कि उपवास के अलावा, हमारे जीवनों को धर्मी होना आवश्यक है और हमारी प्रार्थना के सुने जाने की शर्तों में हमें ऐसे जीवन जीना है जो दूसरों का विचार करते और परवाह करते हैं। केवल उपवास काफी नहीं।

पाठ 11 पर टिप्पणियाँ

इस पाठ में स्वच्छता, कपड़े और बातचीत की बात की गई है।

1. नोट: इस प्रश्न का उत्तर 1 कुरिं. 3:17 देता है। फिर भी, इस आयत का अर्थ कि हमारे शरीर परमेश्वर के मंदिर हैं जैसा 1 कुरिं. 6:20 में है गलत अर्थ है। 1 कुरिं. 3:17 में, परमेश्वर का मंदिर स्थानीय कलीसिया को कहा गया है।
2. हमें पवित्र होना है क्योंकि हमारा परमेश्वर पवित्र है। फिर भी, प्रश्न का तात्पर्य है कि परमेश्वर चाहता है हम शारीरिक रूप से शुद्ध हों क्योंकि वह एक पवित्र परमेश्वर है। यह एक गलत अर्थ है। हमें हमारे परमेश्वर की पवित्रता के कारण पवित्र और 'शुद्ध - पवित्र जीवन द्वारा आत्मिक रूप से शुद्ध' होने के लिए बुलाया गया है।

भाग अ पर सामान्य टिप्पणियाँ:

शारीरिक स्वच्छता महत्त्वपूर्ण है। हमारे शरीर पवित्र आत्मा के मंदिर हैं और हमें अपने शरीरों से परमेश्वर का आदर करने को कहा गया है। अपने शरीरों से परमेश्वर का आदर करने का एक तरीका इनकी देखभाल करना और इनकी सेहत का ध्यान रखना है। बाइबल अकसर एक शुद्ध और पवित्र जीवन के प्रतीक के रूप में शारीरिक शुद्धता को इस्तेमाल करती है, और इस प्रकार मसीह के लहू के द्वारा आत्मिक रूप से शुद्ध होने के महत्त्व के बारे में अपने आपको याद दिलाना और एक शुद्ध जीवन जीना जो धार्मिक और शुद्ध है उचित होगा।

भाग आ पर सामान्य टिप्पणियाँ:

एक व्यक्ति जो कपड़े पहनता है महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि वे दूसरों की नज़रों में हमारी एक तस्वीर पेश करते हैं। एक गंदे कपड़े पहने हुए व्यक्ति को शराबी समझा जाएगा - उसके कपड़े गंदे होने का कारण। पोलीस वाले के कपड़े पहने हुए व्यक्ति को पोलीसवाला ही समझा जाएगा। नए नियम में, बाइबल मसीहियों के लिए कोई विशेष प्रकार के कपड़ों की फर्माइश नहीं करती। कुछ सामान्य सिद्धान्त हैं:

- हम मसीह के राजदूत हैं इसलिए हमें एक साफ-सुथरा रूप पेश करना चाहिए।
- हमें संसार के फैशनों के बन्धन में नहीं बन्धना है क्योंकि फैशन हमारे जीवनों में एक बन्धन और एक मूर्ति बन सकता है।
- जो रुपया-पैसा हम कपड़ों पर खर्च करते हैं फिज़ूलखर्ची नहीं होना चाहिए।
- पुरुषों और स्त्रियों को शालीनता के साथ कपड़े पहनने चाहिए जिससे उनके पहनावे कामुकता पैदा न करें।
- परमेश्वर ने पुरुषों और स्त्रियों को भिन्न बनाया है। बाइबल चाहती है कि उनके कपड़ों में यह भिन्नता दिखाई दे। एक पुरुष का स्त्री के समान दिखना या एक स्त्री का एक पुरुष के समान दिखना सही नहीं है। फिर भी, आज के संसार में, पुरुषों और स्त्रियों में कपड़ों और बालों में काफी समानता है। हमें इसमें न्याय करने में कर्मकाण्डवादी नहीं होना है क्योंकि बाइबल वास्तव में बाहरी नहीं परन्तु हृदय के रवैये के विरुद्ध है - एक पुरुष का एक स्त्री की भूमिका लेने की इच्छा और उलटे।

भाग इ पर टिप्पणियाँ:

परमेश्वर का नाम यों ही या बिना गम्भीरता के नहीं लेना चाहिए। 'हे परमेश्वर', 'हे प्रभु', 'यीशु' जैसे शब्द हमारी सामान्य बातचीत में नहीं लिए जाने चाहिए।

पाठ 12 पर टिप्पणियाँ

हमारी नागरिकता स्वर्ग में है और इसका उपयोगी तात्पर्य है एक स्वार्थी जीवन जीने के सांसारिक मूल्यों से दूर होना और परमेश्वर को प्रसन्न करनेवाला और दूसरों को आशीष होनेवाला जीवन जीना।
इस पाठ के अध्ययन के लिए दूसरे संदर्भ हैं: इफि. 6:5-9; दानि. 6:1-5।

पाठ 13 पर टिप्पणियाँ

यह पाठ बाइबल की इस महत्त्वपूर्ण सच्चाई को प्रकट करता है कि हमें अपनी जीविका कमानी चाहिए। कि परमेश्वर ने स्तर निर्धारित किए हैं कि हमें अपने काम-धंधे की जिम्मेवारियों को कैसे निभाना है। कि जिस प्रकार हम अपने अधिकारियों और अधीनस्तों के साथ व्यवहार करते हैं परमेश्वर के वचन के अनुसार होना चाहिए।

पाठ 15 पर टिप्पणियाँ

इस पाठ में तीन विषयों की बात की गई है: मसीहियों में मुकदमें और झगड़े, शत्रु और सताव। भाग अ जो मुकदमों और झगड़ों के विषय में है दो उपविषयों की बात भी करता है: 1) मुकदमें और 2) एक मसीही भाई से निपटना जो आपके विरुद्ध पाप करता है। प्रश्न 1 और 2 मुकदमों के विषय में हैं जबकि प्रश्न 3 और 10 एक भाई से निपटने के विषय में हैं जो आपके विरुद्ध पाप करता है।

इसमें अन्तर लाने की आवश्यकता है जैसे कि एक झगड़े में होता है, झगड़े का हर पक्ष सोचता है कि वह सही है और इसलिए झगड़े का न्याय करने के लिए तीसरे पक्ष की आवश्यकता पड़ती है। परन्तु एक भाई के पाप करने के विषय में, बात भाई को पश्चाताप में लाने और उसे मसीह के साथ सम्बंध में और उस भाई के साथ सम्बंध में लौटाने की है जिसके विरुद्ध उसने पाप किया था।

1 पतरस 2:23 में दिए शत्रु से निपटने के तीन कदम बहुत व्यावहारिक हैं और साथ में एक मसीही के अनुकरण के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण भी हैं। दुर्भाग्यवश, जब विरोध होता है तब हमारी पलट वार करने की आदत ऐसी होती है कि हम अपने को रोक नहीं पाते। पलट वार करने पर हमें याद रखना है कि हम अपने स्वामी के कदमों पर नहीं चल रहे हैं!

पाठ 16 पर टिप्पणियाँ

<u>मूर्तिपूजा पर टिप्पणियाँ</u>

स्वर्ग और पृथ्वी के सिरजनहार परमेश्वर ने मनुष्यों को सदा उससे प्रेम करने, उसकी आराधना करने और उसका आनन्द लेने के लिए बनाया था। हमारे सृष्टिकर्त्ता के रूप में केवल वही हमारी भक्ति और आराधना के योग्य है। क्योंकि परमेश्वर आत्मा है, अर्थात् एक आत्मा-प्राणी है (यूहन्ना 4:24), तो उसकी एक मूर्ति बनाना मूर्खता होगा। बाइबल हमें सिखाती है कि परमेश्वर हाथों से बनाए मंदिरों में नहीं रहता है (प्रेरितों 17:24), न ही ईश्वर सोने, या चाँदी, या पत्थर, कला का चित्रण और मनुष्य की कल्पना है (आय. 29)।

केवल परमेश्वर ही हमारे जीवनों में पहले स्थान का हकदार है। कोई भी चीज जो परमेश्वर का स्थान लेती है मूर्ति कहलाती है। वैसे तो मूर्तियाँ वो चीजें हैं जिनकी लोग आराधना करते हैं (रोमियों 1:18-32), परन्तु मूर्ति रुपया-पैसा, खेल-कूद, प्रतिष्ठा, या अपने पति/पत्नी या बच्चे भी हो सकते हैं! हमें समझना चाहिए कि हमारे जीवनों में मूर्तियाँ लाना, अपने प्रभु यीशु मसीह के हमारे प्रेम और सेवा से दूर ले जाना शैतान की चाल है!

मूर्तिपूजा की जड़ें प्राचीन धर्मों में हैं जहाँ गुप्त विधियाँ और चीजों की उपासना की जाती थी, जिससे लोगों के जीवनों में शैतान के कार्य के लिए द्वार खुलते थे।

परमेश्वर अपने वचन में हमें चेतावनी देता है कि हम न ही मूर्तियों को रखें न ही उनकी आराधना करें, क्योंकि:
- मूर्तियों के पीछे दुष्टात्माएं होती हैं (व्यवस्था. 32:16-17; भजन 106:35-38; 1 कुरिं. 10:20)।
- आप परमेश्वर का निरादर और आज्ञोल्लंघन करते हो, और उसका शाप और न्याय पाते हो (निर्गमन 20:3-5)।
- तुम और तुम्हारा परिवार शापित हो जाता है (व्यवस्था. 7:25-26)

इसके अतिरिक्त मूर्तिपूजा की मूर्खता यशायाह 44:9-20 में विस्तार से बताई गई है। इसलिए व्यक्ति को इससे दूर रहना चाहिए! (1 कुरिं. 10:14; 1 यूहन्ना 5:21)

<u>जादू-टोना पर टिप्पणियाँ</u>

अदन में मनुष्य की अवज्ञा से लेकर, विद्रोही मनुष्य "परमेश्वर के तुल्य" होने का प्रयास कर रहा है (उत्प. 3:5)। परमेश्वर के अधीन होने के बावजूद, मनुष्य दूसरे देवताओं की खोज में रहा है जिन्हें वह अपने वश में करके शक्तिशाली बन सकता है।

परमेश्वर के अधिकार के विरुद्ध विद्रोह जादू-टोने का पाप है (1 शमूएल 15:23)। व्यक्ति खुद अधिकार बन जाता है और परमेश्वर की भूमिका ले लेता है। वैसे भी जादू-टोना गूढ़ के सम्पूर्ण क्षेत्र का एक एक अंश ही है, जिसमें:
- मनुष्य अलौकिक साधनों के द्वारा दूसरों को छल से वश में करने की कोशिश करता है।
- मनुष्य देवताओं को वश में करने की कोशिश करता है।

गूढ़ वे लोग करते हैं जो: शकुन-विचारते, जादू-टोना करते, लक्षण देखते हैं, ओझा, मंत्र पढ़ते हैं, प्रेतात्मवादी या जो मृतकों को पुकारता है (व्यवस्था. 18:10-11)। बाइबल व्यवस्था. 18:12 में कहती है, "क्योंकि जितने ऐसे ऐसे काम करते हैं वे सब यहोवा के सम्मुख घृणित हैं।" इसलिए आओ हम शैतान के अलौकिक नकली कार्यों से धोखा न खाएँ, परन्तु परमेश्वर के सन्तान होने के नाते हमें परमेश्वर को खोजना है, उसके वचन में बने रहना और उसके आत्मा के चलाए चलना है!

अपने जीवन को गूढ़ के लिए कोलने से बन्धन और अन्त में विनाश लाता है। लौकप्रिय द्वार जिनमें से शैतान लोगों को बन्धन में लाता है: हस्तरेखा शास्त्र, प्रश्न-फलक, जन्मपत्री, जादू, जादू-टोना, सम्मोहन विद्या, तावीज, नशीले पदार्थ, लैंगिक पथभ्रष्ट, तीव्र रॉक संगीत, आदि हैं।

परमेश्वर की स्तुति हो, इन बन्धनों से यीशु के द्वारा छुटकारा है!

शाप और गूढ़ की जड़ें तोड़ी और काटी जा सकती हैं (याकूब 4:7):
- यीशु मसीह में विश्वास घोषित करके और अपने जीवन पर उसका अधिकार स्वीकार करके।
- गूढ़ के पापों को मानकर और उनसे मन फिराकर।
- दूर होने की आज्ञा के द्वारा शैतान और अन्धकार की शक्तियों को त्याग कर।
- छुटकारे की प्रार्थना और पवित्र आत्मा की सेवा के द्वारा। इसके बाद परमेश्वर के वचन की आज्ञा में चलना, उसके सत्य में मजबूत होना और शत्रु का सामना करते रहना महत्त्वपूर्ण है।

पाठ 19 पर टिप्पणियाँ

मृत्यु को बाइबल में चार विभिन्न तरीकों से इस्तेमाल किया गया है।
1) शारीरिक मृत्यु - शरीर के सारे कार्य बंद हो जाते हैं।
2) आत्मिक मृत्यु - मनुष्य परमेश्वर से दूर हो जाता है, परमेश्वर की ओर कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाता, परमेश्वर का विरोध करता है। यह पाप से होता है (उत्प. 2:17; रोमियों 6:23; इफि. 2:1)।
3) दूसरी मृत्यु - परमेश्वर से सदा के लिए अलग हो जाना जो अधर्मी की नियती है। प्रकाशित. 2:11; 20:6, 14-15; 21:8
4) पाप के लिए मरना - यह विश्वासी का पाप की पकड़ से स्वतंत्र होना है। रोमियों 6:4, 6, 11

शारीरिक और आत्मिक मृत्यु पाप का परिणाम है। जैसे कि सबने पाप किया है, मृत्यु सबका हिस्सा है। रोमियों 3:23; 5:12; 6:23; इब्रा. 9:27

मसीह ने पाप और मृत्यु पर विजय प्राप्त की है:
1) इसकी शक्ति को निकाल दिया है। रोमियों 6:9; कुलु. 1:16; 2 तीमु. 1:10
2) इसके कैदियों को स्वतंत्र कर दिया है। रोमियों 8:2, 38-39; इब्रानियों 2:14-15
3) उसके पुनरागमन के द्वारा इसे पूरी तरह नष्ट कर देगा। 1 कुरिं. 15:23-26, 54-55; प्रकाशित. 20:14; 21:4

विश्वासी के लिए मृत्यु इस जीवन से निकाल कर प्रभु की उपस्थिति में पहुँचना है। लूका 23:43, 46; 2 कुरिं. 5:8; फिलि. 1:23

पुनरुत्थान के द्वारा, विश्वासी अमर हो जाता है। 1 कुरिं. 15:52-54

प्रार्थना का सामर्थ्य

अध्याय 1 - परमेश्वर की खोज

तुम मुझे ढूँढ़ोगे और पाओगे भीस क्योंकि तुम अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास आओगे। (यिर्मयाह 29:13)

1. जो प्रभु को खोजते हैं, प्रभु के साथ उनकी क्या वाचा है ?

   यिर्मयाह 29:12-14 ....

   यशायाह 55:6-7 ....

   याकूब 4:8-9 ....

2. परमेश्वर के निकट

   अ. याकूब की पत्री हमें कौन-सा एक मार्ग प्रभु के निकट आने को बताती है ? याकूब (4:8)
   ....

   ब. याकूब के अनुसार दूसरा रास्ता याकूब 4:10 ? ....

   स. याकूब 1:8 में 'दुचित्ता व्यक्ति' शब्द से आप क्या समझते हैं ? (भजन 86:11 पढ़ें)
   ....

   ङ याकूब के अनुसार गलत मकसद से प्रार्थना करना क्या है ? (याकूब 4:3)
   ....

   इ) यूहन्ना 6:26 में लोगों का यीशु को ढूँढ़ने का गलत मकसद क्या था ?
   ....

3. प्रभु को खोजने से भजन 34:4 में किस समस्या का समाधान हुआ ?
   ....

4. यिर्मयाह 29:13 के अनुसार प्रभु को हम किस तरह खोजें ?
   ....

5. आमोस 4:6-12
   प्रभु ने किन-किन परिस्थितियों को इस्तेमाल करके लोगों को अपने पास लौटने को बोला ?
   ....

6. भजन 42:1 में लेखक अपनी प्रभु के प्रति इच्छा की तुलना किस से करता है ?
   ....

   प्रभु अपने मित्रों से क्या वायदा करता है ? (भजन 73:23,24; भजन 91:14-16)
   ....

7. आमोस 5:6 और भजन 69:32 में प्रभु अपने खोजनेवालों को क्या देता है ?
....

8. दानिय्येल ने खुली खिड़की से प्रभु को खोजा। वह परमेश्वर की खोज न बन्द करते हुए कौन सा दण्ड भरने के लिए तैयार था ? (दानिय्येल 6:7-10) ....

9. 2 इतिहास 15

अ. इसमें यहूदा के लोग किन समस्याओं का सामना करते थे ?
....

ब. उन्होंने प्रभु को खोजने की पुकार को किस तरह सुना ? ....

स. राजा आसा ने प्रभु के बुलावे के प्रति क्या प्रतिक्रिया की ? (आ. 8-9)
....

ङ जब लोगों ने प्रभु को ढूँढ़ा तो क्या-क्या किया ? (आ. 10-18)

1) ....

2) ....

3) ....

4) ....

5) ....

इ) प्रभु ने उसे खोजने वालों को किस प्रकार से आशीष दी ? (आ. 15)
....

फ) जब राजा आसा ने प्रभु को खोजना छोड़ दिया तो क्या किया ? (2 इतिहास 16:2)
....

ज) उसके परिणामस्वरूप उसे क्या हुआ ? (आ. 7-9)
....

10. प्रभु यीशु के नाम में प्रार्थना करने का क्या अर्थ है ? (यूहन्ना 14:13)
....

11. भजन 37:4 के अनुसार प्रभु के वचन को पूरा करने के लिए आप को क्या करना है ?
....

12. मत्ती 7:7 में यीशु प्रार्थना के विषय में बताते समय "ढूँढ़ो तो तुम पाओगे" का क्या अर्थ बताते हैं ?
....

13. इब्रानियों 11 के अनुसार प्रभु अपने खोजने वालों को "प्रतिफल" देता है (आयत 6), उसका उदाहरण दें ?

....

....

14. भजन संहिता रचनेवाले ने भजन 139:23,24 में किस प्रकार पश्चाताप की प्रार्थना की ?

....

15. परमेश्वर के अनुसार अपने देश के लिए हम कौन सी चार बातें करें ? (2 इतिहास 6:14)

अ. .... ब. .... स. .... ङ ....

इसके प्रतिउत्तर में, परमेश्वर क्या तीन बातें करने की प्रतिज्ञा करता है ?

अ. .... ब. .... स. .... ङ ....

पाठ करो : 1) तुम प्रभु की खोज करो — अ) इब्रानियों 11:6 ब) यिर्मयाह 29:13

2) परमेश्वर तुम्हारा परिक्षण करे — अ) भजन 139:23-24 ब) भजन 26:2

व्यक्तिगत प्रयोग और चर्चा के लिए

1. प्रभु की उपस्थिति में रहने के लिए आपको क्या अभ्यास करना है ? (आदत डालनी है) आप ऊँचे दर्जे की घनिष्ठता किस प्रकार पा सकते हैं ? आप अब्राहम, मूसा, एलिय्याह को याद करें जिन्होंने प्रभु के साथ मित्र की तरह बात की, क्या आप प्रभु से इस प्रकार बातें करते हैं ? या (आपका सम्बंध प्रभु से इतना गहरा है।)
2. क्या यह सच है कि जब लोग आपस में प्रेम रखते हैं तो वे परस्पर छोटी-छोटी बातों को बाँटते हैं ? क्या आपको लगता है कुछ छोटी-छोटी बातें प्रभु को बताने के लिए बहुत छोटी है ? आप एक दिन में प्रभु के साथ कितनी बार बात करते हैं ? प्रभु को एक प्रेम पत्र लिखो कि आप प्रभु से कितना और क्यों प्रेम करते हैं। "मैं, पिता (या यीशु) तुझ से प्रेम करता हूँ, क्योंकि ....।"
3. अपने जीवन में आप किस समय पर प्रभु से तर्क या वाद-विवाद करते हैं ? क्या कुछ ऐसी चीजें या बातें हैं जिनको आपने प्रभु को नहीं सौंपा है (दिया है) ? क्या कोई ऐसा व्यक्ति या परिस्थिति है जिसे आप क्षमा नहीं कर पाते हैं ?
4. क्या आप प्रार्थना करने के बाद प्रभु से अगुआई की आशा करते हैं या प्रार्थना करने के बाद आप अपने विचार उस प्रार्थना के बारे में बदल लेते हैं ?
5. प्रभु यीशु के कारण आप में क्या बदलाव आया जो आपको अनुभव हुआ हो ?
6. प्रार्थनाशील व्यक्ति होने के लिए एक समय सारणी बनाओ। लेकिन प्रभु से हर समय बात करो, न केवल निर्धारित समय पर ही।
7. यहाँ कुछ ऐसा है जो आप को सचमुच आशीषित करेगा। प्रार्थना की एक नोटबुक रखें। प्रार्थनाओं के उत्तरों को लिखें और जिन से प्रभु आप से बात करता है उन बातों को लिखें। बाद में आप उसे पढ़ें देखें प्रभु ने आप की प्रार्थना का किस प्रकार उत्तर दिया है।
8. प्रभु की सृष्टि के लिए धन्यवाद देते हुए, जैसे फूलों, हवा, समुद्र, प्रेम के दान के लिए, मित्रों के लिए, खुशी के लिए प्रभु की महिमा करें।

परमेश्वर की खोज के लिए प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता, हमारी सहायता करें कि हम आपको पूरे पवित्र मन से आप को खोजें। हमें आप के पुत्र यीशु में रखें ताकि हम आपकी इच्छा के केन्द्र में रहें। हम अपने पापों को यीशु को दे दें और जानें कि आप हमें अपने बच्चे बना कर स्वीकारते हैं। हमें हमारे हृदय को दिखाएँ और हमारे विचारों, धारणाओं (व्यवहार) को दिखाओ जो नम्र या टूटा हुआ न हो। और ऐसा विचार जो

आपके वचन के अनुसार न हो। प्रभु जब तक हम पश्चाताप के आँसू और आपसे घनिष्ठ सम्बंध स्थापित न करें तब तक हम सन्तुष्ट न हों।
हम यह जानते हैं कि आपको पाना मुश्किल नहीं है। आप हमारा इन्तज़ार करते हैं। प्रभु जैसे हम प्रभु यीशु के लहू के द्वारा आपके अति पवित्र स्थान में प्रवेश करते हैं। जहाँ प्रभु यीशु हमें अपने साथ सिंहासन में बैठाने के लिए बुलाता है। प्रभु यीशु आओ और आपका निवास हमारे साथ हो। हम आप की उपस्थिति को बुलाते हैं। प्रभु हम में नया समर्पण और नई वचनबद्धता दो, हमें प्रार्थना करना सिखाओ ताकि हमारी प्रार्थनाएँ मशीनी धार्मिक पद्धति न बनें जो कि मानवीय हैं बल्कि आपके हृदय की इच्छा के अनुसार हो आपके पवित्र आत्मा से प्रेरित हों। आमीन।

अध्याय 2 – सहमति की प्रार्थना

"फिर मैं तुम से कहता हूँ, यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिए एक मन होकर उसे माँगें, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है, उनके लिए हो जाएगी।" (मत्ती 18:19)

1. **भजन** 133 के अनुसार भाई लोग आपस में मिले रहने की आशीष को किस चीज से तुलना की है ?
   अ. ....
   ब. ....

2. (**यहोशू** 7:1–21 **देखो**) आकान के किस पाप के कारण इस्राएलियों की एकता टूटी ?
   ....
   इस पाप के कारण सारे देश को क्या हुआ ?
   ....
   यहोशू ने किस प्रकार पाप का निवारण किया और एकता फिर बनाई ?
   ....

3. **प्रेरितों के काम** 5 में हनन्याह और सफीरा के किस पाप के कारण कलीसिया की एकता पर बुरा असर पड़ा ?
   ....
   परमेश्वर ने सम्भावित फूट से कलीसिया को किस प्रकार साफ किया ?
   ....

4. **इफिसियों** 4:1–3 में प्रेरित कलीसिया को क्या बनाए रखने को उत्साहित करता है ?
   ....
   पौलुस कलीसिया की एकता बनाए रखने के लिए क्या रास्ता बताता है ?
   इफिसियों 4:25 ....
   इफिसियों 4:26 ....
   आ. 28 ....
   आ. 31 ....
   आ. 32 ....

5. **प्रेरितों के काम** पुस्तक 1:14 में शुरू की कलीसिया की प्रार्थना का वर्णन किस प्रकार करती है ?
   ....
   प्रेरितों 2:42-46 में हमें कलीसिया की एकता के क्या चिन्ह दिखाई देते हैं ? (कम से कम चार)

....
....

6. आराधना सभा के दौरान एकता को बढ़ाए और बनाए रखने में क्या कार्य होता है ताकि कलीसिया पूरी सहमित के साथ प्रार्थना कर सके ? ....
....

7. आप किन व्यक्तियों के साथ मिलकर सहमति की प्रार्थना कर सकते हैं (उनके नाम लिखें)
   अ. अपने घर में ? ....
   ब. मित्र या प्रार्थना सहभागी ? ....
   स. अध्ययन समूह ? ....
   ङ कलीसिया के अगुवे ? ....
   इ) कलीसिया के सदस्य ? ....

8. किस तरह का व्यवहार एक समूह में प्रार्थना की सामर्थ्य के रास्ते में रुकावट डालता है ?
   अ. यहोशू 7:11-12 ....
   ब. मत्ती 17:19-20 ....
   स. (अन्य) ....

9. वास्तविक एकता के लिए हमें किन क्षेत्रों में सहमति होनी जरूरी है ?
....

10. उदाहरण सहित बताएँ कि किस प्रकार अनुभव, विश्वास, आत्मिक दानों के द्वारा समूह में प्रभु की सामर्थ्य कार्य करती है।
....
....

11. **प्रेरितों** 4:24–32 में, पहली कलीसिया मिलकर प्रार्थना करती थी ?
   अ. उनकी प्रार्थना के शब्दों का उद्गार (को कहाँ से लिया) क्या था ?
   ....
   ब. उन्होंने किन दो विशिष्ठ बातों को माँगा ?
   ....
   स. प्रभु ने किस प्रकार से तुरन्त अपनी सामर्थ्य को दिखाया ?
   ....
   ङ वचन 32 में सामूहिक प्रार्थना के विषय में क्या महत्त्वपूर्ण बात है ?
   ....

12. **प्रेरितों** 13:1–6 में, सामूहिक आराधना के समय क्या हुआ ?
   अ. आयत 1: उपस्थिति .... और ....
   ब. आयत 2: उनका प्रार्थना करने का तरीका ....
   स. आयत 3: उनसे किसने बात की ? ....
   ङ आयत 4: परिणाम ....

पाठ करो:	1) **प्रार्थना में सहमति**	**अ) मत्ती** 18:19	**ब) याकूब** 5:16
	2) **एकता में चलना**	**अ) इफिसियों** 4:1–3	**ब)** 1 **यूहन्ना** 1:7

व्यक्तिगत उपयोग और चर्चा के लिए

1. इस सप्ताह आप अपनी प्रार्थना को किस प्रकार शक्तिशाली बना सकते हैं ? क्या आपके साथ कोई प्रार्थना करनेवाला सहभागी है ? क्या परिवारिक प्रार्थना का समय निर्धारित है ?
2. आप किस प्रकार से प्रार्थना के द्वारा अपना प्रेम दूसरों के प्रति दिखा सकते हैं ? आप किस प्रकार से प्रार्थना के द्वारा आपसी मतभेद को और तर्क (मसीही के साथ) दूर कर सकते हैं ?
3. अपने प्रार्थना समूह में किसी महत्त्वपूर्ण विषय के लिए एक से अधिक लोगों को प्रार्थना करने दें, सहमति दर्शाएँ, दूसरे लोगों के साथ मिलकर प्रभु से उस विषय में अगुआी माँगें।
4. क्या आपको किसी समय पर किसी के लिए उनकी परिस्थिति न जानते हुए भी, प्रार्थना करूँ ऐसा लगा है ?
5. क्या आप, जिस प्रार्थना का उत्तर मिला है उनकी गवाही दे सकते हैं ? क्या आप दूसरों को बता सकते हैं कि गवाही सुनने से आप को सामर्थ्य और प्रोत्साहन मिला है ?
6. कलीसिया को मुक्सान पहुँचाने की शैतान की रणनीतियाँ क्या-क्या हैं ? वह "फूट डालो, राज्य करो" रणनीति का किस प्रकार प्रयोग करता है ?

....

एकता द्वारा सामर्थ्य के लिए प्रार्थना

स्वर्गीय पिता, तू ने भजन संहिता वाले से घोषणी की कि देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें। (भजन 133)। प्रभु यीशु, तू ने प्रार्थना की कि जैसा तू, हे पिता, मुझ में है, और मैं तुझ में हूँ वैसे ही वे भी हम में हो जिससे संसार विश्वास करे कि तू ही ने मुझे भेजा है। (यूहन्ना 17:21)। तू ने हमें आज्ञा दी है कि हम आत्मा की एकता में, प्रेम में, विश्वास में बने रहें। (इफिसियों 4:13)। हम प्रार्थना करते हैं कि आपका वचन हमारे हृदयों को लेसर किरण की तरह छेद करके सभी विभाजनों को मिटा दें। जैसे कि स्वार्थ अह्म (निज मूल्याँकन) जैसी समस्याएँ हमें एक दूसरे के प्रति झुकने में बाधा बनती है और आपकी आशीष मिलने में बाधक होती है।

जैसा कि आप ने दो या ज्यादा लोगों की सहमति की प्रार्थना सुनने का वायदा किया है। हम माँगते हैं कि आप हमारे जीवन और प्रार्थना को सामर्थी बनाएँ, ताकि वे बातें जो आपके मन में हैं हमारी जुबाँ पर हों। हमारी प्रार्थनाओं से आपकी बहुतायत की आशीष हम हर प्रकार से पाएँ। प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन।

अध्याय 3 – स्तुति का सामर्थ्य

"हे धर्मियो, यहोवा के कारण जयजयकार करो। क्योंकि धर्मी लोगों को स्तुति करना शोभा देता है।" (भजन 33:1)

1. इन वचनों से बताएँ कि सृष्टि रचना का प्रभु का क्या उद्देश्य है ?
   अ) भजन 19:1-6
   ....
   ब) रोमियों 1:20
   ....
   स) भजन 100:1-3
   ....
   ड) भजन 103:22
   ....

इ) भजन 104 में प्रभु की सृष्टि के लिए किस प्रकार स्तुति की है ?

....

....

2. **भजन** 139:14–16

अ) हमें बनाने के लिए हम प्रभु की किस प्रकार स्तुति करते हैं ?

....

ब) उस स्तुति के द्वारा अपने शरीर की प्रशंसा किस प्रकार करते हैं ?

....

स) अपने शरीर और उसके किसी अंग उसके कार्यो का वर्णन करें जो आप सोचते हैं कि अदभुत रीति से बनाया है, क्यों ?

....

3. **फिलिप्पियों** 4:4 में पौलुस हम से आनन्दित रहने को कहता है, हमारी प्रार्थना में किस बात को होना चाहिए (आ. 6) ?

....

अ) पौलुस का फिलिप्पी की पहली यात्रा में किस प्रकार की यातना सहन करनी पड़ी ? (प्रेरितों 16:19-40)

....

ब) पौलुस और सिलास ने चोट और मार खाने के बावजूद क्या किया ?

....

स) स्तुति के फलस्वरूप क्या हुआ ?

....

ड) फिलिप्पियों को यह पत्री लिखते समय पौलुस कहाँ था ? (1:13)

....

इ) उसे क्या लगता था अपने विषय में ? (1:23)

....

फ) प्रभु की स्तुति करने, खुशी मनाने, धन्यवाद करने के बारे में हमें क्या कहता है ?

....

4) **सपन्याह** 3:17

अ) प्रभु हम से किस प्रकार आनन्दित होकर आनन्द प्रकट करता है ?

....

ब) प्रभु के प्रेम आनन्द की प्रतिक्रिया हमें किस प्रकार करनी है ?

....

5) **भजन** 98

अ) प्रभु की स्तुति के साथ उत्तर देने को क्या कहते हैं ?

....

ब) इस भजन में किस तरह की स्तुति को दर्शाया गया है ?

....

स) यह भजन हमारे जोर-जोर से स्तुति करने की तुलना किस से करता है ? (आ. 4,7)

....

6) अ) प्रभु के स्वर्ग का मुख्य कार्य क्या है ? (**भजन** 103:20,21; **यशायाह** 6:1–4; **प्रकाशित.** 5:11–13)

....

ब) प्रभु यीशु के जन्म के समय स्वर्गदूतों ने स्तुति में क्या गाया ? (लूका 2:14)

....

स) स्वर्गदूतों के विषय में जानकारी मिलने से आप को प्रभु की स्तुति करने में क्या उत्साहन मिलता है ?

....

7) अ) **इफिसियों** 5:20 में पौलुस हमें किन बातों के लिए धन्यवाद करने को कहता है ?

....

ब) इन वचनों के अनुसार हमें कब-कब धन्यवाद देना है ?

....

स) **रोमियों** 8:18,28 के वायदे से हमें विश्वास करने और आज्ञापालन करने में क्या सहायता मिलती है कि हम प्रत्येक परिस्थिति में हर एक समय धन्यवाद करें ?

....

8. 2 **इतिहास** 20:15-17

अ) प्रार्थना में प्रभु को खोजने वालों के लिए प्रभु का क्या वायदा है ?

....

ब) लोगों ने प्रभु की प्रतिज्ञाओं को प्राप्त करने के लिए किस प्रकार प्रतिउत्तर दिया ?

....

9. **भजन** 103:1-3 में स्तुति और चंगाई के बीच में क्या सम्बंध है ?

....

पाठ करो:	1) **आनन्द के साथ प्रभु की स्तुति करो**	**अ) भजन** 33:1
		ब) भजन 103:1-3
	2) **हमेशा और हर बात में प्रभु को धन्यवाद दो**	**अ) इफिसियों** 5:20-21
		ब) रोमियों 8:28

व्यक्तिगत प्रयोग और चर्चा के लिए

1. भजन संहिता से उन बातों को लिखें, जिन के लिए हमें प्रभु की स्तुति करनी है।
2. नीचे लिखित वाक्यों के साथ कुछ स्तुति की प्रार्थनाएँ लिखिए:

अ. प्रभु, तू **योग्य** है कि पाए (प्रकाशित. 5:12,13)

....

ब. हे प्रभु, मैं तुझे **वैभव** देता हूँ, क्योंकि तू

....

स. प्रभु, मैं तुझे **धन्य कहता** हूँ, क्योंकि तू ने मुझे दिया है

....

ड) प्रभु, मैं **स्वीकार करता** हूँ कि तू

....

इ) मैं यीशु के नामों की स्तुति करता हूँ क्योंकि वह

....

फ) प्रभु, तू सचमुच **अदभुत** है और मैं तुझ से **प्रेम करता** हूँ

....

ग) प्रभु यीशु मैं सदा तुझ में आनन्दित रहूँगा, क्योंकि

....

3. उन वाद्य यन्त्रों की सूची बनाएँ जो प्रभु ने आप को दी है कि उनसे आप प्रभु की स्तुति कर सकें।
4. आप का मन पसन्द स्तुति का भजन कौन सा है ? और क्यों ?
5. प्रभु की सिखाई प्रार्थना में पहले तीन वचनों में प्रभु को क्या आशीष दी है ?
6. आप एक समस्या का वर्णन करें जो आपके सामने है, इस समस्या से प्रभु को अवसर मिलता है कि वह आपको अपना प्रेम, सामर्थ्य और महिमा दिखाए।
7) आप प्रकाशितवाक्य 5:12 को एक स्तुति की प्रार्थना के रूप में याद करना चाहें, ऊँचे स्वर में खुशी से संगति लय में गाएँ।

स्तुति करने वाला बनने के लिए प्रार्थना

स्वर्गीय पिता, तू मुझे अपने प्रेम से, और जो कुछ भी तू मेरे लिए करता है, उस से आनन्दित करता है। मैं तेरी सेवा में खुद को समर्पित करता हूँ। मैं अपनी आवाज से, हाथों से दिमाग से और जो कुछ भी मैं हूँ, तेरी महिमा करूँगा। मैं तेरे नाम की स्तुति करूँगा। मेरी स्तुति करने की शक्ति को बढ़ाओ, और जब वह खत्म होती है, तो आप मुझे आत्मा दे कि उस से आप की स्तुति करूँ। तब उस आनन्द में मैं आप से सहायता माँगता हूँ कि मैं और अच्छी रीति से आप की स्तुति करूँ। मैं आप की महानता, प्रेम, सामर्थ्य के प्रवाह में बहना चाहता हूँ। मैं समुद्र की तरह गरज कर आप की स्तुति करूँ। (भजन 98:7)। मैं आप के सम्मान में मेम्ने की तरह कूदूँगा। (भजन 114:4)। मैं स्वर्गदूतों के साथ मिलकर आप की आपके नाम की महिमा गाऊँगा। प्रभु मेरी प्रयोग करो कि मैं आप को आशीष दूँ। आमीन।

अध्याय 4 – प्रार्थना का अभ्यास

हम रात दिन बहुत ही प्रार्थना करते रहते हैं कि तुम्हारा मुँह देखें, और तुम्हारे विश्वास की घटी पूरी करें। (1 थिस्सलुनीकियों 3:10)

1. प्रार्थना के लिए यीशु ने क्या उदाहरण दिए?

लूका 3:21-22 ....

लूका 5:16 ....

लूका 6:12 ....

लूका 9:18 ....

लूका 18:1-8 ....

2. हम निम्नलिखित वचनों में कलीसिया की प्रार्थना से क्या सीखते हैं ?

प्रेरितों 4:4-31 ....

प्रेरितों 12:5,12 ....

प्रेरितों 13:2-3 अ) .... ब) ....

स) .... ड) ....

3. कुरनेलियुस की प्रार्थना के साथ और क्या था जिसका प्रभु ने उत्तर दिया?

प्रेरितों 20:4,30,31 ....

4. न्यायियों 20:26 में लोगों ने प्रभु को अपनी व्यथा (दुख) कैसे सुनाई?

....

5. **निम्नलिखित वचनों में उपवास का क्या उद्देश्य था?**
2 शमूएल 12:16 ....
भजन 35:13 ....
एस्तेर 4:16 ....
दानिय्येल 9:3 ....
योएल 2:12 ....
प्रेरितों 14:23 ....

6. **ऊँचे स्वर में प्रार्थना करने का क्या कारण है?**
भजन 98:4-7 ....
1 राजा 8:52 ....

7. **कई बार मौन (चुप रहना) रह कर प्रार्थना करने का क्या कारण है?**
भजन 19:14 ....
1 शमूएल 1:13 ....
भजन 4:4 ....

8. **प्रार्थना करते समय हमें कैसे बैठना या खड़े रहना चाहिए?**
भजन 95:6 ....
1 तीमुथियुस 2:8 ....
इफिसियों 3:14 ....

9. **सुलेमान की प्रार्थना में उस की शारीरिक स्थिति का क्या महत्त्व है?** (1 **राजा** 8:54)
....

10. **भजन** 28:2 **के बारे में क्या?** ....

11. **भजन** 47:1 **में हम अपने हाथ आराधना में किन उद्देश्यों के लिए करते हैं?**
....

12. **भजन** 134:2 **में हम अपने हाथ किन उद्देश्यों के लिए उठाते हैं?**
....

13. **भजन** 50:15 **में से कौन से शब्द प्रार्थना करने के हमारे चार कारण व्यक्त करते हैं**
अ) परमेश्वर की आज्ञा ....

ब) हमारी जरूरत ....

स) परमेश्वर की प्रतिज्ञा ....

ड) हमारा धन्यवाद देना ....

14. **फिलिप्पियों 4:4-6 के अनुसार चिन्ता के बदले क्या तीन बातें दी गई हैं ?**

....

....

15. **यशायाह 65:24 के अनुसार प्रभु हमारे माँगने से पहले हमारी प्रार्थन का उत्तर कैसे देगा?**

....

16. **यूहन्ना 15:7 के अनुसार उत्तर मिली हुई प्रार्थना की शर्त क्या है?**

....

पाठ करो: 1) **प्रार्थना की उत्तर मिलने की शर्त अ) यूहन्ना** 15:7 **ब) फिलिप्पियों** 4:6-7
2) **प्रार्थना में मन** **अ) योएल** 2:12-13 **ब) भजन** 28:2

व्यक्तिगत मनन और विचार विनमय

1) प्रतिदिन प्रार्थना का समय निर्धारित करने में आपको किस समस्या का सामना करना पड़ता है ? आपको कौन सा समय उचित रहेगा, ऐसा लगता है ? आप क्या-क्या कार्य करते हैं कुछ कार्य (जैसे गाड़ी चलाना) प्रार्थना करते हुए कर सकते हैं ?
2) प्रार्थना न करने के पाप को उतार कर, प्रार्थना न करने वाली आत्मा को अधिकार से धमकाएँ।
3) जब कोई आप से (अपने लिए या किसी समस्या के लिए) प्रार्थना करने को कहता है तो क्या आप तुरन्त प्रार्थना करते हैं या बाद में अकेले में ? कौन सी प्रार्थना बेहतर है ?
4) आप अपनी आत्मिक उन्नति के लिए और हमेशा प्रार्थनामय बनने के लिए क्या-क्या कर सकते हैं ?
5) अपनी प्रार्थना में क्या आप स्तुति-आराधना, प्रभु की वाणी सुनना, मनन करना सब में समय बिताते हैं ?
6) लोगों के साथ उपवास प्रार्थना के कुछ अनुभव और प्रश्न (समस्या) बताओ।

प्रार्थनारहित होने के विरुद्ध प्रार्थना

प्रिय स्वर्गीय पिता, मैं अपने लिए और कलीसिया के लिए प्रार्थना न करने के पाप को स्वीकार करता हूँ। मैं प्रार्थना करता हूँ कि तू हमें प्रार्थना करने में बाधा लाने वाली आत्माओं से सुरक्षित और संभाले रख। मैं प्रार्थना करता हूँ कि तू मुझे और कलीसिया को पवित्र आत्मा से भर। मुझे सहायता कर कि मैं समय निर्धारित करके तुझ से बात करूँ और तेरी सुनूँ। मैं समय अलग करके तुझ से प्रार्थना करने के लिए समर्पित रहूँ, तुझ से बातचीत कर सकूँ (सम्बंध बना सकूँ)। प्रभु पवित्र आत्मा द्वारा सहायता कर कि मैं एक अच्छी प्रार्थना का जीवन व्यतीत करूँ। मेरा निर्देशन कर ताकि मैं अपनी और दूसरों की जरूरतों को तेरे सामने लाऊँ कि तू अपनी सामर्थ्य दिखाए। प्रभु यीशु के नाम में, आमीन।

अध्याय 5 – पवित्र आत्मा और सामर्थ्य

"मैं दाऊद के घराने और यरूशलेम के निवासियों पर अपना अनुग्रह करनेवाली और प्रार्थना सिखानेवाली आत्मा उण्डेलूँगा।" (जकर्याह 12:10)

1. **जकर्याह 12:10 में पवित्र आत्मा को क्या नाम दिया गया है?**

   ....

   इस नाम से हमारे जीवन में आत्मा का क्या कार्य है ?

   ....

2. **प्रार्थना द्वारा पवित्र आत्मा के किन-किन दानों को ढूँढ़ा और प्राप्त किया गया?**

अ. प्रेरितों 4:29-30 1. .... 2. ....
ब. प्रेरितों 19:6 1. .... 2. ....
स. 1 कुरिन्थियों 14:13 ....
ङ इफिसियों 3:16-17 1. ....
2. ....
3. ....

3. **इफिसियों** 5:18,19 आत्मा को किस परिस्थिति में प्राप्त किया जाता है, या जब लोगों को आत्मा मिलता है तब क्या होता है? ....
....

4. **प्रेरितों** 13:1-6 जब आत्मा ने मिशनरी भेजने को कहा तो तब अंताकिया की कलीसिया क्या कर रही थी?
....

5. 1 **कुरिन्थियों** 14 जब कोई पवित्र आत्मा में अन्य भाषा बोलता है, वह किस से बात कर रहा हता है, 14:2 के अनुसार? .... यह तथ्य अन्य भाषा के वरदान की प्रकृति के बारे में क्या बताता है? ....
क्या बोलनेवाले का मन (या कोई दूसरा) नैसर्गिक तौर पर उस संदेश को समझ सकता है?
....

6. 1 **कुरिन्थियों** 14:4 में अन्य भाषा में (आत्मा के साथ) प्रार्थना करने की क्या परिभाषा है?
....
आयतें 15-16 में जहाँ आत्मा लिखा है उसके अनुसार और क्या-क्या वह कर सकता है?

अ. .... ब. .... स. ....

7. जब विश्वासियों की सभा में अन्य भाषा के दान का प्रयोग किया जाता है, तो **और कौन से वरदानों का भी प्रयोग कलीसिया की उन्नति के लिए किया जाना चाहिए? (आयत** 5)
....

8. 14:4 **के अनुसार इस प्रकार की प्रार्थना करने का क्या उद्देश्य है?**
अ. ....

ब. यहूदा आयत 20 विश्वासियों को क्या करने की आज्ञा देता है? ....

स. जैसे ही हम प्रभु के दिए हुए स्वरों का उच्चारण करते हैं जिनको हम नहीं समझते तो प्रभु से क्या आशा करते हैं? ....

ङ इफिसियों 6:10-18 के अनुसार हमें आत्मा में कब प्रार्थना करनी है?
....

इ. इस वचन के दूसरे भाग में आत्मा से सम्बंधित और कितनी तरह की प्रार्थनाएँ दी गई हैं? (इस बाइबल अध्यय अध्याय 4 और 6 में बताया गया है)

....

9. **गलातियों** 5:22-23 पवित्र आत्मा का फल हमें प्रार्थना करने और प्रभु की प्रशंसा करने में किस प्रकार उत्साहित करता है ?

....

10. **रोमियों** 8:26 इस वचन के अनुसार कौन सी कमज़ोरी हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर आने से रोकती है ?

....

ब. क्या सीमाएँ कभी-कभी आपकी प्रार्थना में बाधा डाल सकती हैं ?

....

स. पवित्र आत्मा आपकी किस प्रकार इस कमज़ोरी पर विजय पाने में सहायता कर सकता है ?

....

ङ जब पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हैं किस प्रकार के विश्वास का होना आवश्यक है ?

....

इ. जब हमारा पवित्र आत्मा से सम्बंध होता है और हम "अब्बा, पिता" कहते हैं तो हमारी क्या दिलासा होती है ?

....

11. **लूका** 11:13 में यीशु ने पवित्र आत्मा देने के लिए पिता के वायदे के बारे में क्या कहा ?

....

12. **प्रेरितों** 2:17 में पवित्र आत्मा विशेष रीति से उमड़ाया जिसे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा कहा गया, यह किन लोगों पर हुआ ?

....

13. जो पश्चाताप करके पवित्र आत्मा पाते हैं उनके लिए **प्रेरितों** 2:38 में क्या वायदा किया गया है ?

....

14. **प्रेरितों** 8:15 में प्रेरितों ने विश्वासियों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा और सामर्थ्य पाने के लिए क्या किया ?

....

15. 1 **कुरिन्थियों** 12:4-7 में प्रभु ने मसीहियों के लिए किन दानों का वायदा किया है ?

....

पाठ करो: 1) **अनुग्रह करनेवाला और प्रार्थना सिखानेवाला आत्मा** **अ) जकर्याह** 12:10
ब) रोमियों 8:26-27

2) **आत्मा से भरपूर होना** **अ) रोमियों** 8:16
ब) गलातियों 5:22-23

व्यक्तिगत मनन और तर्क वितर्क

1. अपनी गवाही बताएँ
   अ. इस पाठ्यक्रम के शुरू करने से लेकर अब तक जितनी प्रार्थनाओं का उत्तर मिला।
   ब. व्यक्तिगत प्रार्थना जीवन में बढ़ोतरी।
   स. आत्मिक जाग्रति में सहायक बातें।
2. यदि आपको पवित्र आत्मा में अन्य भाषा का वरदान नहीं मिला है, अभी इस दान को प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करें। उसने पिन्तेकुस्त के दिन ही सब मनुष्यों को पवित्र आत्मा का दान दे दिया। इसलिए हमें जो भी आवाज, या शब्द हमारे मन में जुबान पर आता है उसे प्रभु को समर्पित करना शुरू करें। यदि आपके मन में शंका आती है आप प्रभु से कहें कि वे अपनी भाषा आप को दे और लगातार करते रहें और जल्दी ही आप प्रभु का आनन्द आपके मन को भरता हुआ महसूस करेंगे।

3. आप इस पूरे पाठ को प्रार्थना की सूची बनाकर प्रभु से कहें कि वह अपने वचनों को आपके जीवन में पूरा करे..।

आत्मा के बजाय हमारे पापों की कबूली

हम कबूल करते हैं कि हम ने पवित्र आत्मा को खेदित किया, जिस प्रकार हम ने भविष्यद्वाणी का निरादर किया, न केवल प्रभु का वचन पढ़ने, और सुनने में बल्कि हम ने पूरे मन से पवित्र आत्मा पाने की इच्छा और पवित्र आत्मा के दानों को पाने में लापरवाही की है। (1 थिस्स. 5:19)। हम कबूल करते हैं कि अपने भाइयों को प्रेम न करने के कारण हम ने पवित्र आत्मा को दुख पहुँचाया। हम ने सभी कड़वाहट, दुर्भावना, रोष, बुरा बोलना न छोड़ा। हम ने एक दूसरे के प्रति दयालुता न दिखाई, एक दूसरे के प्रति नम्र मन और क्षमाशील न बने। (इफिसियों 4:30-32)

हम कबूल करते हैं कि जो वचन आप हमें देते हैं यदि हम उनका विरोध करते हैं तो हम आपकी आत्मा को कष्ट देते हैं विशेषकर जब प्रभु यीशु हमारे उद्धारकर्त्ता के सुसमाचार का जब हम विरोध करते हैं। (यशायाह 63:10)। हम पश्चाताप करके प्रभु यीशु के नाम से अपने पापों से छुटकारा पाकर बपतिस्मा लेते हैं। और पूरे मन से प्रभु के पवित्र आत्मा के कार्यो को अपने जीवन में चाहते हैं।

प्रिया पिता, हम आपसे माँगते हैं कि पवित्र आत्मा के प्रति लापरवाही और निरादर के लिए क्षमा करो और हमें पूरी तरह से पवित्र आत्मा से भरो। हम पवित्र आत्मा के उन सभी दानों के लिए प्रार्थना करते हैं जो तू हमें देना चाहता है। विशेषकर प्रार्थना करने के दान को ताकि हम अच्छी तरह से तेरे प्रेम और सामर्थ्य को दूसरों को दे सकें जो तुझे नहीं जानते हैं। आमीन।

अध्याय 6 – मध्यस्थी की प्रार्थना

अब मैं सबसे पहले यह आज्ञा देता हूँ कि विनती, प्रार्थना, निवेदन और धन्यवाद सब मनुष्यों के लिए किया जाए। (1 तीमुतियुस 2:1)

1. **यहेजकेल** 22:30 **के अनुसार एक मध्यस्थी करनेवाले का क्या काम है?**

   ....

2. **उत्पत्ति** 18:23 में हम अब्राहम की लूत के लिए की गई प्रार्थना से क्या सीखते हैं ?

   ....

3. **अय्यूब** 42:10 में जब अय्यूब ने अपने मित्रों के लिए प्रार्थना की तब उसे क्या आशीषें मिलीं ?

   ....

4. अ. **निर्गमन** 20:19 में मूसा ने परमेश्वर और लोगों के बीच मध्यस्थी किस तरह की ?

   ....

   ब. **गिनती** 14:13 में मूसा ने मध्यस्थी किस लिए की ?

   ....

   स. **गिनती** 16:46 में उसने क्या कार्य करके मध्यस्थी की ?

   ....

5. अ. 1 **शमूएल** 7:8 के अनुसार शमूएल की मध्यस्थी का क्या परिणाम हुआ ?

   ....

ब. शमूएल ने अपनी मध्यस्थी के कार्य को कितनी गंभीरता से लिया? (1 **शमूएल** 12:23)

....

6. दाऊद ने अपने लोगों के लिए प्रार्थना करते हुए क्या माँगा? (1 **इतिहास** 21:17)

....

7. पौलुस वैसे ही क्या कार्य करने को तैयार था जब उसने उन यहूदी लोगों के लिए प्रार्थना की जिन्होंने यीशु को नहीं स्वीकारा? (**रोमियों** 9:3)

....

8. परमेश्वर ने यिर्मयाह को अनाज्ञाकारी लोगों के लिए प्रार्थना करने को क्यों मना किया? (यिर्मयाह 7:16; 11:14; 14:11)

....

9. दानिय्येल ने अपनी मध्यस्थी की प्रार्थना किस प्रकार की? (**दानिय्येल** 9:3)

....

10. **यीशु हमारा महान मध्यस्थी कैसे है?**

अ. यशायाह 53:12 ....

ब. यूहन्ना 17 ....

स. इब्रानियों 7:25 ....

ड. रोमियों 8:34 ....

इ. 1 यूहन्ना 2:1 ....

11. इन वचनों के अनुसार **हमें किन के लिए और किस चीज के लिए मध्यस्थी करनी है?**

अ. याकूब 5:13 ....

ब. मत्ती 5:44 ....

स. 2 थिस्स. 3:1 ....

ङ 1 तीमुथियुस 2:1-2 ....

12. पौलुस ने विश्वासियों के लिए किन-किन चीजों के लिए प्रार्थना की? (2 **थिस्सलुनीकियों** 1:11)

....

13. हमारे लिए कौन मध्यस्थी करता है और दूसरे के लिए मध्यस्थी में हमारी कौन सहायता करता है? (**रोमियों** 8:26)

....

14. फिरौन के स्थान पर मूसा को मिस्र और फिरौन के लिए क्यों प्रार्थना करनी पड़ी? (**निर्गमन** 8:8-9)

....

15. **यीशु की महान मध्यस्थी की प्रार्थना यूहन्ना 17 में दी गई है।** उन तीन प्रार्थनाओं को बताएँ जो उसने सब के लिए की थीं। वह प्रार्थना उसने गतसमने बाग में जाने से पहले की थी।

	उसने किसके लिए प्रार्थना की	और प्रार्थना में क्या माँगा
अ.	आयत 1-5	....
ब.	आयत 6-10	....
स.	आयत 20-26	....

पाठ करोः 1) **सबके लिए प्रार्थना करो** — **अ)** 1 **तीमुथीयुस** 2:1-2; **ब) मत्ती** 5:44

2) **विश्वासियों के लिए पौलुस की प्रार्थना** — **अ) इफिसियों** 1:17-18; **ब) इफिसियों** 3:16-19

व्यक्तिगत दर्पण और तर्क वितर्क

1. क्या आपने कभी ऐसी पीड़ा या बोझ को अनुभव किया जो आप समझ न सके, तब बाद में आपको मासूम हुआ कि किसी दूसरे व्यक्ति को भी वैसा ही अनुभव हुआ है, इसका अर्थ क्या समझते हैं आपको क्या करना चाहिए?
2. क्या कभी आपको देश के पापों का बोझ अनुभव हुआ है? एक मसीही होने के नाते राष्ट्र के प्रति हमारी क्या जिम्मेवारी है? (2 इतिहास 7:14)
3. यीशु ने मध्यस्थी के लिए क्या-क्या किया? हम किस तरह से यीशु की तरह मध्यस्थी कर सकते हैं?
4. हम आत्मा में प्रभु की इच्छा के अनुसार कैसे प्रार्थना कर सकते हैं? आत्मा हमें किन रीति से मध्यस्थी में सहायता करता है?
5. भविष्यद्वक्ता एवं मध्यस्थी करने वाले बोझ उठाने के बारे में क्यों कहते हैं? (उदाहरण - गिनती 11:17; नहूम 1:4; निर्गमन 18:32; जकर्याह 9:1; 12:1)। क्या आप ऐसा अनुभव करते हैं कि प्रभु ने आपके ऊपर दूसरों का बोझ डाला है। (आप उस भार के बारे में सोचें कि जिसे आप दूसरों के लिए उठा सकें न कि उस के लिए कुड़कुड़ाएँ।)

मध्यस्थी की प्रार्थना

सर्वशक्तिमान परमेश्वर, तू ने अपने पुत्र यीशु को हमारे लिए मध्यस्थी करने के लिए भेजा क्योंकि कोई भी ऐसा न था जो हमारे पापों के बोझ को उठाता। यीशु हम धन्यवाद करते हैं कि आप हमारे लिए मध्यस्थी करते हैं, पिता के दरबार में जब भी हम पाप करते हैं आप हम पर अनुग्रह करते हैं। हम अभी उस भार को लेते हैं जो आपने हमें दूसरों के लिए उठाने के लिए कहा है।

हम अपने राष्ट्र के लिए प्रार्थना करते हैं। आप से हम सभी पापों, हत्या, ईश्वर की निन्दा करना, आप के अधीन न रहना और अपनी मर्जी से काम करना इन सब के लिए क्षमा करो। हमारे हृदयों को अपनी ओर खींचो। प्यारे प्रभु पिताओं के हृदय बच्चों की ओर हों। सभी विवाहों को आपकी योजना के अनुसार बनाओ। सभी राजनेताओं के दिलों को पवित्रता से भर दो, जो आपका विरोध करते हैं उन्हें उतार दो।

हम उन लोगों के लिए प्रार्थना करते हैं जो यीशु को प्रभु करके नहीं जानते हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि तू कलीसिया को साहस से पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से भर दे ताकि सभी लोग पूरे देश में और पड़ोसियों में साक्षी को दें। और सभी भारों को प्रभु जो तेरे दिल में है जो तू चाहता है, उन लोगों को जो तू चंगा करना चाहता है, आशीष, बचाव, आप हमें बुलावा दे कि हम प्रार्थना करें ताकि हम स्वेच्छा से आपकी सामर्थ्य और आशीष का माध्यम बनें। आमीन।

अध्याय 7 – अधिकार की प्रार्थना

मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो कोई इस पहाड़ से कहे, 'तू उखड़ जा, और समुद्र में जा पड़,' और अपने मन में संदेह न करे वरन् प्रतीति करे कि जो कहता हूँ वह हो जाएगा, तो उसके लिए वही होगा। (मरकुस 11:23)

1. प्रेरितों के किन वचनों के द्वारा प्रभु का चंगाई की सामर्थ्य आई ?
   - प्रेरितों 3:6
     ....
   - प्रेरितों 9:34
     ....
   - प्रेरितों 10:40
     ....
   - प्रेरितों 14:10
     ....
   - प्रेरितों 16:18

2. यीशु ने उस तरह के क्या काम किए थे ?
   - मत्ती 9:5
     ....
   - यूहन्ना 5:8
     ....
   - यूहन्ना 11:43
     ....
   - मरकुस 1:25
     ....
   - मत्ती 8:26
     ....

3. यीशु ने कलीसिया को क्या अधिकार दिया ?
   - लूका 9:1, 10:19
     ....
   - मत्ती 28:19
     ....
   - मरकुस 11:24
     ....
   - यूहन्ना 20:21-23
     ....

4. हम इस अधिकार से क्या सीखते हैं ?
   - मत्ती 7:21 ....
   - प्रेरितों 19:15 ....
   - मत्ती 8:9 हम अधिकार समझते हैं जब ....

5. शैतान पर विजय पाने और प्रभु का राज्य बढ़ाने के लिए कलीसिया में अधिकार का प्रयोग किस प्रकार किया गया था ?

➢ प्रेरितों 8:5-13

....

➢ प्रेरितों 13:6,11

....

6. **इफिसियों** 1:18–22 में पौलुस हमें अधिकार और सामर्थ्य के बारे में बताता है, जो प्रभु हमें देता है।

➢ पौलुस ने कलीसिया के लिए क्या जानने की प्रार्थना की है ? (19)

....

➢ उस सामर्थ्य का प्रदर्शन कब हुआ ? (20)

....

➢ प्रभु मसीह में विश्वासी का क्या स्थान है ? (:6)

....

➢ शैतान के सामने हमारा क्या स्थान है ? (1:21-22)

....

7. **इफिसियों** 1:13 में पौलुस ने पवित्र आत्मा और उसके दान और सामर्थ्य जो हम में है उसे क्या कहा है ?

....

8. 2 **पतरस** 1:4 के अनुसार विश्वासियों को प्रभु की प्रतिज्ञाओं से क्या मिलता है ?

....

9. प्रभु ने अपने भविष्यद्वक्ताओं के अधिकार को किस तरह सिद्ध किया ?

➢ 1 **शमूएल** 7:10; 12:17

....

➢ **एलिय्याह** (1 **राजाओं** 17:1)

....

➢ **एलीशा** (2 **राजाओं** 2:14)

....

पाठ करो: 1) **अविश्वास के बिना प्रार्थना करो** — **अ) मरकुस** 11:23

2) **तुम्हारे पास अधिकार है** — **अ) मरकुस** 16:17

ब) यूहन्ना 20:23

स) मत्ती 18:18

व्यक्तिगत अनुभव और तर्क

1) प्रभु का कार्य करने के लिए मसीही किन सामर्थ्य के स्रोतों का उपयोग करते हैं ?
यशायाह 55:10 और इब्रानियों 4:12 में वचन की सामर्थ्य को हम कैसे सिद्ध होता देखते हैं ?
प्रकाशितवाक्य 12:11 और इफिसियों 1:7 के अनुसार प्रभु का लहू से हम क्या कार्य सिद्ध देख सकते हैं ?
रोमियों 8:11 और प्रेरितों 1:8 के अनुसार हम में पवित्र आत्मा की सामर्थ्य क्या करती है ?

2) क्या प्रभु हमें उन कार्यों को करने की आज्ञा देगा, जिन्हें करने की सामर्थ्य और अधिकार हमें नहीं दिया गया है ? मत्ती 28:1 और मरकुस 16:17,18 इस के बारे में क्या कहते हैं ?

3) शैतान को बाँधने और बाहर निकालने के लिए यीशु ने क्या कार्य पहले ही पूरा किया है ? (मत्ती 12:28; यूहन्ना 12:31 देखें) जबकि यीशु ने कार्य पहले ही पूरा किया है उसे जीवन और सेवकाई में लागू करने के लिए हमें क्या करना है ?

4) प्रेरितों 1:8; यूहन्ना 14:16-17; इफिसियों 6:10-17; भजन 91:10-11 पर आधारित प्रभु की प्रतिज्ञाओं के अनुसार प्रार्थना लिखें।

हमारे जीवन में यीशु के अधिकार को मानते हुए प्रार्थना

सर्वशक्तिमान परमेश्वर, सृष्टिकर्त्ता और संसार को अपने वचनों की सामर्थ्य से चलाने वाले, तेरा वचन जिस कार्य के लिए तू भेजता है उसे पूरा करके आता है कभी खाली नहीं लौटता। इसलिए हम तेरे वचन को लेकर जो प्रबल और दोधारी तलवार से भी अधिक तेज है, वह जीव और आत्मा को, गाँठ-गाँठ और गूदे-गूदे को अलग करके आर-पार छेदता है। हमें इसका प्रयोग सामर्थ्य से आत्मा में शत्रुओं के विरुद्ध प्रयोग करें जो पाप, बीमारी और आत्मिक शक्तियाँ हैं।

तू ने हमें आज्ञा दी है कि तेरे दिए अधिकार का प्रयोग करके हम चेल बनाएँ, बीमारों को चंगाई दें, पापों की क्षमा कर और अपनी सामर्थ्य उँडेल हमारे विश्वास को बढ़ा कि हम तेरी आज्ञाओं का पालन करें, और भरोसा रखें कि तेरी इच्छा हमारी आँखों के आगे पूरी हो। जो भी पहाड़ समान समस्या हमारे आगे आए उसे हम तेरे वचन के अधिकार से आगे हटाने की आज्ञा देते हैं। प्रभु यीशु के नाम से, आमीन।

अध्याय 8 – सुनी हुई प्रार्थना

पुराना नियम

1. अय्यूब की समस्या

अय्यूब ने शिकायत की कि प्रभु उस से बात नहीं करता है। लोग ज्यादातर क्यों सोचते हैं कि प्रभु उन से बात नहीं करता है (अय्यूब 33:14)? ....

....

जब हम अन्न तरीकों से प्रभु की नहीं सुनते तो वह हम से कैसे बात करेगा (अय्यूब 33:14-16)?

....

2. भविष्यद्वक्ता और न्यायी

अ. निर्गमन 3:14 के अनुसार प्रभु ने मूसा को क्या चिन्ह दिए, कि वह इस्राएली लोगों को मिस्र देश से बाहर ले जाने में अगुआई करेगा? ....

ब. गिनती 22:12 में प्रभु ने बिलाम से कहा कि वह बालाक के पास न जाए, लेकिन बाद में जब उसे जाने को कहा तो रास्ते में एक स्वर्गदूत को खड़ा किया कि रास्ते में ही उसे मार दे (आयतें 20, 22)। बिलाम का दूसरी बार माँगने का क्या उद्देश्य था? ....
इस कहानी से हमें क्या सीखने को मिलता है कि हमें अपनी भावनाओं पर किस तरह नियंत्रण रखना है ताकि हम प्रभु की आवाज को सुन सकें? ....

स. न्यायियों 6:37 में गिदोन ने प्रभु के वचन का पक्का होने के लिए (भेड़ों की ऊन) के द्वारा प्रभु से चिन्ह पूछा। प्रभु ने दो बार किस तरह अपने वचन को पूरा किया?
....
वह कौन सी परिस्थितियाँ हैं प्रभु से चिन्ह माँगना जरूरी है कि प्रभु ही हम से बात कर रहा है?
....

ङ 1 शमूएल 3:4,5 में जब परमेश्वर ने बालक शमूएल को रात को बुलाया तो उसकी क्या प्रतिक्रिया थी?

....

इ. 1 राजाओं 19:8-14 में एलिय्याह ने प्रभु को किस प्रकार सुना ?

....

3. भजन संहिता / नीतिवचन

अ. भजन 119:105, 133 के अनुसार प्रभु का वचन हमारे लिए क्या करता है ?

....

ब. भजन 5:12-14 के अनुसार प्रभु का भय रखने वाले लोगों के लिए प्रभु क्या करेगा ?

....

स. नीतिवचन 1:28-31 के अनुसार लोग प्रभु की अगुआई क्यों नहीं पा सकते हैं ?

....

नया नियम

4. प्रेरित पौलुस

अ. प्रेरितों 13:1-6 के अनुसार अंताकिया के विश्वासी प्रभु के बोलने के समय क्या कर रहे थे ?

....

ब. प्रेरितों 16:6,7 में पौलुस को प्रभु की बात सुनने में क्या समस्या आई ?

....

स. 1 कुरिन्थियों 13:9-12 में पौलुस ने प्रभु की बात को देखने और सुनने की तुलना किस से की है ?

....

ङ 1 थिस्सलुनीकियों 5:0-21 के अनुसार पौलुस हमें भविष्यद्वाणी के विषय में क्या बताता है ?

....

इ. 1 कुरिन्थियों 14:32 के अनुसार एक मसीही को जो समझता है कि प्रभु ने उस से बात की है, किसे समर्पण करना चाहिए ?

....

फ) प्रेरितों 21:11-14 में अगबुस ने भविष्यद्वाणी करके पौलुस को बताया यदि वह यरूशलेम जाएगा तो उसकी हानि होगी फिर भी पौलुस क्यों चला गया ? (प्रेरितों 20:11 देखें)

....

क्या आपको लगता है आत्मा यहाँ परस्पर विरोधी अगुआई कर रहा है ?

....

5. 1 कुरिन्थियों 12

अ. वचन 8-10 के अनुसार कौन-कौन से अलौकिक आत्मिक दान हैं जिन्हें गुप्त बातों को प्रकट करने का दान कहा जा सकता है, जिसके द्वारा प्रभु का वचन आता है ?

....

ब. आयत 2 में पौलुस झूठे देवी-देवताओं के लिए किन शब्दों को प्रयोग करता है ?

....

स. 1 कुरिन्थियों 13:1 में पौलुस भविष्यद्वाणी के दान के बढ़ावे के लिए क्या उत्साहन देता है ?

....

6. याकूब

अ. याकूब 3:15 के अनुसार बुद्धिमता प्राप्त करने के प्रभु के सिवाय और कौन-कौन से स्रोत हैं ?

....

ब. प्रभु के संदेश को समझने में क्या मानवीय समस्याएँ आती हैं ? (याकूब 3:16)

....

स. प्रभु का ज्ञान क्या लाता है? (आयत 17) ....

ङ मानवीय प्रकृति क्या भेद लाती है? (4:1-4)

....

पाठ करो: **सुनी हुई प्रार्थना** **अ) भजन** 119:105, 133
ब) याकूब 3:17

व्यक्तिगत प्रयोग और तर्क वितर्क

1. उन समयों के बारे में बताएँ जब प्रभु ने आप से बात की। क्या आप समयों के बारें में सोच सकते हैं जब प्रभु ने बात की पर आपको पक्का निश्चय नहीं लगा?
2. प्रभु को प्रश्न पूछने के बाद, कि आपको वच वचन दे, या अगुवाई करे या उत्साहित करे हम प्रभु को समय दें कि हम उस की सुन सकें। जो विचार आपके मन में आते हैं उन्हें बाँटें। क्या ऐसा लगता है कि प्रभु बात कर रहा है?
3. अपने समूह या अकेले में प्रार्थना करें कि वह तुम्हें वचन से अगुआई करे। तब हर एक व्यक्ति बाइबल खोल कर वचन पढ़े। क्या आप सभी के वचनों में साँझा संदेश है? संदेश का विषय क्या है वह आप से क्या बात कर रहा है?
4. प्रभु प्रकृति द्वारा आप से क्या बात करता है, तुम्हारे शरीर के अदभुत कार्यो द्वारा, जीवन की घटनाओं द्वारा प्रभु क्या बात करता है?
5. एक सप्ताह सुनें, चाहे आप जाग रहे हैं या सोए हैं, उन वचनों के लिए जो आपकी अगुआई या उत्साहित करें।
6. वह कौन से चिन्ह हैं जिनका प्रयोग करके प्रभु स्वपन और दृष्टान्त द्वारा आप से बात करे?

मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता, मैं प्रार्थना करता हूँ तू मेरी आत्मा को अपनी आत्मा से जगा, मैं तेरी आवाज सुन सकूँ, तेरा मार्गदर्शन पा सकूँ और जान लूँ कि तू किस प्रकार सेवा चाहता है। जैसे कि तेरा वचन भजन 73:24 में कहता है कि तू सम्मति देता हुआ, मेरी अगुआई करेगा, और तब मेरी महिमा करके मुझ को अपने पास रखेगा।
प्रभु मुझे पवित्र आत्मा के दान, बुद्धिमता, ज्ञान, भविष्यद्वाणी के वचन और उन्हें प्रयोग करने का विश्वास और तेरी इच्छा को जानने का ज्ञान दो जब तक कि मैं तुझे आमने सामने न देख लूँ। मुझे अपनी बुद्धि दो ताकि मैं संसार द्वारा गलत रास्ते पर न जाऊँ, न ही शैतान के रास्ते पर, न ही मानवीय इच्छाओं पर चलूँ। तेरे वचन को याद करने में मेरी सहायता करो कि मैं उसे अपने मन में रख लूँ ताकि आप उससे मुझ से बात कर सको। जिस तरह अब्राहम और मूसा से बात की मैं एक मित्र की तरह तुझ से बात करना चाहता हूँ।
मैं प्रार्थना करता हूँ कि तू मेरे मन को अपने विचारों से भर दे। और उन प्रार्थनाओं से जो तू चाहता है कि मैं करूँ कि मैं तेरे वचन को और बुद्धि को समझ सकूँ। प्रभु यीशु के नाम से, आमीन।

अध्याय 9 – प्रभु के वचन से प्रार्थना करना

यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरा वचन तुम में बना रहे, तो जो चाहो माँगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा। (यूहन्ना 15:7)

1. **रोमियों** 10:9–10 में विश्वास और कबूली का क्या सम्बंध है?

   ....

2. जो यीशु के नाम को स्वीकार करते हैं, उनके लिए यीशु क्या करेगा? (**मत्ती** 10:32)

   ....

3. जो अपने पापों को कबूल कर क्षमा माँगता है उनके साथ प्रभु का क्या वायदा है ?
   अ. भजन 32:5 ....

   ब. भजन 103:3 ....

   स. इफिसियों 1:7 ....

   ङ यिर्मयाह 31:34 ....

4. प्रभु का वचन पूरा होगा कर के हमें क्यों विश्वास करना है ? (**गिनती** 29:9)
   ....

5. जब लोग प्रभु को स्वीकार नहीं करते और उसके वचन के अनुसार नहीं चलते तो वे क्या कर रहे हैं ? (**भजन** 107:11)
   ....

   जब हम पश्चाताप करते हैं तो प्रभु हमें किस सामर्थ्य से चंगाई देता है ? (आयत 20)
   ....

6. प्रभु के सुसमाचार से हमें और क्या सामर्थ्य मिलती है ?
   अ) रोमियों 1:16 ....
   ब) याकूब 1:18 ....

7. जब हम प्रार्थना करते हैं तो उत्तर मिली हुई किन वायदों को प्रभु को हम याद करा सकते हैं ?
   अ) यूहन्ना 14:13 ....
   ब) भजन 37:4 ....

8. आत्मिक शक्ति सामर्थ्य पाने के लिए हमें क्या कबूल करना है ?
   अ) लूका 11:13 ....
   ब) प्रकाशित 12:11 ....

9. किन परिस्थितियों में नीचे लिखे गए प्रभु के वायदे हमें डर से ऊपर उठाकर साहस से मुश्किल समय का सामना करने में सहायता करते हैं ?
   अ) यशायाह 43:1 ....

   ब) भजन 27:1-5 ....

   स) यहोशू 1:9 ....

   ड) फिलिप्पियों 4:19 ....

   इ) यशायाह 46:4 ....

10. समृद्धि के वायदे को प्राप्त करने के लिए किन शर्तो को पूरा करना आवश्यक है ?
   अ) भजन 1 ....

   ब) व्यवस्था 28:1 ....

स)	2 इतिहास 26:5 ....

11. नीतिवचन 17:22 को हम व्यक्तिगत कबूली के रूप में कहें।
"मन का आनन्द अच्छी औषधी है इसलिए मैं .... प्रभु की चंगा करने की सामर्थ्य में आनन्दित हूँगा।"

पाठ करोः 1) **प्रभु के वचन से प्रार्थना करो**
अ) यूहन्ना 14:13
ब) रोमियों 10:9-10
स) यहोशू 1:9

व्यक्तिगत अभ्यास और तर्क वितर्क

1. प्रार्थना करने के बाद, नीचे लिखे प्रभु के वचन के अनुसार प्रार्थना के सिद्धान्त का अभ्यास करें। जो वचन इस अध्याय में लिखे हैं उन्हें ले कर प्रार्थना करना शुरू करें। हम स्वयं से प्रश्न करें "क्या मैं सचमुच इस वचन पर विश्वास करता हूँ।" तब पूछें कि मैं किस तरह प्रार्थना करूँ प्रभु की सहायता के लिए इस वचन के वायदे को पूरा करने की शर्तो को पूरा कर सकूँ।
2. अपनी बाइबल को कहीं भी खोलें और पूछें कि प्रभु का यह वचन आज मुझे क्या कहता है? प्रभु के एक वचन को लें और एक पेपर पर लिखें और प्रार्थना करें कि आप प्रभु के वचन के अनुसार बन जाएँ।
3. रोमियों 8:11 लें और चंगाई के लिए प्रार्थना करें। यदि उसी का आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, तुम में बसा हुआ है तो जिस परमेश्वर ने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया वह तुम्हारी नाश्वर देह को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा है जिलाएगा।
4. किसी को भय से मुक्त कराने के लिए पवित्रशास्त्र के किन वचनों का प्रयोग करेगें?

हम में वचन की सामर्थ्य का पक्का होना

हे प्रभु, यिर्मयाह 1:12 के अनुसार तू ने वायदा किया कि तू अपने वचन को पूरा करने के लिए जागृत है, तेरा वचन कभी नहीं चूकता है या उद्देश्य पूरा किए बिना नहीं रहता है। इसलिए हम तेरा वचन लेते हैं। जब हम तुझ से माँगें तू हमें पूरा नाप दबा-दबा कर, हिला-हिला कर और उभरता हुआ दे। हम अपनी सभी जरूरतों, और तेरे लोगों की जरूरतों के लिए तुझ पर विश्वास करते हैं, कि तू अपने भण्डार से हमारी जरूरतें पूरी करेगा। हमें अपने वचन से आशीष दे कि तेरे वचन की सामर्थ्य से तेरी सभी आशीषों को पा लें।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि तेरा वचन मुझ में रहे। मेरी याद करने की शक्ति को बढ़ा, तेरे वचनों को तेरे मुँह के द्वारा मेरे दिनाग में ला कि तेरी सामर्थ्य को बाँट सकूँ। जो वचन तू मुझ से बोलता है उन पर विश्वास करने की सामर्थ्य दे। तू मुझ से बात करता है और जो वचन तू मुझे देता है मेरे जीवन के लिए उसे जान लूँ। आमीन।

अध्याय 10 - विश्वास की प्रार्थना

इसलिए मैं तुम से कहता हूँ कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके माँगो, तो प्रतीति कर लो कि यह तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिए हो जाएगा। (मरकुस 11:24)

1. निम्नलिखित लोगों ने अपना विश्वास कैसे दिखाया और क्या प्राप्त किया?

विश्वास दिखाया	दान प्राप्त किया

- लहू बहनेवाली स्त्री (लूका 8:43-48) ....
- यरीहो का बरतीमाई (मरकुस 10:46-50) ....
- सामरीया का कोढ़ी (लूका 17:12-19) ....

2. विश्वास की बाधाएँ
   - वचन की सामर्थ्य के लिए क्या रुकावट आती है ? (इब्रानियों 4:2)
     ....
   - जो यीशु ने आज्ञा दी चेले पूरी करने में असफल हुए या क्यों न कर सके ? (मत्ती 17:14-20)
     ....
   - यीशु को अपने नगर में सामर्थ्य के काम न कर सकने का क्या कारण था ? (मत्ती 13:58)
     ....
   - यीशु ने तूफान के समय चेलों को किस लिए डाँटा ? (मत्ती 8:26)
     ....
   - याकूब 1:6,7 के अनुसार हमें प्रभु से कुछ भी प्राप्त करने में क्या रोकेगा ?
     ....

3. इन वचनों के अनुसार विश्वास हमारे लिए क्या करता है ?
   - यूहन्ना 1:12
     ....
   - इफिसियों 2:8
     ....
   - यूहन्ना 14:12
     ....
   - लूका 17:6
     ....
   - मत्ती 9:29
     ....
   - याकूब 5:15
     ....

4. विश्वास के चिन्ह
   - हमारे विश्वास के साथ-साथ क्या क्रिया होती है ? (लूका 11:28 और यूहन्ना 3:36 के अनुसार)
     ....
   - याकूब 2:17-19 के अनुसार विश्वास एक बुद्धिमान समझौते से ज्यादा यह कैसे
     - वह बताता है कि सच्चा विश्वास कर्म सहित
       ....
     - वह बताता है कि .... विश्वास करते हैं।
   - विश्वास का प्रतिकूल क्या है ? (नीतिवचन 3:5)
     ....
   - विश्वास से क्या आशीष मिलती है ? (आ. 8)
     ....

- हमारे किन कार्यों से हम विश्वास दर्शाते हैं और विश्वास बढ़ाते हैं ? (आ. 9)

  ....

5. डगमगाता विश्वास
   - जो व्यक्ति विश्वास में डगमगाता है उस के लिए याकूब क्या कहता है ? (याकूब 1:6-8)

     ....

   - पतरस ने अपना दुचित्ता होना कैसे दिखाया ? (मत्ती 14:30-31)

     ....

6. प्राप्त करनेवाला विश्वास
   - रोमियों 10:17 के अनुसार हमें विश्वास कैसे प्राप्त होता है ?

     ....

   - बालक के पिता द्वारा बोले गए किस वचन से दिखता है कि बालक क्यों चंगा न हुआ ? (मरकुस 9:22)

     ....

   - यीशु ने क्या कहा जिस के लिए विश्वास की आवश्यकता है ?

     ....

   - बालक के पिता ने विश्वास के लिए क्या प्रार्थना की ?

     ....

व्यक्तिगत जीवन में प्रयोग एवं तर्क वितर्क

1. विश्वास की प्रार्थना करें। वचन में लिखे वायदों को पढ़ें। ऊँची आवाज में कहें, "यह प्रभु का वचन है और यह सत्य है। प्रभु ने कहा है मैं विश्वास करता हूँ और इस से सब हिसाब बराबर होता है।"
2. अपने समूह से उत्तर प्राप्त हुई प्रार्थनाओं के बारे में बताएँ। दूसरों की दी गई गवाही से आपके विश्वास को किस तरह ताकत मिलती है ? क्या आप किसी उदाहरण के बारे में सोच सकते हैं कि आपने प्रार्थना की कि यह बोझ कम हो जाए परन्तु प्रभु ने उस परीक्षा द्वारा आप को मजबूत किया।
3. जब किसी समस्या या जरूरत के बारे में वर्णन करते हैं तो पूछें यदि यीशु इस परिस्थिति में होते तो क्या करते ? तब कबूल करें कि यीशु यहाँ है।
4. प्रभु की प्रशंसा में गीत गाएँ जैसे कि प्रभु प्रार्थना का उत्तर देते हैं 'प्रार्थना के मधुर क्षण' प्रभु यीशु हमारा मित्र है।
5. जिस व्यक्ति के लिए आपने प्रार्थना की है यदि वह पूछे अपना विश्वास दर्शाने के लिए क्या वह दवाई लेता रहे तो आप क्या उत्तर देंगे ?
6. कुछ लोग कहते हैं कि किसी बात के लिए एक बार से ज्यादा प्रार्थना करना अविश्वास को दर्शाता है। यीशु ने लूका 18:1-8 में इस परिस्थिति का क्या उत्तर दिया ? 2 कुरिन्थियों 12:8-11 में पौलुस ने अपनी अनसुनी प्रार्थना के साथ क्या किया ? प्रभु क्यों चाहता है कि हम एक बात के लिए बार-बार प्रार्थना करें ?

विश्वास की प्रार्थना

स्वर्गीय पिता, हम जानते हैं विश्वास तेरे द्वारा दिया गया दान है चाहे हम कितनी भी कोशिश करें जब तक तू हमें न दे हम विश्वास नहीं कर सकते हैं। इसलिए हम प्रार्थना करते हैं जैसे कि आपके शिष्यों ने प्रार्थना की, प्रभु हमारे विश्वास को बढ़ा, लेकिन हम यह भी जानते हैं कि तेरे वचन के वायदों को सुनने से तू विश्वास देता है, इसलिए हम प्रार्थना करते हैं कि हम तेरे वचन को खोजें, पढ़ें, समझें और आज्ञापालन करें ताकि हमारा विश्वास सरसों के दाने की तरह मजबूत हो जो महान कार्य करता है।
हम तेरे वचन पर विश्वास करते हैं कि तू मरे हुओं को जिलाता है और जो बातें हैं ही नहीं उनका नाम ऐसे लेता है कि मानों वे हैं। (रोमियों 4:17)। इसलिए अब्राहम की तरह, जो विश्वासियों का पिता है, तेरे वायदों पर विश्वास करें, और तेरे वचन की सामर्थ्य को बिना कमज़ोर हुए पकड़े हुए रहें। हम यह पूरी तरह जानते हैं कि जो तू ने अपने वचन में कहा वह सत्य है, तू असत्य नहीं बोल सकता।
प्रभु हम तुझ पर पूरे मन से विश्वास करना चाहते हैं न कि अपनी दृष्टि में बुद्धिमान होना चाहते हैं। इसलिए हम अपने सर्वस्व से तेरी महिमा करें हमें तू जो कुछ कहे हम आज्ञा पालन करेंगे। हमारा अविश्वास तेरे जीवन की सामर्थ्य में रुकावट न हो वह विश्वास के द्वारा बहती रहे। प्रभु यीशु के नाम से, आमीन।

प्रार्थना का एक और संक्षिप्त व्यवस्थित अध्ययन

1. <u>प्रार्थना क्यों करें ?</u>

   हमें प्रार्थना क्यों करनी चाहिए? परमेश्वर पहले से सबकुछ जानता है! उसे पता है उसके बच्चों को क्या चाहिए! क्या परमेश्वर तब ही कार्य करेगा जब वह हम से सुनता है जिसे वह पहले ही जानता है? हमें प्रार्थना करने की आवश्यकता है क्योंकि हमें परमेश्वर के बारे में अधिक जानना है। हमें परमेश्वर के साथ सम्पर्क में लाने के लिए प्रार्थना आवश्यक है। यह आवश्यक है क्योंकि प्रार्थना के द्वारा ही हम चीजों को वैसे ही देखते हैं जैसे परमेश्वर उनको देखता है। हमें प्रार्थना करनी है क्योंकि तब ही आपको पता चलता है आप को वास्तव में क्या चाहिए और आपने क्या गलत किया है। प्रार्थना के द्वारा आप वैसे ही देखते हैं जैसे परमेश्वर देखता है। आप आत्मिक वास्तविकता और प्रभु की उपस्थिति समझने लगते हैं।

2. <u>प्रार्थना क्या है ?</u>

   पता लगाने के लिए कुछ वाक्याँशः प्रार्थना यीशु से बातें करना है। यह प्राण-भंग है। प्रार्थना मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ संगति या सहभागिता है। प्रार्थना सब वैध और आवश्यक चीजों की अपनी इच्छाओं को परमेश्वर को अर्पित करना है, इस भरोसे के साथ अपने प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के द्वारा हम उन्हें प्राप्त करेंगे। प्रार्थना प्रभु का चेहरा देखना है। प्रार्थना बाकी सबकुछ भूल कर अपने सम्पूर्ण हृदय से प्रभु पर मन लगाना है। प्रार्थना अपने सबकुछ का साधन प्रमेश्वर को मानना है। उदाहरण - 1 शमूएल 1:10, 15-16, हन्ना ने प्रभु के सामने अपने हृदय को उँडेला था।

3. <u>प्रार्थना कहाँ करें ?</u>

   - सब स्थान पर (1 तीमुथियुस 2:8)।
   - बंद कमरे में। एक शान्त स्थान में जहाँ आप परमेश्वर के साथ अकेले हो सकते हो। अपने कमरे में दरवाजा बंद करके प्रार्थना करो (मत्ती 6:6)। यीशु को देखो, वह अकसर एकान्त स्थान में जाकर प्रार्थना किया करता था (मरकुस 1:35, लूका 5:16, मत्ती 14:23)।
   - कलीसिया में या बाहर (भजन 26:12)।
     प्रार्थना के लिए मंदिर गया (लूका 18:10)। सुलेमान (1 राजा 8:22-53)। तो, व्यक्तिगत प्रार्थना एकान्त में; परिवारिक प्रार्थना छोटे समूह में; सार्वजनिक प्रार्थना मण्डली में।

4. <u>प्रार्थना कब करें ?</u>

   अ) सर्वदा (लूका 18:1 - विधवा का दृष्टान्त - अध्यवसाय)।
   (1 थिस्स. 5:17 - निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो)।

   आ) सुबह (भजन 5:3)।

   इ) और दोपहर और शाम को (भजन 55:17 - परमेश्वर के साथ निरन्तर संगति)। दानय्येल एक दिन में तीन बार प्रार्थना करता था (दानि. 6:10)।

   ई) प्रतिदिन (भजन 86:3)।

   उ) दिन और रात (भजन 86:3); उदा. यीशु ने अपने चेलों को चुनने से पहले सारी रात प्रार्थना की (लूका 6:12)।

   ऊ) दुखों के समय (याकूब 5:13)

5. <u>किससे प्रार्थना करें ?</u>

   हमें पिता परमेश्वर से (प्रेरितों 12:5), यीशु मसीह के नाम में (पुराने नियम से भिन्न है) (यूहन्ना 14:13), पवित्र आत्मा के सामर्थ्य और सहायता से (इफि. 2:18) प्रार्थना करनी चाहिए। यूहन्ना 16:23-27 पढ़ो।

6. <u>प्रार्थना के लिए तैयारी!</u>

   परमेश्वर की उपस्तिति में यूँ ही मत घुस जाइए। परमेश्वर पर ध्यान लगाओ, शान्त रहो, जानो कि वह परमेश्वर है, उसे महसूस करिए! पवित्र आत्मा से कहिए कि हमें यदि हमारे जीवन में कोई पाप है तो उसका एहसास कराए (यूहन्ना 16:8), और हमारे हृदयों को खोजे (भजन 139:23-24), और फिर अपने पापों से मन फिराएँ, क्षमा माँगें और पाए, क्योंकि यह हमारे पाप और अपराध हैं जो हमें अपने परमेश्वर से दूर रखते हैं (यशायाह 59:2; 1 यूहन्ना 1:9; 2:1-2; भजन 66:18-19; भजन

32:5)। याद रखें, चाहे आपके पाप कितने भी क्यों न हों आप उसकी सन्तान बने रहते हैं और हर बार जब आप मन फिराते हैं, वह आपके पाप क्षमा करने और उन्हें याद न करने के लिए विश्वासयोग्य और न्यायी है। और कोई दण्ड की आज्ञा नहीं है (रोमियों 8:1)।

7. प्रार्थना कैसे करें ?

(अ) विश्वास और पवित्र आत्मा की अगुआई में प्रार्थना करें। पवित्र आत्मा, प्रार्थना और विश्वास तीन धागों की डोरी के समान हैं जो टूट नहीं सकती। हर प्रार्थना पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित होनी चाहिए, क्योंकि पवित्र आत्मा ही जीवन लाता है!

(2 कुरिं. 3:6)। इसके अतिरिक्त, आप विश्वास से और परमेश्वर के अस्तित्व में विश्वास से प्रार्थना करें (इब्रा. 11:6 - विश्वास बिना उसे (परमेश्वर) प्रसन्न करना अनहोना है)। विश्वास की परिभाषा - इब्रा. 11:1)। विश्वास प्रमाण की बात करता है, निश्चित रूप से जानता है कि जो आपने माँगा था मिल गया है। परमेश्वर में विश्वास और भरोसा! अपने विश्वास को इस्तेमाल करना! राई के दाने जितने विश्वास की आवश्यकता है (मत्ती 17:20; 21:21-22), और जो कुछ भी आप माँगोगे, मिल जाएगा! तो, पवित्र आत्मा के द्वारा विश्वास से प्रार्थना करो। यहूदा 20 भी दोनों के विषय में बात करता है। और परमेश्वर का उसके पवित्र आत्मा के लिए धन्यवाद करो, क्योंकि हालाँकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए, परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर, जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए विनती करता है (रोमियों 8:26-27)। यूनानी भाषा में आहें भरना का अर्थ होता है: हृदय की अवर्णातीत प्रवाह। एक बार फिर मैं इस आयत में एक गहरा अर्थ देख/अनुभव कर सकता हूँ; यह केवल पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर प्रार्थना करने और अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने की ही बात नहीं कर रहा है (1 कुरिं. 14:14)।

विश्वास का शत्रु अविश्वास या दुचित्ता होना है। इसका अर्थ परमेश्वर का उसके वचन पर भरोसा नहीं करना हो सकता है। अविश्वास शैतान की ओर से है, और यह पहले उत्पत्ति 3:3-6 में पाया गया था। परमेश्वर ने कहा था मत खाना, शैतान ने कुछ और बताया, अविश्वास घुस आया, और उसके साथ पाप आया। अब रोमियों 14:23 बताता है कि सबकुछ जो विश्वास से नहीं होता पाप है! विश्वास परमेश्वर के वचन को सच मानना है। परमेश्वर की बातों सो सच मानना!

(आ) दीनता में प्रार्थना करें। मान लें कि परमेश्वर प्रभु है और कि आपको उसकी आवश्यकता है। परमेश्वर को एक बटन दबाया और काम हो गया परमेश्वर नहीं है। वह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर है; प्रभुसत्ता और सबसे ऊँचा है! आप परमेश्वर को आपके लिए कुछ करने के लिए आज्ञा नहीं दे सकते हो। वह आपकी इच्छाओं को पूरी करने के लिए नहीं है। परमेश्वर स्वचलित नहीं है, बटन दबाया (प्रार्थना भेजी) और जो चाहा पा लिया (अपना उत्तर पा लिया)। प्रभु चाहता है कि हम सम्पूर्ण रूप से उसके ऊपर निर्भर रहें। उसके बिना हम कुछ भी कर नहीं सकते हैं (यूहन्ना 15:5)। दीनता में हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट आते हैं, अपने हृदय उसके सामने खोलते हैं, और वह अपना सामर्थ्य प्रकट करता है, ताकि सारी महिमा उसे ही मिले!

(इ) दृढ़ता के साथ प्रार्थना करें (लूका 18:1-8)। प्रार्थना में लगे रहो जब तक आपको वह मिल नहीं जाता जो आपने माँगा है। क्योंकि कभी-कभी शैतान (प्रार्थना में बाधा डालनेवाला) प्रार्थना के परमेश्वर के उत्तर को रोकता या उस में बाधा डालता है (दानिय्येल 10:12-14)।

8. प्रार्थना की शर्तें

अ) दोबारा, विश्वास में प्रार्थना करो, विश्वास करो कि आपको पहले ही मिल चुका है। विश्वास प्रमाण है (मरकुस 11:24)। दृढ़ बने रहो, अपनी आत्मा में विश्वास से पाओ, संदेह मत करो, परन्तु एकमन रहो। (याकूब 16-8; दुचित्ता)।

आ) परमेश्वर की इच्छा के अनुसार प्रार्थना करो। जैसे यीशु मत्ती 25:39 में प्रार्थना करते हैं - जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो। हम उसकी इच्छा स्पष्ट रूप से उसके वचन में पाते हैं, इसलिए उसकी इच्छा के अनुसार प्रार्थना करने का अर्थ है वचन के अनुसार प्रार्थना करना, क्योंकि परमेश्वर अपना या उसके वचन का इन्कार नहीं कर सकता है; इसका उत्तर सदा मिलेगा (1 यूहन्ना 5:14-15)। इसलिए, यदि किसी चीज की वचन से प्रतिज्ञा की

गई है तो मत कहो 'यदि तेरी इच्छा हो तो', परन्तु माँगो, विश्वास करो और पाओ (2 कुरिं. 1:20)। हर बार प्रार्थना करते समय परमेश्वर की इच्छा पर संदेह प्रकट करना प्रार्थनाओं के उत्तर में सबसे बड़ी रुकावट हो सकती है। सब मनुष्य जो परमेश्वर में विश्वास करते हैं, विश्वास करते हैं कि वह सबकुछ कर सकता है। परन्तु कुछ लोग ही विश्वास करते हैं वह सबकुछ कर सकता है, और कुछ ही विश्वास करते हैं उसकी इच्छा है! यह सदा परमेश्वर की इच्छा है कि जो वह इच्छा करता है उसके हर बच्चे को मिले! प्रार्थना सुनी जाएगी, शर्त इतनी है कि विश्वास अटल हो! सब चीजें जो परमेश्वर ने सुसमाचार में प्रतिज्ञा की हैं और प्रबंध की हैं दी जाएँगी - वह सब भी 'जो जीवन और भक्ति से सम्बंध रखता है'। (2 पतरस 1:3-4; भजन 84:11; 2 कुरिं. 1:20)।

इ) आपको उसकी आज्ञाओं का पालन करना है - इसलिए आज्ञापालन (1 यूहन्ना 3:22)।

ई) आपको मसीह में बने रहने की आवश्यकता है; प्रभु के साथ संगत, स्थिर संगति; एक स्थिर सम्बंध विकसित करो (यूहन्ना 15:7)।

उ) पवित्र आत्मा में प्रार्थना करो [7 देखो] (यहूदा 20)।

ऊ) यीशु के नाम में प्रार्थना करो और माँगो [5 देखो] (यूहन्ना 16:24)।

ए) इससे पहले परमेश्वर आपकी प्रार्थनाओं को सुने और उत्तर दे दूसरों को क्षमा करो (मरकुस 11:25)।

ऐ) सही हृदय - अभिप्राय और रवैयों के साथ प्रार्थना करो। क्या यह मसीह की महिमा करेगा?

9. प्रार्थना में बाधाएँ

अ) अविश्वास (याकूब 1:6-7) ['प्रार्थना कैसे करें' में समझाया गया है] ।

आ) क्षमा न करना (मरकुस 11:25) [ऊपर देखो]।

इ) अपराध (भजन 66:18)।

ई) बुरी इच्छा से माँगना, तो गलत अभिप्राय या परमेश्वर की इच्छा से बाहर माँगना (याकूब 4:2-3)।

उ) पाप (यूहन्ना 9:31; यशायाह 59:2)।

10. प्रार्थना में प्रगति

माँगो, खोजो और खटखटाओ (मत्ती 7:7-8)। माँगने के लिए यूनानी शब्द का तात्पर्य है कि आप उसकी माँग कर रहे हैं जो परिवारिक और उद्धार-सम्बंधि अधिकार के कारण आपका हक बनता है। हम यीशु के नाम में वह माँग सकते हैं जो हमारी ओर देय है, क्योंकि मसीह के द्वारा हम परमेश्वर के परिवार के अंग बन गए हैं, हम उसके पुत्र और पुत्रियाँ हैं; हम मेम्ने के लहू के द्वारा मोल लिए गए हैं, और यह परमेश्वर की इच्छा है कि हम माँगें और जो चाहते हैं उसे पाएँ (भजन 84:11)।
अब माँगने का अर्थ है कि एक चाह है; खोजने का तात्पर्य है कि हानि है; खटखटाने का अर्थ है एक आवश्यकता है। इसलिए, भरोसे और दीनता के साथ माँगो, सावधानी और उपयोग के साथ खोजो, उत्सुकता और दृढ़ता के साथ खटखटाओ। और यहाँ परमेश्वर की प्रतिज्ञा है, उत्तर का एक तीन गुणा आश्वासनः मिलता, पाता और खुलता है; सब के लिए, जिसमें आप भी सम्मिलित हैं!

11. प्रार्थनाओं की किस्में

(1 तीमु. 2:1)

* धन्यवाद देनाः कृतज्ञ होना सीखो। आप अपने जीवन के हर दिन प्रभु का किसी न किसी चीज के लिए धन्यवाद दे सकते हो। अपनी सेहत, आपकी आवश्यकताएँ पूरी करने, सुरक्षा, खुशी के समयों, मित्रों, कलीसिया, और निस्संदेह उद्धार, सत्य को जानने के लिए उसका धन्यवाद करो। जाँचों और कठिन समयों के लिए भी परमेश्वर का धन्यवाद करना सीखो (1 थिस्स. 5:18)।

* विनतीः अर्थ है निरन्तर और शक्तिशाली निवेदन जब तक प्रार्थना सुनी नहीं जाती, जैसा लूका 18:1-8, विधवा और न्यायी में है। जैसे अभी समझाया है, माँगो, खोजो और खटखटाओ और आप पाओगे!

* प्रार्थनाः अपने स्वर्गीय पिता से अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने को कहना। और विश्वास द्वारा उत्तर खुद पाना। (फिलि. 4:6-7 देखो, विश्वास द्वारा आप उत्तर के लिए प्रार्थना करते और अपनी आत्मा में पाते हो)। केवल धन्यवाद दो और इसे साकार करने के लिए परमेश्वर के समय की प्रतीक्षा करो। आत्मा में विजय!

* मध्यस्थता: अर्थ है किसी दूसरे की ओर से कार्य करना। सरल शब्दों में - दूसरों के लिए प्रार्थना करना या परमेश्वर के साथ सम्बंध में - निवेदन करना। या दूसरों के लिए मध्यस्थता की प्रार्थना करना जैसा पवित्र आत्मा निर्देश और शक्ति देता है। यहेजकेल 22:30 देखो - कोई नाके में खड़ा रहे; या अब्राहम के समान, सदोम और अमोरा के लिए मध्यस्थता करना (उत्पत्ति 18:20-33); या जैसा मूसा इस्राएल के लिए मध्यस्थता करता है (निर्गमन 32:7-14; भजन 106:23)।
  सच्ची मध्यस्थता वह प्रार्थना है जो पवित्र आत्मा द्वारा परमेश्वर के हृदय से निकलकर हमारे मन में आई है और हमारे हृदय को छूआ है और वापस परमेश्वर के पास लौटी है। यह प्रार्थना, पवित्र आत्मा द्वारा दी गई, विश्वास में की गई है। मध्यस्थता में यीशु के नाम में अविश्वासियों के मनों और इच्छाशक्तिओं पर से शैतान के गढ़ों को ढाने के लिए दृढ़ता अवश्य है।

12. प्रार्थना के लिए विषय

कुछ सामान्य वाक्यांशों के बजाय, जैसे कि 'प्रभु सब को आशीष दे, आमीन!' विशेष और निश्चित चीजों या व्यक्तियों के लिए प्रार्थना करना सीखो। और न हिम्मत हारो और न ही जिस चीज के लिए प्रार्थना की है उसके स्थान पर कुछ और पाकर संतुष्ट हो जाओ। (याकूब 4:2 कहता है "तुम्हें इसलिए नहीं मिलता कि माँगते नहीं!")। सदा प्रार्थना करो कि परमेश्वर की इच्छा जैसा उसके वचन में प्रकट है पूरी होगी। इसलिए, प्रार्थना करो:

- सब मनुष्यों के उद्धार के लिए (1 तीमु. 2:4, और सब मनुष्यों के लिए आय. 1)
- फसल में मजदूर जाने के लिए (मत्ती 9:37-38)
- सुसमाचार के प्रसार के लिए (कुलु. 4:3; 2 थिस्स. 3:1-2)
- सब विश्वासी मसीह में सिद्ध किए जाएँ (कुलु. 1:28)
- कलीसिया में अगुवों के लिए (1 तीमु. 5:17)
- सुसमाचार के लिए सताए हुओं के लिए (इब्रा. 13:3)
- जो आपको सताते और अपने शत्रुओं के लिए (मत्ती 5:44-45)
- राष्ट्रपति, सरकार, सब अधिकारों के लिए (1 तीमु. 2:2)
- रोज की रोटी के लिए (मत्ती 6:11)
- बीमारों के लिए (याकूब 5:14-15)
- परीक्षा और पाप पर विजय के लिए (मत्ती 6:13)
- पापों की क्षमा के लिए (1 यूहन्ना 1:9)
- बुद्धि के लिए (याकूब 1:5)
- मसीह के पुनरागमन के लिए (प्रकाशित. 22:7)

13. सामूहिक प्रार्थना

बाइबल के अनुसार सहमति में सामर्थ्य है (मत्ती 18:19)। और यहाँ कोरी प्रतिज्ञा है: "किसी बात के लिए" माँगे - "हो जाएगी।" इसलिए अच्छा है कि दूसरे विश्वासियों के साथ मिलकर या समूहों में प्रार्थना करें। एकता में सामर्थ्य है। हम इस सिद्धान्त को उत्प. 11:6, बेबिलोन का गुम्मट में देखते हैं। इसलिए, जब आप एक समूह में प्रार्थना करने को इकट्ठा होते हो तो प्रार्थना करने से पहले आवश्यकताओं को बताओ, और उसके बाद, पवित्र आत्मा के अभिषेक में, उन विनतियों को स्वर्गीय पिता के सामने प्रार्थना में लाओ।

कुछ उपयोगी बातें हैं:

- जब आप समूह में प्रार्थना करते हैं, तब अकेले ही 20 मिनट के लिए प्रार्थना न करें, परन्तु संक्षिप्त और चुस्त रखो - प्रार्थना सामर्थी होगी क्योंकि हम सब सहमत हैं, और इस प्रकार दूसरों को भी प्रार्थना का अवसर मिलेगा!
- जब प्रार्थना में हों तब इच्छाशक्ति को उपयोग करके इसका भाग बने रहें, और अपने मन या ध्यान को भटकने न दें।
- दूसरों को प्रार्थना करते सुनो और सहमत हो, सहमति में धीमे-धीमे प्रार्थना की जा सकती है।

- आत्मा में बने रहो; विषय के अनुसार प्रार्थना करो; इधर-उधर मत भागो, परन्तु गहराई के साथ चीजों के लिए प्रार्थना करो।
- प्रार्थना करते समय निश्चिन्त रहो - जो पवित्र आत्मा मन में डालता है उसे बोलो।
- अनुशासित रहो; मत सोचो कि दूसरे प्रार्थना कर लेंगे; इसलिए अपना मुँह खोलकर परमेश्वर को पुकारो।

14. <u>कुछ प्रार्थना की प्रतिज्ञाएँ</u>

यूहन्ना 15:7; मरकुस 11:24; भजन 50:15; भजन 55:17-18; भजन 86:7; मत्ती 7:7-8; यशायाह 65:24; यूहन्ना 14:14; भजन 91:15; 1 यूहन्ना 3:21-22; 1 यूहन्ना 5:14-15; मत्ती 21:22; लूका 11:9-13; रोमियों 8:32; इफि. 3:20; इब्रा. 4:16; फिलि. 4:6-7।

15. <u>प्रार्थना और उपवास</u> [कुछ सुर्खियाँ]

- उपवास और प्रार्थना अविश्वास का इलाज हैं (मत्ती 17:20-21)।
- उपवास का अर्थ है भोजन (ठोस/नरम उपवास), जो मनुष्यजाति के पतन का कारण हुआ था, से परहेज करना; सम्भवतः पानी, विश्राम, नींद, संगति से भी क्योंकि यह बलिदान है।
- गलत उपवासः बिना सच्चे हृदय से एक बाहरी उपवास का दिखावा (यशायाह 58:3-5)।
- सही उपवासः (यशायाह 58:6-9); देखो प्रभु ने मत्ती 6:16-18 में क्या कहा है।
- उपवास सदा प्रार्थना और वचन के पढ़ने के साथ होता है - आत्मिक रूप से अच्छा है (मत्ती 4:4); यह प्राण का दीन करना है (भजन 35:13)।
- उपवास कुछ ऐसा है जिस के लिए आपको प्रार्थना, मनन या परमेश्वर की इच्छा का पता लगाने के एक ऊँचे आत्मिक क्षेत्र में पहुँचने के लिए करना चाहिए - (यशायाह 58:11)। [परीक्षा / शरीर को जीतना।]
- उपवास आपके शरीर के लिए बहुत अच्छा है : आपका पाचन तन्त्र सब विषैले तत्त्वों से शुद्ध किया जाता है और विश्राम पाता है, उपवास के द्वारा आपके दिमाग के आस-पास लहू बढ़ता है और सोचने में अधिक स्पष्टता देता है (परीक्षाओं के लिए अच्छा है); एक स्पष्ट मन से आप अधिक तर्कसंगति सोच सकोगे और बेहतर मूल्याँकन कर सकोगे!
- अनेक लोग बहुत अधिक खाते हैं - उनके अंग सुस्त होते हैं और वे आत्मा को बुझाते हैं। (फिलि. 3:18-19 देखो, उनका ईश्वर पेट है!)।
- मूसा, यहोशू, एलिय्याह और यीशु, सब ने 40 दिन का उपवास किया था।
- उपयोगी बातेंः जब तुम उपवास करने लगो, तो बहुत लम्बे समय तक उपवास मत करो; अधिक मेहनत मत करो [प्रार्थना और उपवास, काम और उपवास नहीं]।
- लम्बे समय के उपवास के लिएः कुछ अधिक नींद लो और पर्याप्त पानी पीओ; दूसरों के पास मत जाओ जहाँ भोजन करना पड़े।
- [लम्बे उपवास के दौरानः पहले दो या तीन दिन तक कठिनाई होती है - भूख लगती है, कमज़ोरी, थोड़ी सरदर्द; सामान्य बात है; उसके बाद भूख और भोजन की भावना चली जाती है।] उपवास तोड़ने में सावधान रहें, उपवास तोड़ने में भी उतना ही समय लें जितना उपवास के लिए लिया था - फलों के रस, सूप, सब्जियाँ और दूसरे हलके भोजन के साथ तोड़ें (दूध के साथ नहीं)।

<u>उपवास कब करें:</u>

- जब आप प्रभु के साथ अपनी चाल में नीरस महसूस करते हो - ताज़गी लाता है।
- बहुत अधिक शक्तिशाली शारीरिक इच्छाओं को सामान्य बनाता है/आदतों को तोड़ता है।
- जूए को तोड़ता है (यशायाह 58:4-6)।
- पश्चाताप दिखाने के लिए (1 राजा 21:19-27)।
- आवश्यकता में (एज्रा 8:21-23)।
- खतरे में (एस्तेर 4:3, 16)।
- आत्मिक युद्ध में - यीशु के समान (मत्ती 4:1-11)।
- जब महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने हैं/प्रभु की इच्छा का पता लगाना है (प्रेरितों 13:3; न्यायियों 20:26)।
- एल्डरों को नियुक्त करने से पहले (प्रेरितों 14:23)।

- समझ और प्रकाश पाने के लिए (दानि. 9:3-6, 20-23)।

मत्ती 9:15 के अनुसार, हर विश्वासी को उपवास करना चाहिए, परन्तु इसे कभी भी नित्यक्रम या यान्त्रिक नहीं बनना चाहिए; इसे पवित्र आत्मा द्वारा उत्तेजित किया होना चाहिए और उसकी बताई अवधि के लिए किया जाना चाहिए।

16. प्रार्थना और आत्मिक युद्ध

आत्माओं की परख के वरदान के लिए परमेश्वर का धन्यवाद हो जो उसने हमें दिया है। और परख के लिए प्रार्थना करो, क्योंकि यह एक ऐसी चीज है जिसकी हमें सबसे अधिक आवश्यकता है। और प्रार्थना में भी आपको पता लगाना है कि आपकी प्रार्थना का उत्तर नहीं मिलने का कारण, आप परमेश्वर की इच्छा के बाहर प्रार्थना कर रहे हैं या शैतान उत्तर को रोक रहा है।

अब शैतान के साथ प्रार्थना में युद्ध करने को आत्मिक युद्ध कहते हैं (इफि. 6:12)। शैतान को हमारा लाभ उठाने से रोकने की जिम्मेवारी हमारी है। शैतान का एक ही उद्देश्य है चोरी करना/घात करना और नष्ट करना (यूहन्ना 10:10; 1 पतरस 5:8)। और एक तरीका है प्रार्थना के उत्तरों में बाधा डालना (दानिय्येल 10:12-21)। मसीह में हमारे पास सारा अधिकार है, खोलने और बाँधने का, और अपनी प्रार्थना का उत्तर पाने का! (मत्ती 18:18; 16:19; 18:19)।

शिष्यता की एक मूल संक्षिप्त भूमिका

विषय 1: उद्धार का आश्वासन

प्रशिक्षण का लक्ष्य: वह दूसरे व्यक्ति को विश्वास के साथ अपने उद्धार का आश्वासन जो मसीह में उसके विश्वास पर आधारित है और वचन से एक या अधिक प्रतिज्ञाएँ बता सकेगा।
पवित्रशास्त्र:

1 यूहन्ना 5:13	हम जान सकते हैं हम मसीही हैं
यूहन्ना 1:12-13	मसीह के कार्य पर आधारित
1 यूहन्ना 5:11-12	वचन की प्रतिज्ञा
रोमियों 8:16	आत्मा की गवाही

विषय 2: भक्ति का समय

लक्ष्य: उसका प्रतिदिन का भक्ति का समय होगा, जिसमें वचन का पढ़ना और प्रार्थना सम्मिलित होते हैं।
पवित्रशास्त्र:

मरकुस 1:35	यीशु का उदाहरण
उत्पत्ति 19:27	अब्राहम का उदाहरण
निर्गमन 34:2-3	मूसा का उदाहरण
भजन 5:3	दाऊद का उदाहरण
दानिय्येल 6:10	दानिय्येल का उदाहरण
1 कुरिं. 1:9	यीशु के साथ संगति के लिए बुलाए गए

विषय 3: पाप पर विजय

लक्ष्य: वह जानता है पवित्र आत्मा पर निर्भर होकर और परमेश्वर के वचन की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करके परीक्षाओं पर विजय कैसे अनुभव करनी है। इसका प्रमाण एक निश्चित परीक्षा पर एक हाल की विजय की उसका एक स्पष्ट गवाही से मिलता है।
पवित्रशास्त्र:

1 कुरिन्थियों 10:13	बचाव के मार्ग की प्रतिज्ञा
1 कुरिंन्थियों 15:57	यीशु द्वारा विजय
यशायाह 41:13	परमेश्वर की सहायता की प्रतिज्ञा

विषय 4: पाप से विच्छेद

लक्ष्य: वह पाप से अलग होने के इससे दूर रहकर, 2 कुरिं. 617-18 जैसे वचन याद करके, इसके लिए प्रार्थना करके और दूसरों से प्रार्थना माँगकर कदम उठा रहा है। 2 कुरिं. 6:14-16 भी देखो।
पवित्रशास्त्र:

1 यूहन्ना 1:5 - 2:2	ज्योति में चलना
याकूब 1:12	परीक्षाओं में दृढ़ रहना
2 तीमुथियुस 2:19-20	पाप से बचे रहना
रोमियों 6:12-14	पाप का हम पर अधिकार नहीं होना चाहिए
1 यूहन्ना 2:15-16	हमें संसार से प्रेम नहीं करना चाहिए
रोमियों 12:2	संसार के सदृश मत बनो

विषय 5: मसीही संगति

लक्ष्यः वह एक कलीसिया, एक बाइबल अध्ययन समूह, और एक प्रार्थना समूह में जाता है और उनका एक अंग है।
पवित्रशास्त्रः

प्रेरितों 2:42	प्रारम्भिक कलीसिया का उदाहरण
1 यूहन्ना 1:3	इकट्ठी संगति
इब्रानियों 10:24-25	संगति छोड़नी नहीं
भजन 122:1	कलीसिया में खुशी से जाना

विषय 6: बाइबलः

सुननाः रोमियों 5:6
पढ़नाः प्रकाशित. 1:3
अध्ययन करनाः प्रेरितों 17:11
याद करनाः भजन 119:11
मनन करनाः भजन 1:2

लक्ष्यः वह बाइबल की पुस्तकों को सीख रहा है और इसकी प्रेरणा में उसके विश्वास को खुलेआम बताता है।
पवित्रशास्त्रः

2 तीमुथियुस 3:16-17	बाइबल की प्रेरणा
2 पतरस 1:21	बाइबल परमेश्वर की इच्छा से आई है
मरकुस 22:29	पवित्रशास्त्र नहीं जानने का खतरा
भजन 19:7-11	परमेश्वर के वचन के वर्णन
भजन 119:160	वचन सच्चा और अनन्त है
भजन 119:105	यह एक दीपक और ज्योति है

विषय 8: वचन पढ़ना

लक्ष्यः वह बाइबल क्रमानुसार पढ़ेगा।
पवित्रशास्त्रः

नीतिवचन 28:9	ध्यानपूर्वक पढ़ो
यिर्मयाह 22:29	वचन सुनने का बुलावा
लूका 19:48	रोजाना पढ़ने की आवश्यकता

विषय 9: बाइबल अध्ययन

लक्ष्यः वह अपना व्यक्तिगत बाइबल अध्ययन नियमित समय पर समाप्त करता है।
पवित्रशास्त्रः

प्रेरितों 17:11	बाइबल अध्ययन के लिए प्रशंसा
नीतिवचन 2:1-5	अध्ययन खजाना खोजने जैसा है
एज्रा 7:10	एज्रा का उदाहरण

विषय 10: पवित्रशास्त्र याद करना

लक्ष्यः वह नियमित पवित्रशास्त्र याद करता है और उनका उपयुक्त पुनरीक्षण करता रहता है।
पवित्रशास्त्रः

कुलुस्सियों 3:16	याद करना हमें पुष्ट बनाता है
व्यवस्थाविवरण 6:6-7	मूसा वचन याद करने को प्रोत्साहन देता है
मत्ती 4:4	मसीह का उदाहरण

भजन 37:31	यह महत्ता देता है
नीतिवचन 7:1-3	हृदय पर लिखा जाना चाहिए

विषय 11: वचन पर मनन

लक्ष्यः वह मनन का अर्थ और एक हाल के कंठस्थ आयत पर मनन की व्यक्तिगत आशीष के विषय में बता सकेगा।
पवित्रशास्त्रः

भजन 1	मनन के परिणाम
यहोशू 1:8	मनन करनेवाले को प्रतिज्ञाएँ
यिर्मयाह 15:16	मनन के लिए मानसिक अनुशासन

विषय 12: वचन का उपयोग

लक्ष्यः वह एक या अधिक उपयोग को लिख कर और समाप्त करके परमेश्वर के वचन को उपयोग करने की इच्छा दिखाता है।
पवित्रशास्त्रः

याकूब 1:22-25	उसे वह करना चाहिए जो वचन कहता है
भजन 119:56, 60	मनन उपयोग में ले जाता है
2 तीमुथियुस 3:16-17	परमेश्वर का वचन जीवन के लिए लाभकारी है
लूका 6:46-49	आज्ञापालन एक निश्चित नींव है

विषय 13: प्रार्थना

लक्ष्यः वह रोजाना कम से कम दस मिनट प्रार्थना करके और प्रार्थना समूहों में विश्वास के साथ भाग लेकर एक संगत प्रार्थना का जीवन दिखाता है।
पवित्रशास्त्रः

1 थिस्स. 5:17	निरन्तर प्रार्थना करते रहो
मत्ती 6:6	एकान्त में प्रार्थना करो
यूहन्ना 17	मसीह का उदाहरण
याकूब 5:17	प्रार्थना परिणाम लाता है
फिलिप्पियों 4:6-7	व्यक्तिगत चिन्ताओं के लिए प्रार्थना
मत्ती 21:2	विश्वास में प्रार्थना
1 यूहन्ना 3:22	प्रार्थनाओं के उत्तर के लिए शर्त आज्ञापालन है
मत्ती 7:7	माँगते, खोजते, खटखटाते रहो
इफिसियों 6:18	सन्तों के लिए सब समय प्रार्थना करो

विषय 14: व्यक्तिगत गवाही

लक्ष्यः उसने एक तीन मिनट की व्यक्तिगत गवाही तैयार की है, जिसमें एक पवित्रशास्त्र सम्मिलित है, और एक महिने के अन्दर कम से कम दो गैर-मसीहियों को सुनाई है।
पवित्रशास्त्रः

लूका 8:38-39	एक परिवर्तित जीवन चित्रित करना
प्रेरितों 26:1-23	पौलुस की गवाही
यूहन्ना 9:25	अंधे व्यक्ति की गवाही जो चंगा हो गया था
1 यूहन्ना 1:3	जो आपने अनुभव किया है घोषित करो

विषय 15: मसीह की प्रभुता

लक्ष्यः वह मसीह को उसके जीवन के कम से कम एक अनियंत्रित क्षेत्र को नियंत्रित करने देकर मसीह की प्रभुता की ओर वचनबद्धता प्रकट करता है।
पवित्रशास्त्रः

लूका 6:46	मसीह की ओर आज्ञापालन एक आवश्यकता
रोमियों 12:12	निर्णायक वचनबद्धता की आवश्यकता
कुलुस्सियों 1:10	मसीह श्रेष्ठ होना चाहिए
इब्रानियों 1:2	मसीह सब चीजों का वारिस है, हम भण्डारी हैं

विषय 16: विश्वास

लक्ष्यः वह निश्चित आवश्यकताओं के लिए परमेश्वर पर भरोसा करने का प्रमाण देता है
पवित्रशास्त्रः

इब्रानियों 11:6	विश्वास बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना असम्भव है
इफिसियों 6:16	विश्वास शैतान पर विजय देता है
1 यूहन्ना 5:4	विश्वास संसार को जीत लेता है
रोमियों 4:20-21	विश्वास परमेश्वर की महिमा करता है

विषय 17: प्रेम – "अगापे" (बलिदान वाला प्रेम)

लक्ष्यः वह दूसरों के लिए चिन्ता दिखाकर, एक प्रेमी तरीके से कार्य करके और किसी जरूरतमंद व्यक्ति के लिए कुछ करके (कम से कम सप्ताह में एक बार) उनसे प्रेम करता है।
पवित्रशास्त्रः

यूहन्ना 13:34-35	प्रेम की आज्ञा
1 यूहन्ना 3:17-18	प्रेम दूसरों की आवश्यकताओं को पूरा करता है
यूहन्ना 15:13	प्रेम का अर्थ सम्पूर्ण बलिदान है
1 कुरिन्थियों 13:4-8	दूसरों से प्रेम कैसे करें
1 यूहन्ना 4:7-21	हमें एक दूसरे से प्रेम करना है

विषय 18: जीभ

लक्ष्यः वह अपनी जीभ पर नियंत्रण दिखाता है।
पवित्रशास्त्रः

इफिसियों 4:29	उन्नति करनेवाले शब्द ही बोलो
नीतिवचन 26:20	चुगलखोर मत बनो
नीतिवचन 18:6-7	एक मूर्ख का मुँह उसके लिए फँदा है
भजन 71:15	मुँह परमेश्वर की स्तुति करने के लिए है
कुलुस्सियों 4:6	अनुग्रहकारी शब्द बोलो
याकूब 1:26	नकारात्मक शब्दों को वश में रखो
याकूब 3:1-12	अनियंत्रित जीभ के खतरे

विषय 19: समय का उपयोग

लक्ष्यः वह एक कार्यक्रम बना कर और उस पर चल कर अपने समय के प्रभावशाली उपयोग में वृद्धि दिखाता है।
पवित्रशास्त्रः

इफिसियों 5:15-17	समय को कीमती जानना

भजन 90:10-12	समय की योजना बनाना
सभोपदेशक 3:1	समय की प्राथमिकता
याकूब 4:14	जीवन की अल्पता
रोमियों 13:11	समय की अत्यावश्यकता
नीतिवचन 31:27	समय वर्बाद नहीं करना

विषय 20: परमेश्वर की इच्छा

लक्ष्यः वह दिखाता है कि उसने परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए बाइबल के सिद्धान्तों को इस्तेमाल करके कैसे एक मुख्य फैसला किया है।

पवित्रशास्त्रः

भजन 119:105	परमेश्वर के वचन के द्वारा निर्देश
नीतिवचन 15:22	भक्तिपूर्ण सलाह पाना
यूहन्ना 16:13	हमारे जीवनों में पवित्र आत्मा की सेवा
रोमियों 12:12	परमेश्वर की इच्छा अच्छी, मनोहर, सिद्ध है
कुलुस्सियों 3:15	हमारे हृदयों में इसके विषय में प्रभु की शान्ति

विषय 21: आज्ञापालन

लक्ष्यः बाइबल अध्ययन के उपयोगों का पालन करके वह दिखाता है कि वह एक आज्ञाकारी मसीही / विश्वासी बनना सीख रहा है।

पवित्रशास्त्रः

यूहन्ना 14:21	प्रेम आज्ञापालन द्वारा प्रमाणित होता है
अय्यूब 17:9	निरन्तर आज्ञापालन द्वारा गुण पैदा होते हैं
यूहन्ना 15:10, 14	आज्ञापालन फल लाता है और परमेश्वर को प्रसन्न करता है
1 शमूएल 15:22	आज्ञापालन बलिदान से बेहतर है
भजन 119:59-60	परमेश्वर तात्कालिक आज्ञापालन चाहता है
याकूब 4:17	आज्ञोल्लंघन पाप है
यूहन्ना 14:23	आज्ञापालन के लिए इनाम

विषय 22: पवित्र आत्मा

लक्ष्यः वह पवित्रशास्त्र द्वारा बता सकता है कि पवित्र आत्मा कौन है और वह हमारे रोजाना के जीवन में किस प्रकार सहायता करता है। वह दूसरे व्यक्ति को समझा सकता है कि आत्मा में कैसे जीना है।

पवित्रशास्त्रः

यूहन्ना 14:16-17	वह सहायक है
रोमियों 8:26	वह प्रार्थना करने में हमारी सहायता करता है
यूहन्ना 16:7-8	पवित्र आत्मा की सेवा
गलातियों 5:22-23	आत्मा के फल
इफिसियों 5:18	आत्मा से भरते रहो
रोमियों 8:5-6	आत्मा और शरीर का संघर्ष
रोमियों 12:3-8	पवित्र आत्मा के वरदान
1 कुरिं. 12:13-14	आत्मा की सेवा
जकर्याह 4:6	पवित्र आत्मा की सामर्थ्य
रोमियों 8:16-17	आत्मा हमारी गवाही देता है
यूहन्ना 16:13-15	आत्मा मसीह की महिमा करता है
यूहन्ना 15:26-27	आत्मा की गवाही

विषय 23: शैतान, अपने शुत्र को जानो

लक्ष्यः वह प्रार्थना और पवित्रशास्त्र द्वारा शैतान पर व्यक्तिगत विजय के उदाहरण देता है। उसने बताया है कि उसने वचन को उपयोग करके उसके जीवन में शैतान के आक्रमणों को कैसे जीता है। वह अपने आत्मिक शत्रु के रूप में शैतान के विरुद्ध प्रार्थना करता है।

पवित्रशास्त्रः

इफिसियों 6:10-18	युद्ध के लिए आत्मिक हथियार
2 कुरिन्थियों 10:3-5	हमारे हथियार शारीरिक नहीं हैं
1 यूहन्ना 4:4	शैतान की शक्ति सीमित है
1 पतरस 5:8-9	शत्रु के रूप में शैतान का कार्य
यूहन्ना 8:44	शैतान एक झूठा है
यशायाह 14:12-15	शैतान का पतन
1 यूहन्ना 3:8	शैतान के कार्य नष्ट हैं
2 कुरिन्थियों 4:3-4	शैतान की चाल
2 कुरिन्थियों 2:11	हम शत्रु को जान सकते हैं
मत्ती 4:4	शत्रु को जीतने के लिए वचन का उपयोग

विषय 24: पाप से निपटना

लक्ष्यः उसने उसके जीवन में पाप के एक मुख्य क्षेत्र का पता लगाया है, विजय प्राप्त करने की एक योजना बनाई है और पाप में बना नहीं रहना चाहता है।

पवित्रशास्त्रः

कुलुस्सियों 3:9-10	एक नया जीवन जीओ
1 पतरस 1:14-16	पवित्र व्यवहार आवश्यक है
इफिसियों 6:10-20	परमेश्वर के सारे हथियार
रोमियों 13:14	मसीह पर भरोसा
मरकुस 14:38	जागते और प्रार्थना करते रहो
1 यूहन्ना 1:9	पाप स्वीकार करना

विषय 25: क्षमा का आश्वासन

लक्ष्यः वह वचन की एक या अधिक प्रतिज्ञाओं पर आधारित उसके क्षमा के आश्वासन के विषय में दूसरे व्यक्ति को विश्वास के साथ बता सकेगा।

पवित्रशास्त्रः

1 यूहन्ना 1:9	पाप स्वीकार करने के द्वारा क्षमा
भजन 32:1	क्षमा की धन्यता
मत्ती 5:23-24	क्षतिपूर्ति की आवश्यकता
मत्ती 18:15	क्षतिपूर्ति की आवश्यकता

विषय 26: मसीह का पुनरागमन

लक्ष्यः उसने मसीह के लौटने के विषय में नई जानकारी व्यक्त की है और इससे सम्बंधित बाइबल के वचन बता सकता है।

पवित्रशास्त्रः

1 थिस्स. 4:16-17	मसीह की लौटने की प्रतिज्ञा
यूहन्ना 14:2-3	वह हमारा स्वागत करेगा
1 यूहन्ना 3:2-3	हमारे जीवनों के लिए चुनौती
तीतुस 2:11-14	भक्तिपूर्ण जीवन जीओ

प्रकाशित. 19:11-16	उसका महिमा में आना

विषय 27: गवाह होना

लक्ष्य: वह वचन को इस्तेमाल करके सुसमाचार सुनाने की पहल करता है।

पवित्रशास्त्र:

कुलुस्सियों 1:28-29	मसीह को स्वाभाविक रूप से घोषित करो
रोमियों 1:16	सुसमाचार से लज्जित नहीं
2 तीमुथियुस 4:1-2	सब समय मसीह को घोषित करो
नीतिवचन 11:30	बुद्धिमान लोगों को जीतते हैं
प्रेरितों 8:35	सुसमाचार सुनाने के लिए बाइबल इस्तेमाल करो
नीचिवचन 28:1	साहस आवश्यक है
1 कुरिन्थियों 15:3-4	सुसमाचार का वर्णन
यूहन्ना 4	यीशु और सामरिया की स्त्री का उदाहरण
लूका 19:10	पापियों को खोजो

विषय 28: फालो-अप

लक्ष्य: उसने प्रार्थना करना आरम्भ किया है कि परमेश्वर उसे एक व्यक्ति फालो-अप करने और चेला बनाने के लिए देगा।

पवित्रशास्त्र:

कुलुस्सियों 1:28	हर मनुष्य को मसीह में सिद्ध प्रस्तुत करें
3 यूहन्ना 4	लोगों को परमेश्वर के साथ चलते देखने का आनन्द
2 तीमुथियुस 2:2	एक विश्वासयोग्य व्यक्ति को चेला बनाना सिखाना
2 तीमुथियुस 1:3	फालो-अप में प्रार्थना

विषय 29: देना

लक्ष्य: वह प्रभु के काम के लिए नियमित देता है।

पवित्रशास्त्र:

नीतिवचन 3:9-10	पहले परमेश्वर को दो
2 कुरिन्थियों 9:6-8	आनन्द के साथ दो
लूका 6:38	देने की आशीषें
नीतिवचन 3:27	जब दे सकते हो दो
गलातियों 6:6	आत्मिक अगुवों के साथ चीजों को बाँटो
मलाकी 3:10	दो और परमेश्वर की आशीषें पाओ
नीतिवचन 11:24-25	उदार व्यक्ति आशीष पाता है
2 कुरिं. 8:9	हालाँकि वह अमीर था, मसीह हमारे लिए गरीब बना

विषय 30: संसार का दर्शन

लक्ष्य: वह मिशनरियों और विदेशों में जनजातियों के लिए प्रार्थना में भाग लेकर संसार के दर्शन में एक रुचि और चिन्ता दिखाता है। वह एक विदेशी मिशनरी के मासिक सहयोग में देता है (भजन 2:8)।

पवित्रशास्त्र:

मत्ती 9:35-38	संसार के खेत में मजदूरों के लिए प्रार्थना करो
मत्ती 28:19-20	सब जगह चेले बनाओ
प्रेरितों 1:8	पृथ्वी की छोर तक जाओ
मरकुस 16:15	सब को सुसमाचार प्रचार करो
लूका 24:47	सब देशों में जाओ
यूहन्ना 20:21	उसके सफल मिशन पर आधारित यीशु की हमारे लिए नियुक्ति

शिष्टाचार उत्पन्न करना

शिष्टाचार के बिना एक व्यक्ति एक बिना दाँत के मनोहर पुरुष के समान या एक सुन्दर परन्तु गँजी स्त्री के समान है। एक पार्टी में एक अविराम बकवादी आपका सर पका देता है और लगता है कि न आए होते तो अच्छा था। आप सब बारीकियाँ भूल जाते हो और केवल अशिष्टता याद रहती है जो हमें बुरी भावना के साथ छोड़ जाती है। सुखद शिष्टाचार के बिना, कोई भी यीशु के समान "मनुष्यों के अनुग्रह" में नहीं बढ़ सकता है। इसलिए कुछ मूल शिष्टाचार की जानकारी होना अच्छा है। एक ही चीज याद रखने की होगी कि किसी ने आँख मारी थी। परन्तु जैसे हम अच्छे शिष्टाचार को सीखेंगे और अशिष्टाचार को छोड़ेंगे तो हमारी लोकप्रियता का ग्राफ बढ़ता जाएगा।

व्यक्तिगत आदतें

एक बहुत शर्मीले व्यक्ति में आत्म-विश्वास की कमी होती है और दूसरों के साथ मुक्त भाव से सम्बंध नहीं बना पाता है। व्यक्ति की आँखों में आँखें डालकर देखना और बेखटके बात करना सीखो। रोजाना स्नान करो और नए कपड़े पहनो। पुरुषों के लिए एक स्पष्ट हजामत अवश्य है। सर खुजाना और सर में लीखें अशोभनीय दृश्य हैं। गंदे लम्बे नाखुन और सियाही से रंगी अँगुलियाँ आँख के काँटे हैं। आप उस व्यक्ति के विषय में क्या सोचेंगे जो नाक साफ करने के लिए अपनी अँगुलियाँ इस्तेमाल करता है और फिर दरवाजे या खम्बे से लगा देता है? रुमाल इस्तेमाल करो। बारी बारी से नाक, दाँत या कान में अँगुली मत डालो। यदि आप एक जँभाई, छींक या खाँसी रोक नहीं पाते हो तो अपने मुँह पर रमाल रखो। विशेषकर आजकल आप जानते नहीं कौन आप पर वीडियो कैमरा लगा देगा!

जब आप चलते, बैठते या खड़े होते हो तो अपने मुद्रा पर ध्यान दो। आपकी रीढ़ की हड्डी सीधी रहे। किसी को टाँगें फैलाए हुए बैठे या फटीचर गुड़िया के समान खड़े देखना अच्छा नहीं लगेगा। परन्तु आरामदेह रहो। एक बनावटी मुस्कान या उच्चारण बनाए हुए संकोची मत बनो। स्वाभाविक बनो। अधिक मेक-अप व्यक्ति को विकृत दिखावट देता है। जब घर से निकलते हो तो एक दुल्हा या दुल्हिन के समान चुस्त होना चाहिए। हर दिन शिष्टता का अभ्यास करो जब तक यह आपका दूसरा स्वभाव नहीं बन जाता।

घर

कभी-कभी घर से बाहर सबसे अच्छे शिष्टचार वाले व्यक्ति घर में सबसे अशिष्ट होते हैं। एक सच्चे सज्जन पुरुष या स्त्री को घर में चाहे मेहमान उपस्थित हैं या नहीं शिष्टाचार वाले होना चाहिए। सुबह सबसे पहला काम बिस्तर बनाना आपको सारा दिन एक अच्छी भावना देगा। कल परख कर देख लो। सुबह के प्रक्षालन के बाद, एक डाइन के समान चलने-फिरने के बजाय अपने बाल बनाओ। कंघी में से बालों को निकालो, एक अँगुली पर लपेटो और कूड़ादान में फेंक दो। तब दूसरे कामों में लग जाओ। शौचालय साफ किया जाना और दाग मिटाए जाने चाहिए। अपने बच्चों को कभी भी सड़क किनारे पेशाब या पैखाना करने मत भेजो!

गीले तौलिये को बाथरूम में एक ढेर के रूप में फर्श पर मत छोड़ दो परन्तु सुखाने के लिए अच्छी तरह रस्सी पर डालो। गंदे कपड़ों को सही स्थान में डाल दो। यदि आप बाथरूप के फर्श पर अपना नाक या गला साफ करते हो तो बाथरूम में से निकने से पहले साफ कर दो। यदि एक ही बाथरूम है तो दूसरों के विषय में भी सोचो।

याद रखने के लिए एक अच्छा नियम है परिवार के सदस्यों को मेहमान समझना। वाद-विवादों से बचा नहीं जा सकता है। परन्तु उन्हें मर्यादा पार नहीं करनी चाहिए। पत्नी और बच्चों को भावनाओं वाले मनुष्यों के बजाय चीजों के समान समझना क्रूरता है। उसी प्रकार पत्नी और बच्चे जो घर के प्रमुख की ओर गैर-अधीनस्थ हैं घृणास्पद होते हैं। 'मुझे खेद है', 'कृपया' और 'धन्यवाद' उदारता और निर्लज्जता के साथ उपयोग करना सीखो।

हर व्यक्ति के एकान्त का आदर किया जाना चाहिए। किसी के कमरे में घुसने से पहले खटखटाओ और जब तक बुलाए नहीं जाते प्रतीक्षा करो। खुले दरवाजों और खिड़कियों में से झाँकना या दूसरों की बातें छिपकर सुनना सही नहीं है। दूसरे व्यक्ति के पत्र खोलना या डायरी पढ़ना भरोसे और गोपनीयता का एक अत्यधिक उल्लंघन है। अपनी जिज्ञासा को नियंत्रण में रखो। बिना अनुमति के दूसरों की चीजों को इस्तेमाल मत करो। बच्चों को प्रतिक्रिया करना सिखाया जाना चाहिए। जब माता-पिता बुलाते हैं तब 'हाँ' के बजाय 'हाँ पापा' या 'हाँ मम्मी' बोलना चाहिए। उन्हें चिल्लाने और शिकायत करने के बजाय अनुकूल बनना सिखाया जाना चहिए।

एक दूसरे पर कठोर मजाक नहीं किए जाने चाहिए। बच्चों के लिए घर में इधर-उधर चीजें फेंकना और मम्मी से अपेक्षा करना कि वह उठाती फिरेगी अच्छा नहीं है। जैसे वे बड़े होते जाते हैं उन्हें अपनी देखभाल करना सीखना चाहिए, जैसे उनके कपड़े धोना, घर की सफाई करना और कुछ खाना पकाना भी; नहीं तो उपद्रवी बन जाएँगे।

लोगों से मिलना

जब आप किसी से मिलते हैं, तो कहो, "हैलो, आप कैसे हैं ?" या भारत में हम "नमस्कार" भी कह सकते हैं। यदि आप बैठे हैं तो परिचय करवाते समय आपको उठकर नमस्कार करना चाहिए। जब आप किसी से मिलते हैं तब जो आपके साथ है उसका परिचय करवाना शिष्ट होगा।

बातचीत

निश्चिन्त रहो। अपनी आवाज अनुकूल बनाओ। दंभ-भरा निरंकुश बनने से बचो। दूसरों को भी बोलने दो। यदि दूसरा शर्मीला व्यक्ति है तो उसे एक प्रश्न पूछकर या उसका विचार माँगकर उसे भागी होने के लिए प्रोत्साहित करो। रुख के साथ सुनो और उत्तर दो। किसी को झिड़कना या शेखी मारना अभद्र होगा। यदि आपने अपने अविवेकी शब्दों के द्वारा नाराज़ किया है तो सच्चे दिल से क्षमा माँगने से हिचकाए नहीं। असहमति भी बिना नाराज किए व्यक्त की जा सकती है। "मैं-पहले-से-जानता-हूँ" रवैया एक मित्र के चेहरे पर ठण्डा पानी डालने जैसा है। वाक्यों या शब्दों के बीच 'अ' कहने से बचो।

आलोचना बातचीत को ठण्डा कर देती है। "आलोचना के हर टुकड़े को प्रशंसा के दो सतहों के बीच रखो।" अश्लील शब्द हमारे शब्दकोष में से निकल जाने चाहिए। लड़ाइयाँ और शब्दों का उपद्रवी आदान-प्रदान असभ्य है और वे मसीहियों को भी क्रुद्ध करते हैं। संयम सीखो। उत्तेजित होने पर मारने की चेष्टा से हाथ उठाना और थूकना असभ्य व्यवहार के लक्षण हैं। बच्चों को चिल्लाना नहीं परन्तु अमीर या गरीब, सब के साथ शिष्टता के साथ बात करना सिखाना चाहिए। लड़के और लड़कियों को मित्रता के साथ बातें करना सीखना चाहिए।

जब वहाँ कोई होता है जो भाषा नहीं समझता है, तब एक सामान्य भाषा इस्तेमाल करो; या जब ऐसा सम्भव न हो तब उसका पड़ोसी उसे जो हो रहा है उसका विवरण दे। एक साथ फुसफुसाना चिढ़ पैदा कर सकता है। यदि आप को एक समूह में से उठकर जाना हो या एक बातचीत में टोकना हो तो क्षमा माँग लीजिए। यदि आमन्त्रित न किए गए हो तो एक बातचीत में शामिल मत हो जाओ। परन्तु अपनी सहज बुद्धि इस्तेमाल करो। छोटी-छोटी बातों के लिए नाराज हो जाना मूर्खता है। यह सबको अशांत करता है। परमेश्वर के अनुग्रह से इसे जीत लो। परन्तु अतिसंवेदनशील विषयों को मत छेड़ो, और बच्चों या बड़ों, सबको व्याकुल करने से बचो। दूसरों को उनके विषय में अच्छा महसूस कराओ।

भोजन

भोजन की मेज के शिष्टाचार सीखना महत्त्वपूर्ण है। भोजन परोसे जाने तक प्रतीक्षा करो। बदले में यदि बेकार बैठे हो तो सहायता कर सकते हो। अब समय आ गया है कि पुराने निवाज को बदला जाए जहाँ पत्नी पति को भोजन कराती थी और बाद में बचा-खुचा खाती थी। भोजन के समय को परिवार का समय माना जाना चाहिए। इस व्यवसाय-समान संसार में, कम से कम रात का भोजन का समय सब परिवार के सदस्यों के इकट्ठे होने का समय होना चाहिए। प्रार्थना की प्रतीक्षा करो। केवल तब ही भोजना आरम्भ करो। बातचीत सुखद और हल्की रखो। खाते समय भोजन की आलोचना मत करो। दूसरों को क्या चाहिए देखो और उन तक पहुँचा दो। जब सब को परोसा जा चुका हो तब ही भोजना करना आरम्भ करो। मुँह में भोजन रखकर बात करना, चबाते हुए आवाज करना और मुँह भर-भरकर जल्दी-जल्दी चबाना आपके शिष्टाचार को बदनाम करेगा। कुछ की आदत है वे भोजन के पत्तों, हड्डियों आदि को मेज या फर्श पर छोड़ देते हैं। एक छोटी थाली माँगना या प्लेट के कोने में रखना बेहतर होगा। थाली में हाथ धोना एक आसली आदत है।

मिलने जाना

भोजन के समय आए मिलनेवाले सबसे अवंछित हैं। पहले समय निर्धरित करने भेंट करने जाना सबसे अच्छा है। यदि आप यूँ ही मिलने चले जाते हैं और पाते हैं कि परिवार एक महत्त्वपूर्ण टीवी कार्यक्रम देख रहा है या दूसरे अतिथियों की सेवा कर रहा है या

बच्चे पढ़ रहे हैं, तब क्षमायाचना के साथ लौट जाओ। उनके बुलाने के बावजूद भी मत ठहर जाओ। यदि आप एक निश्चित काम से जाते हो तो इधर-उधर की बात मत करो। अपना कार्य समाप्त करके तुरन्त चले जाने से मेजबान कृतज्ञ और आराम अनुभव करेंगे। जब कोई आपसे भेंटे करने आता है तब टीवी बंद कर दो। कार्यक्रमों से लोग अधिक महत्त्व के हैं।

जब आपको चाय या भोजन के लिए आमन्त्रित किया जाता है तो समय पर पहुँचो। जब एक पेय पेश किया जाता है, तब 'नहीं' कहने और फिर अपने मेजबान को कोसने कि उसने आपके शब्दों के अनुसार किया, स्पष्ट होना बेहतर है। जब आपके पास मेहमान हैं तो उनको पेय या भोजन के लिए विवश मत काजिए। यह अतिथि-सत्कार की गलत धारणा है। बहुत ही स्वादिष्ट पकवान को देखकर सारा संयम मत खो दो। मेजबान की प्रशंसा करो।

उनके बच्चों की आलोचना करने से बचो और अपने बच्चों को नियंत्रण में रखो। एक भेंट ले जाना उचित है, परन्तु अवश्य नहीं है। मेजबान को बर्तन साफ करने और रसोई साफ करने का प्रस्ताव करना अच्छा है। परन्तु सबको उनकी रसोई में हाथ डालना अच्छा नहीं लगता है। इसलिए बुद्धि से काम लो।

जब आप किसी के साथ रहते हैं तब समंजनीयता और अनुकूलता दो बड़े ही काम के गुण हैं। उनके समय और रीति-रिवाजों की ओर नमनशील बनो। सब को उनके साबुन और तौलिए इस्तेमाल किया जाना अच्छा नहीं लगेगा। अपनी व्यक्तिगत चीजों को साथ रखो। उनके फोन को इस्तेमाल करने से पहले मेजबान की अनुमति ले लो। घर में जहाँ आप सहायता कर सकते हो करो।

टेलीफोन पर बातचीत

जब आप फोन करते हो, तब एक शिष्ट और सुखद आवाज में कहो, "हेलो, क्या यह 234678 है?" (या जो भी नम्बर हो)। तब जो भी चाहिए बताओ। जब आपको फोन आए, तो अपनी आवाज में मुस्कान के साथ कहो, "हेलो, यह कखग आफिस है" (या जो भी है), और प्रतीक्षा करो। जब बोलनेवाले को सुनो तब "कौन है" मत कहो, "क्या मैं जान सकता हूँ कौन बोल रहा है?" या "क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूँ?" कहना अधिक शिष्ट होगा। फोन पर देर तक बात करते रहना उनके लिए सरदर्द है जिन्हें बकबक और हीं हीं सुननी पड़ती है। धीमे से बात करें। नमस्कार के साथ समाप्त करो।

सामाजिक जीवन

सड़कों और सार्वजनिक स्थानों पर कचड़ा फेंकना अपराध है। केवल इसलिए कि बाहर गन्दगी है हमें उसे बढ़ाने की आवश्यकता नहीं है। हम पहले ही भारी कीमत चुका रहे हैं। गन्दगी बहुत सस्ती नहीं है। पुरुषों का स्त्रियों को सीट देने या छोटों का बड़ों को सीट देने का शिष्टाचार मर रहा है या मर गया है। आओ हम उन पुरानी अच्छी आदतों को जीवित करें। जितना स्थान आपको चाहिए उससे अधिक जगह मत लो। दूसरों के बैठने के लिए जगह बनाओ। लोगों या मन्दबुद्धि की नकल करना क्रूर और असभ्य है। दूसरों पर अँगुली उठाने या बाहर किसी का नाम पुकारने से बचो।

थूकना भयंकर आदत है। इसे बंद करो और दूसरों को भी बंद करना सिखाओ। जहाँ आवश्यकता हो, कतार में खड़े रहो; कतान में किसी के आगे मत घुस जाओ। उधार ली गई चीजों को अच्छी हालत में तुरन्त लौटा दिया जाना चाहिए। रुपया-पैसा किसी के लिए भी एक संवेदनशील चीज है। तात्कालिक अदायगी सम्बंध बनाए रखती है। पन्ने पलटने के लिए या रुपये गिनने के लिए अँगुलियाँ चाटना घृणित दृश्य है।

कलीसिया

कलीसिया वह स्थान है जहाँ हम महान परमेश्वर की आराधना करते हैं। इसलिए समझदारी से कपड़े पहलो। एक बार जब सभा आरम्भ हो जाती है, भक्तिपूर्ण मुद्रा बनाए रखो। देन से आनेवालों के साथ बातें करने या उनका स्वागत करने से बचो। एक स्वतंत्र कलीसिया में, अच्छा नहीं होगा जब एक व्यक्ति अपनी आवाज ऊँची करके अपने बाइबल के ज्ञान को बकने लगे।

सभा के बाद, उनसे मिलो जो मित्रहीन और अकेले हैं। जब आपका अधिकारी सभा में होता है तब मित्रभाव दिखाओ परन्तु घनिष्ठता नहीं। जैसे आफिस में होता है वैसे ही आदरपूर्ण और अल्पभाषी रहो जब तक वह आपको अधिक अनुग्रह नहीं दिखाता।

बत्तक का बच्चा या हंस

असम्भव दिखनेवाले शिष्टाचारों के चक्कर में मत फँस जाओ। शिष्टाचारी होने के लिए आपको एक सन्त होने की आवश्यकता नहीं है। कुछ साधारण फैसले ही आपके जीवन को पलट सकते हैं। मैं ने पहले ही फैसला कर लिया है कि मैं भोजन के बाद अपनी अँगुलियों या चम्मच को चाटूँगा नहीं और अपने पति को याद दिलाऊँगी कि वह उतनी जोर-जोर से न चबाए कि अपने कमरे में सुनाई दे। हम थोड़ी समझदारी के साथ कुछ अच्छा कर सकते हैं। हमारा संयम हमें कुरूप बत्तकों से मनोहर हंसों में परिवर्तित कर देगा!

संगीत पर हमारे जीवनों का प्रभाव

मसीह के प्रेम से स्पर्श होने और अपने जीवन उसको समर्पित करने के बाद, हमारे अन्दर अपने जीवनों को बदलने की एक बड़ी इच्छा पैदा होती है, परन्तु हमें पता नहीं चलता कैसे। एक क्षेत्र जहाँ बदलाव आना होता है सांसारिक संगीत का हमारे जीवनों पर प्रभाव का क्षेत्र है। कइयों के लिए, संगीत एक प्रमुख लक्ष्य है और हमें पता होना चाहिए कि अब जब हम मसीह में विश्वासी हैं तो क्या करना है।

परमेश्वर ने संगीत बनाया परन्तु शैतान ने इसे विकृत कर दिया है। उसने इसे कइयों को धोखा देने और जो स्तुति और आराधना केवल परमेश्वर की थी चुराने के लिए इस्तेमाल किया है। हम इस तथ्य की उपेक्षा नहीं कर सकते कि हमारे शरीर के हर अंग में संगीत है। यह हमारी साँस में, हमारे दिल की धड़कन में, और हमारे अस्तित्व के हर परमाणु में है। हमारे अन्दर संगीत होना ही हमें विभिन्न लय या ताल की ओर संवेदनशील बनाता है। यह स्वाभाविक है - परमेश्वर ने हमें उस प्रकार बनाया है।

हमें खुद को संगीत से वंचित नहीं करना है, परन्तु संगीत इस प्रकार चुनना है कि इसका हम पर नकारात्मक प्रभाव न हो। संगीत बहुत अधिक हमारे व्यवहार को प्रभावित करता है। जब हम तनाव में होते हैं तब हमें धीमा और शान्त संगीत बजाना चाहिए जो धैर्य को शान्त करेगा और बेचैनी को कम करेगा। अकसर हम लय के मूल ताल पर अपने पैर, अँगुलियाँ या सिर हिलाते हैं। जब हम ऐसा करते हैं तो चाहे हमें वह गीत पसन्द न भी हो फिर भी हम उसे सुन रहे या अनजाने में गा रहे होते हैं। हम ऐसा करते हैं क्योंकि उस गीत का लय हमारे मन में अटक गई है।

1 – संगीत के द्वारा शत्रु की योजना

शैतान की संगीत के द्वारा मानवजाति के मनों और हृदयों में घुसने की एक योजना है। वह लोगों के व्यवहारों को नियंत्रित करने और उनके जीवनों पर शारीरिक और आत्मिक विनाश और मृत्यु तक शासन करना चाहता है। वह सब कुछ जिससे वे प्रेम करते हैं, उनके परिवार, उनकी भावनाएँ, और उनके मित्रों को चुराना चाहता है। यूहन्ना 10:10 कहता है, "चोर किसी और काम के लिए नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है; मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाएँ, और बहुतायत से पाएँ।"

2 – संगीत के द्वारा शैतान का उद्देश्य

अ. परमेश्वर की स्तुति और नए विश्वासी का भरपूर जीवन चुराना

शैतान अपने लिए उस आदर और आराधना को चुराना चाहता है जो परमेश्वर का है। वह लोगों को उस प्रकार से गीत गाने और नाचने के लिए प्रभावित करता है जो उसकी बुरी योजनाओं और उसके कार्य को महिमा देते हैं। गीतों के प्रत्यक्ष शब्दों के साथ उसका संगीत पाप को ऊँचा करता है जिसकी परमेश्वर घृणा करता है जैसे कि व्यभिचार, लौंगिक सुख और प्रतिशोध। इस प्रकार शैतान उनके प्राणों को चुरा लेता है जो उसके संगीत को सुनते हैं। वह उस बहुतायत के जीवन को हम से ले लेता है जिसे मसीह ने क्रूस के द्वारा हमें उपलब्ध कराया है। जब हम "एक बार और मुझे ले लो" जैसे गीत गाते हैं तो हम शब्दों को अपने मन में डालते हैं, ऐसे शब्द जो शरीर को इसकी कामुकताओं और यौन इच्छाओं को जगाते हैं। ये गीत हमें एक बार और पाप की गुलामी में दे देने के लिए उकसाते हैं। मेरे अनुभव से मैं कह सकता हूँ कि जिन्होंने अभी भी सांसारिक संगीत को छोड़ा नहीं है, संसार अभी भी उनके हृदय में है। उनका प्रभु परमेश्वर नहीं है, सांसारिक संगीत है।

यह समझने की हमारी जिम्मेवारी है कि हम किसके हैं। हमें मूल्याँकन करना है कि जो गीत हम जाते हैं और जिस संगीत से अपने मनों को भरते हैं, क्या वह यीशु को पसन्द है। क्या वह इसका आनन्द लेगा? "जो मेरे साथ नहीं वह मेरे विरोध में है, और जो मेरे साथ नहीं बटोरता वह बिखेरता है" (लूका 11:23)। एक जवान महिला विश्वासी बनने के तुरन्त बाद एक रीट्रीट में गई। वहाँ परमेश्वर का सामर्थ्य उस पर उतरा। वह अपने सारे पापों से फिर गई - जैसे कि बुरा संगीत और उसका सांसारिक लड़का मित्र जो अकसर उसे फोन करता था जब वह नशे में होती थी। कुछ समय के बाद वह दोबारा सांसारिक संगीत के साथ खिलवाड़ करने लगी, विशेषकर नाच संगीत के साथ। जल्दी ही वह विश्वास से पीछे हटने लगी। इसने पहले के समान पार्टियों में जाने की उसकी इच्छा को जगा दिया था। वह वापस अपने लड़का मित्र के पास चली गई और जल्दी ही अपनी पाप की पुरानी जीवनशैली में फँस गई। दुर्भाग्यवश, उसने पूरी तरह प्रभु की ओर अपनी पीठ फेर दी और उसका लड़का मित्र उसे एक बिना बाप के बच्चे के साथ छोड़ कर चला गया। इस स्त्री ने अपने जीवन को व्यर्थ गवाँ दिया और उसके लिए परमेश्वर की योजना को नष्ट कर दिया। उसकी सबसे ऊँची प्राथमिकताएँ संगीत और सेक्स थी, जबकि उन्हें परमेश्वर और उसे कैसे जानना और प्रसन्न करना है होनी चाहिए थीं!

आ. इसके अनुयायियों के जीवनों को नष्ट करना

संगीत में इसके सुननेवालों के जीवन नष्ट करने की शक्ति है। एक पाप गायक ने, जिसे "चट्टान का लूसीफर" भी कहते हैं, कहा, "हम सदा लोगों की इच्छाशक्ति और विचारों को संचालन करने के लिए कार्य करते हैं, और अधिकाँश दूसरे समूह भी ऐसा करते हैं।" संगीत-समारोहों में संगीत के द्वारा, लोगों को ऐसी चीजें करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जो वे दूसरी परिस्थितियों में नहीं करेंगे। इस संगीत के प्रभाव में लोग उनके कपड़ों को उतार देते हैं, और उनके शरीर के अन्तरिक अंगों को प्रकट करते हैं। वे असंयमी लैंगिक सम्बंधों में शामिल हो जाते हैं। नशीले पदार्थों के प्रभाव में उनके मन सनकी हो जाते हैं, और दंगे और उपद्रव होते हैं। ऐसे बैंडों के संगीत-समारोहों के बाद, इसके विषय में अकसर मीडिया में सुनने को मिलता है। एक प्रसिद्ध कहावत है, "शैतान उनको अच्छी मजदूरी देता है जो उसकी सेवा करते हैं।" ऐसे संगीतों द्वारा प्रोत्साहित बर्बरता और बुरे काम भाग लेनेवालों को भ्रष्ट करता है। वे बुरा करते हैं, और यह उन्हें उदास करता है, और उनमें एकाकिपन और हार की भावनाएँ उत्पन्न करता है। यह कई लोगों को आत्महत्या तक ले गया है। हमें अपने आप को इस प्रकार के शैतानी संगीत में सम्मिलित नहीं होने देना है।

इ. यह इसके अनुयायियों को आत्मिक और शारीरिक रूप से मारता है

यदि आप संगीत सुनने में अपना समय बिताएँगे तो आपको इसके संदेश का पालन करने जैसा लगेगा। उदास, दयनीय संगीत सुनने में अपना समय मत लगाओ - वह उसकी बात करता है जो होना चाहिए था। यदि आप मोह-भंग या दर्द के गीत सुनोगे तो उदास और आशाहीन लगोगे। सम्भव है अपना गम भुलाने के लिए पीओगे या आत्महत्या की सोचोगे।

मैं ने एक 17 वर्ष के जवान स्कूल विद्यार्थी के विषय में सुना जो अपने भाई और बहनों के साथ रहता था। एक दिन वह भारी एकाकिपन अनुभव करने लगा और उसके मित्र अच्छे नहीं थे। वह रॉक संगीत-समारोह में जाने लगा जहाँ जवान लोग नशीले पदार्थों से ऊँचाई में हो जाते हैं और एक दूसरे से लड़ते हैं। वह उनके समान बन गया और कुछ समय के बाद यह जीवन उसके लिए असहनीय हो गया। एक दिन वह टहलने गया और खुद को गोली मार ली। शत्रु की योजना उनको मारने की है जो उसके फँदे में फस जाते हैं। वह उनको यातना के उस स्थान में ले जाता है जहाँ से उनको लगता है वे निकल नहीं पाएँगे। अनेक विश्वासी भी इस फँदे में फँस जाते हैं। उनको लगता है वे परीक्षा सा सामना करने और उसके जीवनों को वश में रखने के लिए मजबूत हैं। वे उनके अतीत, शरीब, अनुचित सेक्स, उपद्रव और बुराई के गुलाम बन कर रह जाते हैं। वे दुष्ट की सन्तान बन जाते हैं और उस जीवन को खो देते हैं जिसे मसीह ने उनके लिए क्रूस पर प्राप्त किया था।

परमेश्वर हमें भरपूर जीवन देना चाहता है। आप इसे उतना ही अनुभव कर सकोगे जितना उन चीजों पर मन लगाओगे जो उन्नति करती हैं। उस संगीत को खोजो जो शान्ति लाता है। उस संगीत को सुनो जो तुम्हें परमेश्वर के करीब लाता है, और तुम्हें एक बेहतर व्यक्ति बनाता है, जैसे कि स्तुति और आराधना के गीत।

3 – मसीही संगीत – जीवन संचारित करना

अ. यह शान्ति लाता और आत्मा को शान्त करता है

संगीत हमारी भावनाओं और हमारी इच्छाशक्ति को छूता है। जो हम सुनते हैं वह हमारे विचारों, कार्यों और रवैयों पर शासन करता है। राजा शाऊल जब उसने परमेश्वर से विद्रोह किया था अपनी सुरक्षा खो बैठा था, और एक दुष्ट आत्मा ने आकर उसे सताना आरम्भ किया। परन्तु जब दाऊद आकर संगीत बजाता था तो दुष्ट आत्मा उसे छोड़ कर चली जाती थी। "और जब जब परमेश्वर की ओर से वह आत्मा शाऊल पर चढ़ता था, तब तब दाऊद वीणा लेकर बजाता; और शाऊल चैन पाकर अच्छा हो जाता था, और वह दुष्ट आत्मा उस में से हट जाता था।" 1 शमूएल 16:23

संगीत जो लोग इसको सुनते हैं उन पर अधिकार करता है। वह अधिकार भला या बुरा हो सकता है, जो संगीत की किस्म पर निर्भर करता है। जब हम मसीही संगीत को सुनते हैं तब हम अपने जीवनों और अपने घर में परमेश्वर की उपस्थिति लाते हैं। हम उन सब आत्माओं को निकाल देते हैं जो दमन करती हैं। जो लोग हम से मिलने आते हैं प्रभु की शान्ति और उपस्थिति अनुभव करेंगे। शाऊल के समान हम अभिषिक्त संगीत द्वारा स्वतंत्र और शान्त अनुभव करेंगे। (1 शमूएल 16:23)

आ. लोगों को जीतने के लिए यह एक उपयोगी साधन है

मसीही लोग उत्तम संगीत बनाते हैं। यह कानों के लिए सुखद है और सकारात्मक प्रभाव लाता है। यदि यह अच्छे गुण का है तो इसे गैर-मसीहियों को सुनाना एक महान गवाही होगा। हमारा संगीत उनके लिए एक विकल्प है जो यीशु को नहीं जानते। यह मनोभाव को तोड़ता है जो कहता है कलीसिया कुछ और नहीं केवल नीरस या मध्यम है। लोगों को जीतने के लिए संगीत एक सबसे उत्तम

माध्यम है। विभिन्न मसीही संगीत समारोहों में नौजवानों को सुसमाचार सुनाया जाता है, और उन्हें मसीह को स्वीकार करने का निमंत्रण दिया जाता है।

इ. इसका संदेश उन्नति लाता है

सब मसीही संगीत का चाहे इसकी शैली कैसी भी क्यों न हो, एक सकारात्मक और प्रोत्साहित संदेश है। और, इसका मधुर संगीत व्यक्ति को परमेश्वर के निकट लाता है। यह प्रार्थना के लिए उपयुक्त वातावरण उत्पन्न करता है।

यदि आप चाहते हैं तो विविध प्रकार के मसीही संगीत का आनन्द ले सकते हैं, परन्तु अन्त में सबसे अधिक उन्नति करने वाला संगीत सजीव स्तुति और आराधना है। प्रेरित पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 6:12 में कहा, "सब वस्तुएँ मेरे लिए उचित तो हैं, परन्तु सब वस्तुएँ लाभ की नहीं; सब वस्तुएँ मेरे लिए उचित हैं, परन्तु मैं किसी बात के अधीन न हूँगा।"

यह नियमों के विषय में नहीं है परन्तु जानना है कि वह संगीत कैसे चुनें जो उन्नति करता है। मसीही संगीत आपके अपने विषय में अच्छा अनुभव कराएगा। यह विश्वास लाता है और मनोव्यथा के समय शक्ति प्रदान करता है, और इसकी मधुरता और शब्दों के द्वारा यह आपको परमेश्वर के निकट लाता है।

4 – एक मसीही के रूप में संगीत से सम्बंध कैसे बनाएँ

1. जहाँ तक सांसारिक संगीत का सम्बंध है छोटे-छोटे समझौतों को भी मत होने दो। आप केवल अपनी पुरानी आदतों में फँस जाओगे।

2. निश्चय करो कि यदि आपको बाहर सांसारिक संगीत सुनना भी पड़े आप उससे प्रभावित नहीं होओगे।

3. उस संगीत को मत सुनो जो अतीत की यादें या नकारात्मक अनुभवों को ताजा कर देगा क्योंकि यह आपको पुराने तरीकों और व्यवहारों में ले जा सकता है।

4. सब चीजों में पारदर्शकता बनाए रखो। जानो कि पवित्र आत्मा सब कुछ देखता है और सहायता के लिए आपके पास है।

5. जब आप अपना हृदय अशुद्ध नहीं करना चाहते हो, तब अन्य भाषाओं में बोलो और प्रार्थना करो, बाइबल के वचन कंठस्थ करो और उन अच्छी चीजों को याद करो जिन्हें परमेश्वर ने आपको दिया है।

6. उस संगीत को नष्ट कर दो जिसने अतीत में आपको नष्ट किया था। विश्वास करो परमेश्वर हमें हमारे माँगने या समझने से कहीं अधिक दे सकता है। (व्यवस्था. 7:26 और प्रेरितों 19:19)।

7. अपनी व्यक्तिगत पसन्द के अनुसार अच्छा मसीही संगीत चुनो और यदि उपलब्ध हो तो मसीही रोडियो स्टेशनों को सुनो।

सेक्स और बाइबल – एक भमिका

परमेश्वर चाहता है सब खुश रहें। उसने हमें प्रेम करने और प्रेम पाने की योग्यता दी है। उसने कुछ सिद्धान्त स्थापित किए हैं ताकि यह एक वास्तविकता बन सके। तथाकथित "प्रेम" की तुरंत प्राप्ति में, कई लोग अनुचित यौन सम्बंधों में पड़ जाते हैं। जैसा परमेश्वर ने चाहा था, वैसी आशीष बनने के बजाय, यह दुख लाता है जो उनकी शान्ति और सपनों को चुरा लेता है और उन्हें टूटे दिलों के साथ छोड़ देता है। परमेश्वर विवाह के बाहर यौन सम्बंधों के परिणामों को जानता है। वह चाहता है आप उसके उद्देश्यों को समझें ताकि आप उसके समय की प्रतीक्षा कर सकें। वह आपके लिए एक आदर्श व्यक्ति को लाएगा जिसके लिए आप एक आशीष बन सकेंगे और जो आपको खुश रखेगा और मिलकर आप दोनों उसके उद्देश्यों को पूरा कर सकेंगे।

1. सेक्स, परमेश्वर की एक सृष्टि

परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया और उसे सारी सृष्टि के ऊपर प्रधान नियुक्त किया। फिर भी, सारी सृष्टि में से आदम के लिए कोई सहायक नहीं मिला। "अतः आदम ने सब जाति के घरेलू पशुओं, और आकाश के पक्षियों, और सब जाति के बनैले पशुओं के नाम रखे; परन्तु आदम के लिए कोई ऐसा सहायक न मिला जो उस से मेल खा सके।" (उत्पत्ति 2:20)। तब परमेश्वर ने आदम की एक पसली ली और स्त्री को बनाया। "तब आदम ने कहा, अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है; इसलिए उसका नाम नारी होगा, क्योंकि वह नर में से निकाली गई है।" (2:23)

इब्रानी विषयवाक्य का अध्ययन करने से पता चलता है कि ये शब्द बहुत भावना, आनन्द और आश्चर्य व्यक्त करते हैं। यह सम्भव है कि आदम ने इन भावनाओं को अनुभव किया होगा क्योंकि तब तक उसने केवल पशुओं ही को देखा था। जब उसने स्त्री को देखा, जो कितनी समान फिर भी कितनी भिन्न कि उसने कहा, "अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है।" उसने उस संतोष को जो उसने जानने पर अनुभव किया था व्यक्त किया कि वह उसके लिए सिद्ध समपूरक है और बिलकुल वही है जिसकी उसे आवश्यकता थी। उत्पत्ति 2:24 में परमेश्वर पहला विवाह करता है और उन्हें एक दम्पति बनाता है: "इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे एक ही तन बने रहेंगे।" आयत का अन्तिम भाग "वे एक ही तन बने रहेंगे" दम्पति के घनिष्ठ शारीरिक संयोग, लैंगिक पहलू की बात करता है। यह शर्म की बात नहीं है। बल्कि यह एक दूसरे को अर्न्तबाधा के बिना जानने की स्वतंत्रता चित्रित करता है। "आदम और उसकी पत्नी दोनों नंगे थे, पर लजाते न थे।" परमेश्वर सेक्स को एक स्वाभाविक चीज के रूप में देखता है। जब इसे उसके द्वारा निर्धारित सीमाओं में अनुभव किया जाता है तब उसे अच्छा लगता है। वह प्रेम में आनन्दित होता है जब यह सच्चा और सम्पूर्ण होता है। श्रेष्ठगीत एक पुरुष और एक स्त्री के बीच शारीरिक प्रेम की एक अभिव्यक्ति है, और चित्रित करता है कि परमेश्वर कितना चाहता है एक विवाह घनिष्ठ हो।

आरम्भ से ही दोनों जातियों के बीच एक सम्बंध और आपसी आकर्षण वर्तमान है। एक ही जाति के बीच सम्बंध परमेश्वर की योजना में नहीं है। नहीं तो, परमेश्वर आदम को हव्वा के बजाय एक दूसरा आदम देता। इस प्रकार का गलत सम्बंध परमेश्वर को भूलने, और अपने मन में बुद्धिमान बनने का परिमाण है, अपने आप को उस चीज के लिए दे देना जो प्रभु को पसन्द नहीं। "वैसे ही पुरुष भी स्त्रियों के साथ स्वाभाविक व्यवहार छोड़कर आपस में कामातुर होकर जलने लगे, और पुरुषों ने पुरुषों के साथ निर्लज काम करके अपने भ्रम का ठीक फल पाया" (रोमियों 1:27)। ये और दूसरे व्यवहार मनुष्य के पतन के परिणाम के रूप में प्रकट हुए हैं। उन्होंने परमेश्वर द्वारा निर्धारित सीमाओं को बदल दिया है। वे सेक्स को केवल सुख के रूप में देखते हैं जिसे जब चाहा अनुभव कर लिया और जिसके साथ चाहा कर लिया। कुछ जवान लोग सेक्स को यह निश्चित करने के लिए उपयोग करते हैं कि उनके साथी उनको छोड़ न जाए। अन्त में, ये धोखे दूसरी चीजों के अलावा एकाकिपन की भावनाएँ, भावात्मक संघर्ष, सेक्स द्वारा मिलनेवाले रोग (एड्स भी), अनपेक्षित गर्भ और बाध्य विवाह दे देते हैं।

2. क्यों प्रतीक्षा करें और विवाह में ही सेक्स करें?

हालाँकि परमेश्वर ने सेक्स को एक अच्छे उद्देश्य के लिए बनाया था, परन्तु समाज ने इसे कुछ भ्रष्ट, गन्दा और विकृत बना दिया है। संचार के माध्यमों (टीवी, मेगेज़ीन, रेडियो, टेलिफोन, इन्टरनेट आदि) के द्वारा दबाव बनाने के अलावा, समाज लोगों को अनुचित सेक्स में फँसाने का प्रयास करता है। युद्धनीति में नग्नता (सेक्स दृश्य वाले कार्यक्रम जो कल्पना को उत्तेजित करते हैं) से लेकर विचारोत्तेजक और प्रत्यक्ष विज्ञापन होते हैं तो विवाहपूर्व सेक्स का समर्थन करते हैं। विवाहपूर्व सेक्स को सामान्य चीज चित्रित किया जाता है और व्यभिचार को ठीक बताया जाता है जब विवाहित साथी सन्तोषजनक या आकर्षक नहीं है। कई लोग अपने आपको परिणाम के बारे में सोचे बिना अनुचित लैंगिक सम्बंधों में फँसने देते हैं। हम परमेश्वर के विरुद्ध पाप करते हैं। हम एक दोषी मनोग्रन्थि बना लेते हैं। आपके जीवन में नकारात्मक परिणाम निकलते हैं और आपकी गवाही नष्ट हो जाती है।

अ. हम परमेश्वर के सामने पाप करते हैं

जब हम विवाह के बाहर लैंगिक सम्बंधों के लिए अपने आप को दे देते हैं तब हम परमेश्वर के सामने पाप करते हैं। 1 कुरिन्थियों 6:13 में बाइबल कहती है, "भोजन पेट के लिए, और पेट भोजन के लिए है, परन्तु परमेश्वर इस को और उस को दोनों को नष्ट करेगा। परन्तु देह व्यभिचार के लिए नहीं, वरन् प्रभु के लिए है, और प्रभु देह के लिए है।" देह के साथ किया गया हर पाप प्रभु के विरुद्ध होता है। इसमें कुमारीगमन, व्यभिचार और समलिंगकामुकता शामिल हैं। 1 कुरिन्थियों 6:9-10 हमें बताता है कि कोई भी जो यह सब करता है परमेश्वर के राज्य का वारिस नहीं होगा। जिस क्षण से हम अपने हृदय प्रभु के लिए खोलते हैं, पवित्र आत्मा आकर हमारे जीवनों में रहता है। यूहन्ना 14:17 हमें सिखाता है: "सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है; तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा।" क्योंकि परमेश्वर हम में है, हमारे शरीर उसके मंदिर बनते हैं, और यदि हम लैंगिक पाप करते हैं तो पवित्र आत्मा के मंदिर का अपमान करते हैं। जब आप इन शर्मनाक पापों में पड़ते हो तब सुलेमान की कहावत पूरी होती है: "चोरी का पानी मीठा होता है, और लुके छिपे की रोटी अच्छी लगती है। वह नहीं जानता है, कि वहाँ मरे हुए पड़े हैं, और उस स्त्री के नेवताहारी अधोलोक के निचले स्थानों में पहुँचे हैं।" (नीतिवचन 9:17-18)

जब दूसरों को कहते सुनते हो "तुम्हें पता नहीं तुम क्या खो रहे हो!" या "तुम कुछ नहीं कर रहे!" और करने लगते हो, तो परमेश्वर के विरुद्ध पाप करते हो। कई लोग गिर पड़े हैं जब उन्होंने उनके मित्रों के अनुसार करने का प्रयास किया है या जो वे कहते हैं करने का प्रयास किया है। परमेश्वर की इच्छा के बाहर, एक सक्रिय लैंगिक जीवन आपकी शान्ति को चुरा लेता है और परमेश्वर के विषय में एक असुरक्षा पैदा करता है। इसके साथ एक भयानक डर आता है कि परिणामस्वरूप क्या होगा।

आ. दोषी मनोग्रन्थि

पाप पहली नज़र में सुखद और रुचिकर जान पड़ता है। और, कई इस विश्वास के धोखे में आ जाते हैं कि जब तक उनको पता हो कब रोकना है कुछ भी गम्भीर नहीं होगा। इसी प्रकार कई अश्लील चित्रों के संसार में फँस जाते हैं और गम्भीर दोष की समस्याएँ, गुलामी और व्यसन के शिकार होते हैं। उनका स्वाभिमान बहुत कम होता है और वे प्रतिजाति के किसी के साथ एक स्वस्थ भावात्मक सम्बंध नहीं बनाए रख पाते हैं।

मैं ने एक बार एक पुरुष के विषय में पढ़ा जिसे कचड़े में से एक अश्लील पत्रिका मिली। उसने इसे उठाया, पढ़ा, और तब से अश्लीलता का आदी हो गया। क्योंकि वह संकोची था वह हस्तमैथुन करने लगा क्योंकि उसके लिए एक जवान लड़की को जीतना और उसके साथ सम्बंध आरम्भ करना कठिन था। परन्तु हमारा पापी स्वभाव कभी भी शान्त नहीं होता परन्तु सदा और की माँग करता है, उसने जवान लड़कियों का बलात्कार करना और उनकी हत्या करना आरम्भ किया। जब वह अन्त में पकड़ा गया, उसने तब तक 17 की हत्या की थी। यह घटना चित्रित करती है कि पाप किस प्रकार सूक्ष्म रूप से हमारे जीवनों में प्रवेश करता है, और यदि इसे इसकी मर्ज़ी करने दी तो यह हमें गुलाम बना सकता है और हमें भयानक कार्यों में ले जा सकता है। शायद आप सोचते हैं, "मैं कभी भी ऐसे चरम तक नहीं जाऊँगा!" या "मेरा हृदय मुझे कभी भी इतना दुष्ट नहीं बनने देगा!" परन्तु, फिर भी, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, कइयों ने गर्भपात के द्वारा हत्या किया है।

<u>गर्भपात उतनी ही हत्या है जितना जनसंहार है।</u> कई उनके अपराध की सफाई यह कहते हुए देते हैं कि भ्रूम तो केवल कोशाणुओं का समूह ही है, परन्तु भजनकार हमें याद दिलाता है कि: "तेरी आँखों ने मेरे बेडौल तत्त्व को देखा; और मेरे सब अंग जो दिन दिन बनते जाते थे वे रचे जाने से पहले तेरी पुस्तक में लिखे हुए थे।" भजन 139:16। गर्भधारण के क्षण से लेकर हम एक मनुष्य बन जाते हैं। हमें परमेश्वर बनाता है और हमारा सृष्टिकर्त्ता के साथ सम्पर्क होता है जो हमें जीवन देता है। न तो तुम्हें गर्भपात करना चाहिए और न ही इसमें सहापराधी बनना चाहिए, आपको एक रक्षाहीन व्यक्ति के जीवन का फैसला करने का कोई अधिकार नहीं है। यदि आप करते हैं तो आप अपने जीवन पर एक शाप लाएँगे और नीचिवचन 14:12 पूरा होगा: "ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक जान पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।"

जब आपको पता चलेगा कि यह एक जीवन था और इसके विषय में अब कुछ नहीं कर सकते हो तो आप एक घोर प्राणपीड़ा से भर जाओगे। जब आप एक बच्चे को देखोगे और सोचोगे कि आपका कितना बड़ा होता, और यदि जीवित होता तो कैसा होता, तब आप एक दुख से भर जाओगे। जो गर्भपात का समर्थन करते हैं परिणामों के विषय में कभी नहीं बताते, परन्तु जिन्होंने एक अनुभव पाया है बता सकते हैं कि यह कितना असली और दर्दभरा होता है।

स्वाभाविक है कि हर लैंगिक पाप एक दोषी मनोग्रन्थि, शर्म, और धोखे का एक जाल छोड़ जाता है। कइयों को लगता है वे प्रेम पाने के योग्य नहीं हैं। वे उनके सम्बंधों में स्वत्वबोधक बन जाते हैं और प्रेम की भीख माँगते, शारीरिक, लैंगिक, और भावात्मक दुर्व्यवहार सहते रहते हैं। कुछ सम्बंध में इसे जीवित रखने के लिए "कोई दूसरा" के समान बन जाते हैं।

इ. यह आपके जीवन में नकारात्मक परिणाम लाता है

लैंगिक पाप के दुखदायी, व्यक्तिगत परिणाम व्यक्ति के बाकी के जीवन भर बने रह सकते हैं।
कई लोग ऐसे समय पर गिरे हैं जब उन्होंने इसकी कम ही आशा की थी। इस्राएल का राजा, दाऊद एक स्पष्ट उदाहरण है। एक दिन वह अपने महल की छत पर टहल रहा था कि उसने एक बहुत ही सुन्दर स्त्री को नहाते देखा। वह विवाहित है या नहीं परवाह किए बिना, उसने उसे अपने पास बुलाया और उसके साथ सोया और वह गर्भवती हो गई। कुछ कहेंगे कि जाऊद ने तो केवल अपनी नर-आवेगों के अनुसार ही किया था। परन्तु मुझे लगता है वह इसलिए गिरा क्योंकि उसने अपने मन को भटकने और कुछ भी कल्पना करने की स्वतंत्रता दी थी। और, उसके आलस्य ने पाप को बढ़ाया था। अपने लोगों के साथ युद्ध में जाने के बजाय, वह घर में अपना समय बर्बाद कर रहा था। आलस्य कोई अच्छा प्रभाव नहीं है क्योंकि यह हमारे मनों में उन चीजों के लिए द्वार खोलता है जिन्हें हमें सोचना चाहिए। एक बार इन विचारों का हमारे मन में आने के बाद वे पाप और आत्मिक मृत्यु में ले जाते हैं। यही बात याकूब सिखाता है जब वह कहता है: "परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर और फँसकर परीक्षा में पड़ता है। फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है।" याकूब 1:14-15

बतशेबा के साथ जो उरिय्याह की पत्नी थी, दाऊद का साहस-कार्य यहीं पर समाप्त नहीं हुआ। जब दाऊद को उसके गर्भ का पता चला तो उसने उसके पति को बुला भेजा और हर सम्भव प्रयास किया कि वह उसके साथ सोए और उसका पाप छिप जाए। उरिय्याह अपने घर नहीं गया क्योंकि उसके साथी और उसका देश युद्ध कर रहा था। उरिय्याह की विश्वासयोग्यता ने दाऊद की समस्याओं को बढ़ा दिया। उसने देखा कि सबसे सरल तरीका उरिय्याह के द्वारा योआब को जो उसकी सेना का सेनापति था, एक पत्र भेजना है। उसने योआब को आदेश दिया कि उरिय्याह को भारी युद्ध में अकेला छोड़ दिया जाए ताकि वह मारा जाए। दाऊद के आदेशों का पालन किया गया और उरिय्याह युद्ध में मारा गया। बतशेबा के अपने पति के लिए शोक करने के बाद उसे महल ले जाया गया। दाऊद ने उसे अपनी पत्नी बना लिया और उसने एक पुत्र को जन्म दिया। एक वर्ष बीत गया। परमेश्वर ने दाऊद का इन्तज़ार किया कि वह अपने पाप को स्वीकार करेगा और मन फिराएगा, परन्तु क्योंकि उसने नहीं किया, उसका पाप उसके पास आ पहुँचा। परमेश्वर ने नातान को दाऊद के पाप के इस विषय में उसका सामना करने भेजा। नबी ने उसे एक कहानी सुनाई जिसमें एक धनी व्यक्ति के पास जिसकी बहुत भेड़ें थीं, एक मेहमान आया। परन्तु उसने जाकर अपने गरीब पड़ोसी के एकमात्र मेम्ने को काटा, जो उसके बच्चों के साथ बड़ा हुआ था, उसकी थाली में से खाता था, और उसकी गोद में सोता था। जब दाऊद ने कहानी सुनी तो उसका क्रोध उस व्यक्ति की ओर भड़क उठा और उसने कहा, "...यहोवा के जीवन की शपथ, जिस मनुष्य ने ऐसा काम किया वह प्राण दण्ड के योग्य है; और उसको उस भेड़ की बच्ची का चौगुना भर देना होगा, क्योंकि उसने ऐसा काम किया, और कुछ दया नहीं की।" (2 शमूएल 12:5-6)
दाऊद के न्याय सुनाने के बाद नबी ने कहा, "तू ही वह मनुष्य है!" एक भविष्यद्वाणी के वचन के द्वारा, नातान दाऊद को याद दिलाने लगा कि किस प्रकार परमेश्वर ने उसे बुलाया, समृद्ध किया, और राजा बनाया था। यदि यह सब कम होता तो प्रभु उसे और भी देता। परमेश्वर ने दाऊद को उसके पाप का परिणाम दिखाया। उसने दाऊद को बताया कि क्योंकि उसने उरिय्याह को तलवार से मरवाया था और उसकी पत्नी को ले लिया था, अब तलवार उसके घर से कभी दूर नहीं होगी। उसकी पत्नियाँ दूसरों को दे दी जाएँगी, और जो उसने छिपकर किया था, सब के सामने किया जाएगा। अन्त में, दाऊद और बतशेबा को उत्पन्न हुआ पुत्र मर जाएगा। (2 शमूएल 12:14)
यदि दाऊद ने अपना न्याय स्वयं किया होता तो उसे मरना होता, परन्तु परमेश्वर दयालु था और उसने उसे एक और अवसर दिया। फिर भी, उसे परिणामों की पीड़ा के साथ अपने सारे जीवन भर जीना पड़ा था। पहली बात जो दाऊद ने अनुभव की उसके पुत्र की मृत्यु थी। इससे उसके हृदय में दुख और पीड़ा हुई। उसने खाना खाना, नहाना और अपने कपड़े बदलना छोड़ दिया। वह परमेश्वर के सामने मुँह के बल पड़ा रहा और अपने को दीन किया, परन्तु दिन बीतते गए और उसका पुत्र मर गया। थोड़े दिनों के बाद, परमेश्वर ने उसे सान्त्वना दी और उसे दूसरा पुत्र, राजा सुलेमान दिया। बाद में, उसने अपने बच्चों को उसके पापों के परिणामों को भुगतते देखा। दाऊद ने अपनी ही परिवार में लैंगिक पाप और उपग्रव अनुभव किया। उसके एक बेटे, अम्नोन ने अपनी ही बहन तामार का बलात्कार किया। तब उसके दूसरे बेटे, अबशालोम ने अम्नोन को अपमान और उसकी बहन के साथ लैंगिक दुर्व्यवहार के बदले में मार डाला। अबशालोम ने बाद में विद्रोह किया और दाऊद के राज्य को हड़पने का प्रयास किया। इससे दाऊद को बहुत दुख बहुँचा, "तब दाऊद जैतून के पहाड़ की चढ़ाई पर सिर ढाँके, नंगे पाँव, रोता हुआ चढ़ने लगा; और जितने लोग उसके संग थे, वे भी सिर डाँके रोते हुए चढ़ गए।" (2 शमूएस 15:30)
जबकि दाऊद भाग गया, उसका पुत्र अबसालोम 'इस्राएल के देखते' उसकी दस रखैलियों के पास गया (2 शमूएल 16:22)। ये चीजें दाऊद के जीवन में एक बहुत की दुखदायी सत्य प्रकट करती हैं - कि वे उसके पाप के परिणाम थीं। नीतिवचन 26:2 कहता है: "वैसे

ही व्यर्थ शाप नहीं पड़ता।" पाप केवल कमज़ोरी का क्षण ही नहीं है। यह एक जाल है जो इसके सब पड़ने वालों को फँसाता और विनाश में ले जाता है।

आज भी बहुत लोग लैंगिक पापों के परिणाम भुगतते हैं। उनको यौन रोग जैसे कि परिसर्प, उपदंश, और एड्स जैसे रोग हो जाते हैं। इन में से कुछ रोग असाध्य हैं और उनके बच्चों को भी प्रभावित करते हैं। बच्चों को उन बीमारियों के साथ पैदा होते हुए देखना जो उनके माता-पिता के पापों का परिणाम है बड़े दुख की बात है।
विवाहपूर्व सेक्स में दे देने के बाद, कुछ लैंगिक शोषण के शिकार होते हैं और यह उनको भावात्मक और शारीरिक रूप से प्रभावित करता है। दूसरे वेश्यवृत्ति के संसार में चले जाते हैं, और उनके ग्राहकों के साथ एक तन होने के साथ वे भी उन शापों को पाते हैं जो उनके ग्राहकों के पास हैं। इस्तेमाल और दुर्व्यवहार किए जाने की चोट, दुख, कड़ुवाहट, नाराजगी और दोषी मनोग्रन्थियाँ असंयमी जीवन के कुछ परिणाम हैं।

3. पापी यौन सम्बंधों से कैसे बचना है

इसके परिणामों से अधिक और कुछ नहीं है जो हमें इस पाप में पड़ने से रोक सकता है। परन्तु इससे भी अधिक प्रभु का भय है, परमेश्वर की ओर एक पवित्र भक्ति और आदर जो हमें उसकी ओर पाप न करने के लिए प्रेरित कर सकता है जो पवित्र है! फिर भी, आप को पर्याप्त कदम उठाने चाहिए जो आपको जब यौन परीक्षा का सामने करें तो जयवन्त खड़े रहने के योग्य बना सकते हैं।

अ. परमेश्वर के साथ अपने सम्बंध को मजबूत करो

ऐसा नहीं होता है कि एक दिन आप नींद से जागेंगे और पाएँगे कि आपका सांसारिक स्वभाव नियंत्रण से बाहर है और आप पाप में गिर पड़ेंगे। यह छोटी-छोटी रियाअतों के साथ आरम्भ होता है, जो परीक्षा के लिए, और बाद में, पाप के लिए द्वार खोलती हैं। यह भिन्न लोगों के लिए भिन्न तरीके से घट सकता है। पुरुषों के लिए, उनकी नजर सबसे अधिक गलती कर सकती है। प्रभु कहता है: "तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, व्यभिचार न करना। परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उससे व्यभिचार कर चुका।" (मत्ती 5:27-28)। पाप आरम्भ होता है जब आप कामुकता की नज़रों से देखते हो। कहा गया है कि पहली नज़र में कुछ समस्या नहीं है, यह दूसरी नज़र है जिसमें कामुकता है।
स्त्री जो सुनती है उसकी ओर अतिसंवेदनशील होती है। यदि वह उन लोगों से जिन्हें वह जानती है उसके लिए सही नहीं है (कोई जो पहले ही विवाहित है, सगाई हुई है, या अभक्त जीवन जी रहा है) प्रशंसा और चापलूसी सुनती है, तो वह समस्या में पड़नेवाली है। वे बड़ी सरलता से एक उत्पीड़ित सम्बंध में फँस जाएगी जो उसके जीवन में नकारात्मक परिणाम उत्पन्न करेगा।
एक पतन से बचने का मेरे लिए सबसे अच्छा तरीका है परमेश्वर के साथ अपने सम्बंध की रखवाली करना, अपने प्रार्थना के जीवन को मजबूत करना, परमेश्वर के वचन पर निर्भर रहना और वचन में बने रहना। एक अच्छी शुरूआत अपने अतीत के पापों और कमज़ोरियों को पहचानना, और परमेश्वर की क्षमा पाने के लिए दाऊद की नकल करना है। "जब मैं ने अपना पाप तुझ पर प्रकट किया और अपना अधर्म न छिपाया, और कहा, मैं यहोवा के सामने अपने अपराधों को मान लूँगा, तब तू ने मेरे अधर्म और पाप को क्षमा कर दिया।" भजन 32:5। हमें अपने हर पाप को परमेश्वर के सामने स्वीकार करने की आवश्यकता है कि हम मसीह के लहू के द्वारा क्षमा और शुद्ध किए जाएँ। पाप द्वारा लाए शाप से बचने का यही एक तरीका है। यदि आप परीक्षा का सामना कर रहे हैं तब भी यही किया जाना चाहिए। यदि आप परमेश्वर को खोजेंगे, तो वह एक बचाव का मार्ग निकालेगा। "तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है। परमेश्वर सच्चा है और वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन् परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको।" 1 कुरिन्थियों 10:13
हर दिन प्रार्थना और बाइबल के अध्ययन में समय बिताने का निश्चय करो। एक भी दिन परमेश्वर से बात किए और उसकी सलाह सुने बिना मत गुज़रने दो। परन्तु, यदि किसी परिस्थिति में तुम असफल रहते हो तो परमेश्वर के सामने अपना पाप स्वीकार करो, उसकी क्षमा माँगो, और आगे बढ़ जाओ। यह आपके जीवन को गिरने से बचाएगा, और आपको महान शक्ति देगा जो सब चीजों में जयवन्त होने में आपको योग्य करेगा।

आ. परीक्षा का सामना करने के लिए अपने को तैयार करो

परीक्षाएँ तब आएँगी जब उनकी बहुत कम अपेक्षा करते हो और वे सबसे असाधारण तरीकों से आएँगी। इसलिए, सावधानी बर्तना बुद्धिमानी होगी कि आप को आश्चर्यचकित नहीं होना पड़ेगा। वे लोग अकसर लैंगिक गूढ़ार्थ और टिप्पणियाँ इस्तेमाल करते हैं कि हम अपने आप को उनकी इश्कबाजी, यौन खेलों, और सेक्स में भी दे दें। "यदि तुम वाकई मुझ से प्रेम करते हो तो मेरे साथ सोओगी!", "यदि तुम मेरे साथ नहीं सोओगी तो कोई तो सोएगा!", "यदि तुम वाकई में पुरुष हो तो प्रमाणित करके दिखाओ!", "सब

करते हैं!" या "यदि तुम मुझे दोबारा देखना चाहती हो तो तुम्हें मेरे साथ अधिक घनिष्ठ होना पड़ेगा!" इस प्रकार की बातें आपको बिना किसी वचनबद्धता के सेक्स करने के लिए दबाव डालने के लिए हैं। आपको बुद्धिमानी से काम लेना है, और इस प्रकार की स्थितियों से निपटने के लिए अपने आप को तैयार करना है।

यह परमेश्वर के बच्चों के समान चमकने का समय है। आओ हम एक अन्तर लाएँ और संसार को दिखाएँ कि हम लैंगिक पाप के बिना खुश रह सकते हैं। हम अपने पति या पत्नी के साथ खुश रह सकते हैं और अपने शरीरों को उसके लिए रख सकते हैं जो हमारा जीवनसाथी बनेगा। आओ हम ऐसे परिवार बनाएँ जो परमेश्वर के प्रेम को चित्रित करते हैं और उन चीजों को महत्त्व देते हैं जो उसे प्रसन्द हैं। "तब तुम पर पाप की प्रभुता नहीं होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं वरन् अनुग्रह के अधीन हो।" (रोमियों 6:14)

बाइबल का एक संक्षिप्त सर्वेक्षण

भाग एक – पुराने नियम की पुस्तकें

पाठ 1 – भूमिका

बाइबल परमेश्वर का अपना और मनुष्यों के लिए उसकी इच्छा का प्रकटीकरण है। इसका प्रमुख विषय यीशु मसीह के द्वारा उद्धार है। बाइबल में 66 पुस्तकें हैं, जिन्हें 40 लेखकों ने लगभग 1600 वर्षों में लिखा था। पुराना नियम अधिकाँश इब्रानी में लिखा गया था, और नया नियम यूनानी में लिखा था। लेखक राजा और राजकुमार, कवि और दार्शनिक, भविष्यद्वक्ता और राजनेता थे। कुछ बहुत शिक्षित और दूसरे अशिक्षित मछुवे थे।

हम अपने स्कूल के इस महिने में पुराने नियम का अध्ययन करेंगे। इसमें नीचे दिए विषयों पर 39 पुस्तकें हैं:

5 - व्यवस्था

12 - कविता

17 - भविष्यसूचक (5 मुख्य, 12 छोटे)

बाइबल मनुष्यजाति को उपलब्ध सबसे महान दस्तावेज है। इसे पढ़ने, अध्ययन करने, और विश्वास करने और आज्ञापालन करने की आवश्यकता है।

पाठ 2 – उत्पत्ति

बाइबल की पहली पाँच पुस्तकें मूसा ने लिखी थीं और पंचग्रन्थ कहलाती हैं। "उत्पत्ति" शब्द का अर्थ है आरम्भ, या जन्म। उत्पत्ति आरम्भ की पुस्तक है - संसार (1:1-25), मानवजाति (1:26-27), संसार में पाप (3:1-7), उद्धार की प्रतिज्ञा (3:8-24), परिवारिक जीवन (4:1-15), मनुष्य द्वारा निर्मित्त सभ्यता (4:16 - 9:29), संसार के देशों (10, 11), और इब्री जाति (12 - 50) के आरम्भ की।

उत्पत्ति मनुष्य के असफलता का इतिहास है। यह "परमेश्वर" से आरम्भ होकर "ताबूत" में समाप्त होती है। नीचे एक रूपरेखा दी गई है जो पुस्तक को दो बड़े विचारों में बाँटती है:

1. पृथ्वी पर पाप का प्रवेश, अ. 1 - 11
    1. सृष्टि, अ. 1, 2
    2. पतन, अ. 3, 4
    3. जलप्रलय, अ. 5 - 9
    4. बेबिलोन का गुम्मट और भाषाओं में गड़बड़ी, अ. 10, 11
2. उद्धारकर्त्ता के आगमन की तैयारी, अ. 12 - 50
    1. विश्वास का पुरुष, अब्राहम, अ. 12 - 23
    2. प्रिय पुत्र, इसहाक, अ. 24 - 26
    3. याकूब, जिसने दुख उठाया और परमेश्वर की ओर सच्चा रहा, अ. 37 – 50

पाठ 3 – निर्गमन

निर्गमन का अर्थ है "बाहर का मार्ग"।

केवल सत्तर मनुष्य ही मिस्र को गए थे, परन्तु मिस्र छोड़ने से पहले वे बढ़कर तीस लाख मनुष्यों का देश हो गया था। उत्पत्ति मनुष्य की असफलता के विषय में बताती है; निर्गमन एक सर्वशक्तिमान् परमेश्वर के उद्धार के कार्य का विवरण देती है। यह अन्धकार और उदासी में आरम्भ होकर महिमा में समाप्त होती है।

निर्गमन 12 हमें फसह की रोमाँचक कहानी बताता है जो प्रभु यीशु मसीह के बहे लहू में विश्वास के द्वारा हमारे व्यक्तिगत उद्धार की पुराने नियम की सबसे स्पष्ट तस्वीर है। निर्गमन की रूपरेखा इस प्रकार है:

1. परमेश्वर छुड़ानेवाले, मूसा को तैयार करता है, अ. 1 - 11
2. लहू और सामर्थ्य द्वारा, छुटकारा, अ. 12 - 14
3. सिनै पर्वत की ओर कूच, लोगों की आत्मिक शिक्षा, अ. 15 - 18
4. व्यवस्था, हमें हमारे अत्यन्त पापीपन दिखाने का परमेश्वर दर्पण, का दिया जाना, अ. 19-24
5. तम्बू की अन्तिम रूपरेखा और निर्माण, गवाही देता है कि परमेश्वर अपने लोगों के मध्य रहता था, अ. 25 - 40

पाठ 4 – लैव्यव्यवस्था, गिनती और व्यवस्थाविवरण

लैव्यव्यवस्था की पुस्तक इस्राएल के लोगों की उनके धार्मिक प्रशिक्षण में सहायता के लिए परमेश्वर की चित्र-पुस्तक है। हर चित्र यीशु मसीह के कार्य की ओर संकेत करता है। इसे प्रायश्चित की पुस्तक कहते हैं। भेंटें कहती हैं "सही हो जाओ"। पाँच भेंटे हैं: होम, अन्न, मेल, पाप और दोष। पर्व कहते हैं "सही रहो"। आठ पर्व हैं: सब्त, फसह, पिन्तेकुस्त, नरसिंगे, प्रायश्चित, झोपड़ियों, विश्राम वर्ष, और जुबली। बलिदान लहू की बात करते हैं जो उद्धार करता है। पर्व भोजन की बात करते हैं जो जीवित रखता है।

गिनती जंगल के भ्रमण की पुस्तक है, सिनै से कनान की सीमा, प्रतिज्ञा के प्रदेश तक। इसे कुड़कुड़ाने की पुस्तक भी कहा जा सकता है। मुख्य विचार है अनुशासन। गिनती विश्वासी की चाल से निपटती है।

अध्याय 1 - 10 हमें ईश्वरीय विधान देते हैं।
अध्याय 11 - 20 देश की असफलता की कहानी बताते हैं।
अध्याय 21 - 36 इस्राएल पर प्रभु की कृपा के लौटने और जंगल में भी, अन्तिम विजय का विवरण हैं।

पुस्तक में ये महत्त्वपूर्ण मनुष्य हैं: मूसा, हारून, मरियम, यहोशू और कालेब।

व्यवस्थाविवरण यादों की पुस्तक है। यह मूसा के व्याख्यानों और गीतों का संग्रह है, जिसने इन्हें इस्राएल के लोगों को उसकी विदाई के रूप में दिया था। यह पुस्तक आज्ञापालन की आशीषें और आज्ञोल्लंघन का शाप दिखाती है। इसमें केवल दो महिनों का ही इतिहास है, जिसमें मूसा के लिए तीस दिनों का शोक भी सम्मिलित है। यीशु ने अकसर व्यवस्थाविवरण से उद्धरण दिया था। उसने शैतान को इसमें से उत्तर दिया था। व्यवस्थाविवरण स्वर्ग का पृथ्वी पर स्वाद देती है।

पुनरीक्षण: उत्पत्ति में, हम मनुष्य नष्ट हुआ;
निर्गमन में, मनुष्य उद्धार पाया हुआ;
लैव्यव्यवस्था में, मनुष्य आराधना करता हुआ;
गिनती में, मनुष्य सेवा करता हुआ;
व्यवस्थाविवरण में, मनुष्य आज्ञापालन सीखता हुआ देखते हैं।

पाठ 5 – यहोशू, न्यायियों और रूत

यहोशू की पुस्तक इतिहास की पुस्तकों को खोलती है। यह आत्मिक सत्य, प्रोत्साहन और बुद्धि से भरी हुई है। मूसा मर चुका था, परन्तु अभियान चलता रहना चाहिए। यहोशू उसे समाप्त करता है जिसे मूसा ने आरम्भ किया था। इस महान अगुवे की यह पुस्तक के दो भाग हैं:

1. प्रतिज्ञा के प्रदेश की विजय, अ. 1 - 12

2. प्रतिज्ञा के प्रदेश पर अधिकार, अ. 13 - 24

न्यायियों इस्राएल के लोगों के अन्धकार युग का इतिहास है। लोगों ने परमेश्वर को त्याग दिया (न्यायियों 2:13) और परमेश्वर ने लोगों को त्याग दिया (2:23)। न्यायियों में उनके महान अगुवे, यहोशू की मृत्यु से लेकर शाऊल के इस्राएल के सिंहासन पर बैठने तक का इतिहास है। प्रतिज्ञा के प्रदेश के पहले 350 वर्षों में इस्राएल का कोई राजा नहीं था। यह वाक्यांश सारी पुस्तक में पाया जाता है: "जिसको जो ठीक जान पड़ता था वही वह करता था।" पुस्तक मनुष्य की निरन्तर असफलता और परमेश्वर की निरन्तर दया दिखाती है। इसकी रूपरेखा इस प्रकार बताई जा सकती है: सात धर्मत्याग, सात सांसारिक राजाओं की सात दासता, और सात छुटकारे!

रूत हम से हमारे छुड़ानेवाले कुटुम्बी, यीशु मसीह की बात करती है। यह पुस्तक न्यायियों की काली पृष्ठभूमि पर एक चमकती तस्वीर है और मसीह और कलीसिया की एक सुन्दर तस्वीर है। यह गिदोन या यिप्तह के शासन के दौरान की घटनाओं का विवरण है। रूत मसीह के पूर्वज दाऊद की पर-परदादी थी। यह पुस्तक मसीहा के परिवार और देश का आरम्भ दिखाती है जिसमें मसीहा जन्म लेने वाला था। रूत मोआबी स्त्री थी, जो लोग लूत के वंशज थे। परमेश्वर के अनुग्रह की कैसी सुन्दर तस्वीर, अन्यजातियों को मसीह के परिवार में स्थान देता है!

पाठ 6 – पहला और दूसरा शमूएल

1 **शमूएल** राजाओं की छः पुस्तकों की पहली पुस्तक है। शमूएल, राजाओं और इतिहास की दो-दो पुस्तकें हैं। 1 शमूएल में, शमूएल के जन्म से लेकर शाऊल के संकट भरे समयों से दाऊद के शासन के आरम्भ तक वर्णित घटनाओं की अवदि लगभग 115 वर्षों की है। पुस्तक को इसके तीन मुख्य व्यक्तियों के नामों से बाँटा जा सकता है:

1. परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता, शमूएल, अ. 1 - 7
2. राजा शाऊल परमेश्वर की ओर अवज्ञाकारी और एक असफल, अ. 8 - 15
3. परमेश्वर का मनुष्य, दाऊद, अ. 16 - 31

2 **शमूएल** - पहला शमूएल मनुष्य के राजा, शाऊल की असफलता दिखाता है। दूसरा शमूएल परमेश्वर के राजा, दाऊद के सिंहासन पर विराजमान होना, और "दाऊद के घराने" की स्थापना दिखाता है जिसमें से बाद में मसीहा आनेवाला था। दाऊद परमेश्वर के हृदय के अनुसार मनुष्य था - सिद्ध नहीं, परन्तु असफल होने पर पश्चातापी। वह अत्यन्त बहुमुखी था - चरवाहा लड़का, दरबारी संगीतज्ञ, सिपाही, सच्चा मित्र, निर्वासित कप्तान, राजा, महान सेनापति, प्रेमी पिता, कवि, पापी और टूटे हृदयवाला बूढ़ा मनुष्य, परन्तु सदा परमेश्वर का प्रेमी। पुस्तक को दो भागों में बाँटा जा सकता है:

1. दाऊद की विजयें, अ. 1 - 10
2. दाऊद के संकट, अ. 11 - 24

पाठ 7 – पहला और दूसरा राजा

ये पुस्तकें शमूएल की पुस्तकों से जारी रहती हैं। वे 400 वर्षों का इतिहास बताती हैं और राज्य की वृद्धि, क्षय और विभाजन का विवरण देती हैं। दक्षिणी राज्य, यहूदा के 20 राजा हुए थे, और उत्तरी राज्य, इस्राएल के 19। यहूदा और इस्राएल दोनों बँधुआई में चले गए थे। परमेश्वर के लिए शक्तिशाली आवाजें थीं, 1 राजा में न्याय और कठोरता का भविष्यद्वक्ता, एलिय्याह, और 2 राजा में, अनुग्रह और कोमलता का भविष्यद्वक्ता, एलीशा। दोनों पुस्तकों के ये महत्त्वपूर्ण भाग है:

1. दाऊद की मृत्यु, 1 राजा 1, 2
2. सुलेमान के शासन की महिमा, 1 राजा 3 - 11
3. राज्य का विभाजन, 1 राजा 12 - 2 राजा 16
4. इस्राएल पर अश्शूर की अधीनता, 2 राजा 17
5. यहूदा का पतन और बेबिलोन की अधीनता, 2 राजा 18 – 25

पाठ 8 – पहला और दूसरा इतिहास

इतिहास की पुस्तकें उन्हीं घटनाओं का विवरण देती हैं जिनका राजाओं की पुस्तकों ने दिया है, परन्तु एक भिन्न दृष्टिकोण से। राजा में देश का इतिहास सिंहासन से दिया गया है; इतिहास में यह वेदी से है। राजा में स्थान केन्द्र है; इतिहास में, मंदिर है। राजा राजनीतिक इतिहास बताते हैं; इतिहास धार्मिक। राजा हमें मनुष्य का दृष्टिकोण देते हैं; इतिहास परमेश्वर का। 2 इतिहास पाँच महान बेदारियों का विवरण देते हैं: आसा के समय, अ. 15; यहोशापात के समय, अ. 20; योआश के समय, अ. 23, 24; हिजकिय्याह के समय, अ. 29 - 31; और योशिय्याह के समय, अ. 35।

यह 1 **इतिहास** की रूपरेखा है:

1. वंशावलियाँ, अ. 1 - 9
2. शाऊल का शासन, अ. 10
3. दाऊद का शासन, अ. 11 - 29

और 2 **इतिहास** की रूपरेखा है:

1. सुलेमान का शासन, अ. 1 - 9
2. राज्य का विभाजन और यहूदा का इतिहास, अ. 10 - 36

पाठ 9 – एज्रा, नहेम्याह और एस्तेर

एज्रा और नहेम्याह की पुस्तकें परमेश्वर के चुने हुए लोगों के बेबिलोन के निर्वासन के बाद लौटने की कहानी है। एज्रा एक याजक था। नहेम्याह एक साधारण व्यक्ति था। इस्राएल के लोगों का पहला निर्गमन मूसा के अधीन मिस्र में से हुआ था; दूसरा **एज्रा** के अधीन बेबिलोन से हुआ था। कुछ यहूदी पहले ही लौट चुके थे और जब एज्रा यरूशलेम पहुँचा तो जो उसने पाया उसकी अपेक्षा से भी खराब था। यहूदियों ने आसपास के लोगों के साथ विवाह कर लिए थे और जो कुछ भी सांसारिक लोगों ने उन्हें सिखाया था वे कर रहे थे (9:1-4)। एज्रा शोक करने लगा (9:5-15); तब लोग उसके ईर्द-गिर्द इकट्ठा हो गए और उन्हें उनके बड़े पाप की चेतना हुई (10:1-44)। उसी समय एज्रा उन्हें परमेश्वर के साथ एक पवित्र वाचा में ले गया।

नहेम्याह एज्रा के तेरह वर्षों के बाद यरूशलेम पहुँचा था। वह फारस के राजा के अधिकार से यरूशलेम की दीवारों को बनाने के लिए आया था। वह वास्तव में एक इन्जीनियर था और बहुत सताव के बावजूद भी, काम 52 दिनों में सम्पूर्ण हो गया।
दोनों पुस्तकों की रूपरेखा इस प्रकार है:

1. यरूब्बाबेल के साथ बेबिलोन से वापसी, एज्रा 1 - 6
2. एज्रा के साथ बेबिलोन से वापसी, एज्रा 7 - 10
3. दीवारों का निर्माण, नहेम्याह 1 - 7
4. बेदारी और सुधार, नहेम्याह 8 - 13

एस्तेर - इस सुन्दर कहानी में परमेश्वर का नाम पढ़ने को नहीं मिलता है, परन्तु हर पन्ना परमेश्वर से भरा हुआ है जिसने जैसे खुद को हर शब्द के पीछे छिपाया हुआ है। पुस्तक परमेश्वर के पूर्वप्रबंध के विषय में सिखाती है। परमेश्वर के हाथ में इस सृष्टि का चालन-चक्का है। पुस्तक की सारी घटनाएँ तीन भोजों के ईर्द-गिर्द बनाई गई हैं:

1. फारस के राजा क्षयर्ष का भोज, जिसमें वशती को अस्वीकार किया गया था और मोर्दकै के लिए एस्तेर को लाने का मार्ग खोला गया था, जो उसकी देखभाल में एक जवान अनाथ थी, जिसका परिचय क्षयर्ष से हुआ और वह उसकी रानी बनी, अ. 1 और 2।
2. एस्तेर का भोज, जिसमें यहूदियों के शत्रु, हामान का भेद खोला गया और मृत्यु दण्ड के योग्य ठहराया गया और मोर्दकै को ऊँचा स्थान दिया गया, अ. 7।
3. पूरीम का भोज, जिसमें यहूदियों के एक भयानक खतरे से छुटकारे को मनाया गया था, अ. 9

पाठ 10 – अय्यूब

अय्यूब कविता की पाँच पुस्तकों में से पहली है। ये पुस्तकें हृदय के अनुभव के विषय में बताती हैं। यह पुस्तक सम्भवतः बाइबल की सबसे पुरानी पुस्तक है। यह समस्या का परमेश्वर का उत्तर देती है। "भक्त लोग क्यों दुख उठाते हैं ?" विवरण स्वर्ग के एक दृश्य के

साथ आरम्भ होता है, और फिर अय्यूब का समृद्धि से गरीबी में पतन की कहानी बताता है। इसके बाद अय्यूब और उसके मित्रों में भारी वादविवाद का विवरण है।

1. कहानी स्वर्ग के एक दृश्य के साथ आरम्भ होती है, 1:1 - 12, 2:1 - 6, और उसका बाद है
2. अय्यूब का समृद्धि से गरीबी में पतन, 1:13 - 22; 2:7 - 10, फिर
3. अय्यूब और उसके चार मित्रों, एलीपज, बिलदद, सोपर और एलीहू के बीच महान वादविवाद, 2:11 - 37:24, और अन्त में
4. चरम पहुँचता है जब परमेश्वर बोलता है, 38 - 42। यहोवा अय्यूब को समझाता है कि जब मनुष्य परमेश्वर को देखते हैं तब कुछ अवश्य घटता है। भक्तों को दुख उठाने दिया जाता है ताकि वे खुद को देख सकें, और तब परमेश्वर उन्हें उठाए। सब दुखों में परमेश्वर का एक बुद्धिमान उद्देश्य है। वह आग से ताया हुआ सोना लाना चाहता है।

पाठ 11 – भजनसंहिता

भजनसंहिता स्तुति, प्रार्थना और आराधना की पुस्तक है। भजन प्रभु को ऊँचा करते और उसकी स्तुति करते हैं। हर मानवीय अनुभव उससे सम्बंधित है। विश्वासी का जीवन इसके सारे आनन्द और दुख, विजय और असफलता के अनुभवों में चित्रित किया गया है। भजन मसीह से भरे हुए हैं। वे उसके दुखों और मृत्यु का सारा कार्यक्रम प्रकट करते हैं। किसी ने भजनसंहिता की रूपरेखा पंचग्रन्थ के नमूने पर बनाई है:

1. उत्पत्ति भाग, भजन 1 - 41, मनुष्य की धन्यता की स्थिति, तब उसका पतन और पुनर्लाभ।
2. निर्गमन भाग, 42 - 72, इस्राएल के विनाश और उद्धार का चित्रण।
3. लैव्यव्यवस्था भाग, भजन 73 - 89, परमेश्वर में, अन्धकार और भोर दोनों में, हमारा निवासस्थान।
4. गिनती भाग, भजन 90 - 106, पृथ्वी, इसके खतरे और सुरक्षा।
5. व्यवस्थाविवरण भाग, भजन 107 - 150, परमेश्वर के संसार की सुरक्षा और स्तुति।

पाठ 12 – नीतिवचन, सभोपदेशक और श्रेष्ठगीत

सुलेमान एक महान राजा था, जो उसकी बुद्धि और धन-दौलत के लिए प्रसिद्ध था। उसने 3000 नीतिवतन और 1005 गीत लिखे थे (1 राजा 4:31, 32)। सुलेमान एक दार्शनिक, एक वैज्ञानिक, मंदिर जो संसार का एक अजूबा था उसका एक वास्तुकार, और एक राजा था। **नीतिवचन** बुद्धि से भरे हुए हैं। इसे इस प्रकार बाँटा जा सकता है:

1. जवान मनुष्यों के लिए सलाह, अ. 1 - 10
2. सब मनुष्यों के लिए के लिए सलाह, अ. 11 - 20
3. राजाओं और शासकों के लिए सलाह, अ. 21 - 31

सभोपदेशक, मनुष्य के सोचविचार और स्वाभाविक धर्म ने जीवन के अर्थ और लक्ष्य के विषय में जो पता लगाया है उसका विवरण है। इस पुस्तक के तर्क परमेश्वर के तर्क नहीं हैं परन्तु वे मनुष्य के तर्कों का परमेश्वर का ब्योरा है। लेखक सुलेमान है, और पुस्तक उसके अनुभवों और चिन्तन की एक नाटकीय जीवनी है जब वह परमेश्वर के साथ संगति से दूर था। सुलेमान बुद्धिमान होगा परन्तु उसने अपनी बुद्धि के अनुसार नहीं किया। मुख्य शब्द हैं "व्यर्थ है" और "सूर्य के नीचे"।

श्रेष्ठगीत को मसीही का प्रेम गीत कहा गया है।
इस पुस्तक में चार महत्त्वपूर्ण अर्थ पाए जाते हैं:

1. यह "विवाहित प्रेम की महिमा" प्रकट करती है।
2. यह इस्राएल के लिए यहोवा के प्रेम को प्रकट करती है।
3. यह मसीह और कलीसिया की तस्वीर है।
4. यह मसीह और विश्वासी की सहभागिता प्रकट करती है।

मसीह के लिए विश्वासी का प्रेम आज कलीसिया की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

पाठ 13 – यशायाह

यह 17 भविष्यद्वाणी की पुस्तकों में से पहली पुस्तक है। भविष्यद्वक्ताओं को परमेश्वर ने इस्राएल के इतिहास के अन्धकार के दिनों में उभारा था। वे उस समय के सुसमाचार प्रचार थे। भविष्यद्वक्ताओं की अवधि नौंवी से चौथी सदी ई.पू. के बीच में 500 वर्षों की थी। ये भविष्यद्वक्ता राजाओं और लोगों दोनों से निडर होकर उनके पापों और असफलताओं के विषय में बात करते थे। यशायाह की पुस्तक में दो भिन्न वाक्यांश हैं। पहले भाग में यशायाह इस्राएल को चित्रित करता है। पुस्तक के दूसरे भाग में वह मसीह को हमारे पापों का बोझ उठाए, और फिर ऊँचा किए और महिमा पाए दिखाता है।

यशायाह ढाँचे में छोटी बाइबल है। इसके बाइबल की 66 पुस्तकों के समान, 66 अध्याय हैं। इसमें बाइबल के समान ही दो मुख्य भाग हैं, पुराने नियम के समान पहले भाग में 39 अध्याय हैं, और दूसरे भाग में नए नियम के समान 27 अध्याय हैं। पुस्तक को "यशायाह रचित सुसमाचार" भी कहा गया है। मसीह का कुँवारी से जन्म, उसका चरित्र, उसका जीवन, उसकी मृत्यु, उसका पुनरुत्थान और उसका पुनरागमन ये सब बड़ी निश्चितता और स्पष्टता के साथ प्रस्तुत किए गए हैं।

पाठ 14 – यिर्मयाह और विलापगीत

यिर्मयाह को "रो रहा भविष्यद्वक्ता" कहते हैं। जो संदेश उसे देने के लिए बुलाया गया था उसने उसका हृदय तोड़ दिया। यह सबसे अप्रिय संदेश था जो कभी किसी लोगों को दिया गया था। उसे देशद्रोही कहा गया क्योंकि उसने कहा था कि लोगों को बेबिलोन के अधीन हो जाना चाहिए (38:17-23)। इस्राएल के करने के लिए केवल एक ही चीज रह गई थी - समर्पण। "अन्यजातियों का समय" बेबिलोन के साथ, जो दानिय्येल के स्वपन में सोने का सिर था, आरम्भ हो चुका था।

यिर्मयाह ने बेबिलोन में 70 वर्षों की बन्धुआई की भविष्यद्वाणी की थी (25:9-12)। फिर भी, उसने अन्धकार से आगे ज्योति को देखा, और उसके समान किसी दूसरे भविष्यद्वक्ता ने भविष्य की बात नहीं की है (23:3-8; 30:31; 33:15-22)। यिर्मयाह ने लोगों को सिखाने के लिए परमेश्वर द्वारा दिए अनेक विषयपाठ इस्तेमाल किए थे। उसका संदेश न केवल अलोकप्रिय था - इसे अस्वीकार भी किया गया और उसके शत्रुओं ने उसकी मृत्यु की भी माँग की।

कहा जाता है कि यिर्मयाह ने **विलापगीत** भी लिखी, जो पाँच भिन्न कविताओं की एक उत्कृष्ट पुस्तक है। यह सारी दुख से नहीं भरी हुई है। उसके लोगों के पापों पर भविष्यद्वक्ता के रोने के बादलों के ऊपर, परमेश्वर का सूर्य अभी भी चमक रहा है। 3:22-27 पढ़ो।

पाठ 15 – यहेजकेल

यहेजकेल बेबिलोन की बन्धुआई के दौरान भविष्यद्वक्ता था। उसने इस्राएल के स्वदेश लौटने की झूठी आशा को निकालने और उनके प्रिय यरूशलेम के बहुत बुरे विनाश के समाचार के लिए उनको तैयार करने की कोशिश की थी।

उसका संदेश भविष्यद्वक्ताओं के संदेशों में से सबसे आत्मिक था, क्योंकि यह अधिक परमेश्वर के विषय में है। उसका संदेश देश के सबसे अन्धकार समयों में आया था। लोग उसे या उसके संदेश को नहीं सुन रहे थे, इसलिए उसने एक नया तरीका अपनाया। दृष्टान्तों में बोलने के बजाय उसने अभिनय करना आरम्भ किया (24:24)। यहेजकेल प्रभु की महिमा का भविष्यद्वक्ता है। पुस्तक का संक्षिप्त दृश्य इस प्रकार है, जो यरूशलेम के विनाश पर केन्द्रित है।

1. घेरा डालने से पहले, अ. 1 - 24, यरूशलेम के विनाश के छः वर्ष पहले यहेजकेल ने अपनी भविष्यद्वाणियाँ आरम्भ की थीं और इसके होने तक इसकी निश्चितता के विषय में बताता रहा।
2. घेरा, अ. 25 -32, उसके बाद, उसकी भविष्यद्वाणियाँ यहूदा के शत्रुओं और इन मूर्तिपूजक देशों के विनाश के विषय में हैं।
3. घेरे के बाद, अ. 33 - 48, अन्त में, यहूदा के पुनःस्थापना को चित्रित किया गया है।

पाठ 16 – दानिय्येल

दानिय्येल को स्वपनों का भविष्यद्वक्ता कहा गया है क्योंकि परमेश्वर ने उस पर अपने रहस्य प्रकट किए थे। उसने भविष्य में बहुत आगे तक देखा और प्रकाशितवाक्य में सबसे अधिक उद्धत किया गया है। उसका जीवन और सेवा सारे 70 वर्षों में फैले हुए थे। उसे 16 वर्ष की आयु में बन्धुआ करके ले जाया गया था और 90 वर्षों से अधिक तक जीवित रहा था। हालाँकि वह बन्धुआ था, वह बेबिलोन का प्रधान मंत्री बना था। अजूबे की बात तो यह है कि वह यहोवा परमेश्वर की ओर अन्त तक सच्चा बना रहा।

पुस्तक की रूपरेखा है:

1. दानिय्येल का व्यक्तिगत जीवन, 1:1 - 2:3
2. दानिय्येल का प्रकट जीवन - अन्यजातियों के समयों का एक चित्रण, 2:4 - 7:28
3. दानिय्येल के भविष्यसूचक दर्शन - देशों का भविष्यसूचक इतिहास, 8 - 12

पाठ 17 – होशे, योएल और आमोस

होशे 12 में से पहली पुस्तक है जिन्हें छोटे भविष्यद्वक्ता कहा जाता है, और यह उनकी कम सामग्री के कारण कहा जाता है। होशे को जिसके नाम का अर्थ "उद्धार" है, उत्तरी इस्राएल का यिर्मयाह कहा गया है। वह एक आम व्यक्ति था जिसे परमेश्वर ने निरंकुश इस्राएल को संदेश देने कि लिए बुलाया था कि परमेश्वर उनसे प्रेम करता है।
होशे को एक वेश्या से विवाह करने के लिए कहा गया, जिसके द्वारा उसे दो पुत्र और एक पुत्री उत्पन्न हुए थे। परन्तु वह वेश्यावृति में लौट गई और होशे ने उसे घर से निकाल दिया। परन्तु परमेश्वर ने होशे को उसे वापस लेने और दोबारा प्रेम करने की आज्ञा दी। संदेश यह था कि इस्राएल परमेश्वर की ओर अविश्वासयोग्य है, परन्तु वह उससे अभी भी प्रेम करता है और उसे उसके घर लौटा लाएगा। होशे की रूपरेखा है:

1. भविष्यद्वक्ता और उसकी विश्वासहीन पत्नी, गोमेर, अ. 1 - 3
2. प्रभु और विश्वासहीन देश, इस्राएल, अ. 4 - 14

योएल यहूदा का भविष्यद्वक्ता था जिसने टिड्डियों की भयानक विपत्ति के समय भविष्यद्वाणी की थी। उसने इसकी तुलना भावी न्याय से की। वह "प्रभु के दिन" की पाँच बार बात करता है, जो परमेश्वर के न्याय का दिन है।
योएल की पुस्तक की महान प्रमुख प्रतिज्ञा आत्मिक छुटकारे की है। योएल को यह बताने का सौभाग्य प्राप्त हुआ कि प्रभु सब लोगों पर अपना आत्मा उँडेल देगा (2:32 - 3:18)। यह पिन्तेकुस्त के दिन पूरा हुआ था (प्रेरितों 2:16)।

आमोस एक पशुपालक था, और उसका संदेश मुख्य रूप से उत्तरी राज्य के लिए था। वह परमेश्वर का इतना भय रखता था कि वह किसी दूसरे से नहीं डरता था। आमोस अपना प्रचार छः पड़ोसी देशों पर प्रभु के न्याय की घोषणा करते हुए आरम्भ करता है। तब वह यहूदा और इस्राएल के पास घर के करीब आता है।

पाठ 18 – ओबद्याह, योना और मीका

ओबद्याह पुराने नियम में सबसे छोटी पुस्तक है - केवल एक पन्ना, 21 आयतें, परन्तु यह आज भी हमारे लिए महत्त्व की है। यह एदोम के विरुद्ध न्याय की भविष्यद्वाणी है। इसमें दो महत्त्वपूर्ण विषय हैं - अहंकारी और विद्रोहियों का सत्यानाश, और नम्र और दीनों का छुटकारा। एदोमी एसाव के वंशज थे, जिसने अपना पहिलौठे का हक अस्वीकार किया था - एदोम इस्राएल का शत्रु बना रहा। जैसे ओबद्याह ने चेतावनी दी थी, वह अन्त में नष्ट हो गया।

हालाँकि **योना** एक भविष्यद्वक्ता था, इसमें कोई भविष्यद्वाणी नहीं है। यह योना के जीवन में एक व्यक्तिगत घटना का विवरण है, जो यीशु मसीह के पुनरुत्थान का संसार के इतिहास में सबसे बड़ी घटना का संकेत है। इस पुस्तक में परमेश्वर चार चीजों को बनाता है: एक महान मछली (1:17), एक रेंड का पेड़ (4:6), एक कीड़ा (4:7), और पुरवाई की लूह (4:8)। परमेश्वर अपने भविष्यद्वक्ता की देखभाल कर रहा था।
इस पुस्तक में महान महत्त्व की दो घटनाएँ हैं: बड़ी मछली योना को निगलती है, और निनवे का एक विशाल मूर्तिपूजक नगर एक विदेशी मिशनरी के प्रचार से मन फिराता है।
हमें पुस्तक में दो चीजों पर ध्यान देना चाहिए। पहली, योना अपनी मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान में मसीह का प्रतीक है। दूसरा, योना इस्राएल का भी प्रतीक है - परमेश्वर का अवज्ञाकारी, संसार के देशों द्वारा निगला गया, परन्तु जो मसीह के आने पर उसे उगल देंगे। तब इस्राएल सब जगह परमेश्वर के गवाह होंगे।

मीका ने यरूशलेम और इस्राएल के नगरों पर भविष्यद्वाणी की थी। परन्तु उसने शीघ्र ही आशा के वचन भी बोले। उसने सत्यानाश और दण्ड के परे मसीह के शासन में महिमा के दिन को भी देखा। मसीहा आएगा (4:8)। उसका जन्म बैतलहम में होगा (5:2-4)।
मीका के तीन संदेशों में से एक स्वाभाविक चेतावनी मिलती है, हर एक "सुनो" से आरम्भ होती है:

1. पहली (1:2) सब लोगों के लिए थी।
2. दूसरी (3:1) इस्राएल के अगुवों के लिए थी।

3. तीसरी (6:1) इस्राएल से मन फिराने और परमेश्वर के पास लौट आने के आग्रह का व्यक्तिगत वचन था।

पाठ 19 – नहूम, हबक्कूक और सपन्याह

नहूम का विषय नीनवे का विनाश है, जहाँ योना ने प्रचार किया था। नहूम योना के समय की बेदारी के लगभग 150 वर्ष बाद लिखा गया था। पश्चाताप अधिक देर टिका न रहा और नीनवे उसके पाप के कारण नष्ट कर दिया गया (3:1-7)।
नीनवे सब देखों का एक प्रतीक है जो परमेश्वर की ओर उनकी पीठ फेर देते हैं। जो व्यक्ति या देश जानबूझकर परमेश्वर को अस्वीकार करता है जानबूझकर और अनिवार्य रूप से अपना सत्यानाश चुनता है।

हबक्कूक ने प्रश्न पूछे और उत्तर पाए। "दुष्ट क्यों सम्पन्न होते जाते हैं ?" प्रश्न पर विचार किया गया है। अपनी सारी कठिनाइयों में, हबक्कूक प्रार्थना में परमेश्वर के पास गया और उसके उत्तर के लिए प्रतीक्षा की (2:1)। सच्ची प्रार्थना के बाद (3:1-16), परमेश्वर की महिमा प्रकट हुई।
"धर्मी अपने विश्वास के द्वारा जीवित रहेगा" (2:4) इन शब्दों का धर्मसुधार में बहुत महत्त्व था। इन शब्दों को नए नियम में उद्धत किया गया है: रोमियों 1:17; गलातियों 3:11 और इब्रानियों 10:38।

सपन्याह परमेश्वर के रोष और न्याय से भरी पुस्तक है (1:15; 3:8), परन्तु परमेश्वर के प्रेम का मन्द स्वर भी है (3:17)। सपन्याह ने विभिन्न प्रकार की मूर्तिपूजा की भर्त्सना की। योशिय्याह की बेदारी के पीछे सपन्याह का हाथ हो सकता है।
पुस्तक दुख के साथ आरम्भ होती है परन्तु गीत गाने के साथ समाप्त होती है।

पाठ 20 – हाग्गै, जकर्याह और मलाकी

पुराने नियम के अधिकाँश भविष्यद्वक्ताओं ने बन्धुआई से पहले भविष्यद्वाणी की थी। केवल दो, यहेजकेल और दानिय्येल ने बन्धुआई के दौरान भविष्यद्वाणी की थी। ये तीन, हाग्गै, जकर्याह और मलाकी ने वापसी के बाद भविष्यद्वाणी की।
हाग्गै का मुख्य विषय मंदिर का पुन:निमार्ण है। उसने लोगों को इसके निर्माण में सुस्ती के कारण फटकारा, और इस काम में लोगों को प्रोत्साहित किया और उनकी सहायता की। उसकी पुस्तक चार महिनों की अवधि में लिखे चार संक्षिप्त संदेशों की एक श्रृँखला है। कर्तव्य के लिए कड़ा बुलावा एक अच्छा बलवर्धक था। लोग जाग्रत हुए और मंदिर का निर्माण करने लगे (1:12-15)।

जकर्याह ने, जो एक जवान भविष्यद्वक्ता था, जब लोगों ने मंदिर का निर्माण आरम्भ किया, हाग्गै के बगल में खड़े रहकर, इस्राएल के लोगों को शक्ति प्रदान की और उन्हें चेतावनी दी कि वे उनके पूर्वजों के समान परमेश्वर को निराश न करें। उसने भविष्य में इस्राएल पर आनेवाली आशीषों के रंगीन चित्र भी बनाए।
जकर्याह ने, यशायाह के अलावा दूसरे किसी भी भविष्यद्वक्ता से अधिक, मसीह के आने की भविष्यद्वाणी की है। भविष्य में दूर तक देखते हुए उसने मसीह को पहले दीन होते और दुख उठाते देखा, और फिर उसे बड़े प्रताप और महिमा में देखा।

मलाकी पुराने और नए नियमों के बीच एक पुल समान है। मलाकी और यूहन्ना बपतिस्मादाता के बीच 400 वर्षों खामोशी है, जब उसने कहा, "प्रभु का मार्ग तैयार करो।"
पुराना नियम "शाप" शब्द से समाप्त होता है जबकि नया नियम एक आशीष के साथ समाप्त होता है। बेदारी के एक समय के बाद (नहेम्याह 10:28-39), लोग आत्मिक रूप से ठण्डे और नैतिक रूप से लापरवाह हो गए थे। मलाकी एक सुधारक के रूप में आया, और फटकार के साथ प्रोत्साहित भी किया।
मसीह के पुनरागमन के विषय में मलाकी की पवित्र घोषणा के विषय में पढ़ो, जिसकी हम प्रतीक्षा कर रहे हैं (3:16 - 4:3)।

भाग दो – नए नियम की पुस्तकें

पाठ 21 – सुसमाचारों का परिचय

"सुसमाचार" शब्द का अर्थ है "अच्छा समाचार"। चार लेखकों को सुसमाचार प्रचारक कहा जाता है, जिसका अर्थ है अच्छे समाचारों के दूत। मत्ती, मरकुस और लूका को सहदर्शी सुसमाचार कहते हैं, क्योंकि यूहन्ना के विपरीत वे - मसीह के जीवन का - सारांश देते हैं - एक इकट्ठा दृश्य।

सहदर्शी सुसमाचार मसीह की सेवा मुख्य रूप से गलील में दिखाते हैं, जबकि यूहन्ना यहूदा की सेवा के विषय में बताता है। सहदर्शी उसके चमत्कार, दृष्टान्त और भीड़ को शिक्षा का वर्णन करते हैं; यूहन्ना उसकी गहरी शिक्षाओं, उसकी बातचीत और प्रार्थनाओं को प्रस्तुत करत है। तीन मसीह के कार्यों को चित्रित करते हैं, जबकि यूहन्ना उसके मनन और सहभागिता को चित्रित करता है।

सब कुछ जो भविष्यद्वक्ताओं ने कहा था हमारे प्रभु के पृथ्वी के जीवन और कार्य के विषय में था, और जो कुछ पत्रों में आता है उनमें से निकलता है। सुसमाचार स्रोत हैं।

सुसमाचार हमें बताते हैं मसीह **कब** और **कैसे** आया।

पत्र हमें बताते हैं मसीह **क्यों** और **किस चीज** के लिए आया।

पाठ 22 – मत्ती

मत्ती यीशु को राजा के रूप में प्रस्तुत करता है। मुख्य रूप से यहूदियों के लिए लिखा गया, मसीह को दाऊद के पुत्र के रूप में प्रस्तुत करता है। उसकी वंशावली अध्याय 1 में दी गई है और अब्राहम तक वापस जाती है। पुराने नियम में से 29 उद्धरण दिए गए हैं, जो दूसरे सुसमाचारों से अधिक हैं, और दिखाते हैं कि मसीह भविष्यद्वक्ताओं की भविष्यद्वाणियों की पूर्ति है।

जब यीशु ने मत्ती को चुना था, तब वह रोमी राज्य के अधीन कफरनहूम में एक महसूल लेनेवाला था (9:9; 10:3)। दूसरे सुसमाचार प्रचार उसके द्वारा यीशु के सम्मान में दिए बड़े भोज के बारे में बताते हैं और यह भी बताते हैं कि उसने यीशु के पीछे चलने के लिए सबकुछ छोड़ दिया था। निस्संदेह वह महत्त्वपूर्ण व्यक्ति था।

मत्ती मसीहा, परमेश्वर के अभिषिक्त, का सुसमाचार है। इस पुस्तक में आत्मा का मुख्य कार्य यह बताना है कि यीशु नासरी वही मसीहा है जिसके विषय में मूसा और भविष्यद्वक्ताओं ने लिखा था।

केवल मत्ती ही पूर्व से आए बुद्धिमान व्यक्तियों के विषय में बताता है। पहाड़ी उपदेश राज्य का संविधान प्रस्तुत करता है। "राज्य" शब्द मत्ती में 55 बार मिलता है, क्योंकि यह राजा का सुसमाचार है।

मत्ती 24 और 25 में यीशु की अधिकाँश शिक्षा उसके पुनरागमन के विषय में है।

यीशु के स्वर्गारोहण का मत्ती में जिक्र नहीं है। मसीहा पृथ्वी पर ही होता है जब मत्ती की पुस्तक समाप्त होती है, क्योंकि यह पृथ्वी ही है जहाँ दाऊद का पुत्र महिमा में राज्य करने वाला है।

पाठ 23 – मरकुस

मरकुस यीशु को <u>सेवक</u> के रूप में चित्रित करता है। रोमियों को लिखे इस पत्र में कोई वंशावली नहीं है। क्यों? लोगों को एक सेवक की वंशावली में को रुचि नहीं है।
लेखक यूहन्ना मरकुस, मरियम का पुत्र और बरनबास का चचेरा भाई था। वह पौलुस और बरनबास के साथ अन्ताकिया गया था, और उन दोनों में कुछ समस्या का कारण था (प्रेरितों 12:25; 13:5)। तब वह उन्हें, सम्भवतः कठिन परिश्रम के कारण, छोड़कर चला गया (प्रेरितों 13:13)। अन्त में वह पौलुस के बड़े काम का हुआ (कुलु. 4:10; 2 तीमु. 4:11)। उसके उद्धार का माध्यम पतरस था और उसे "मेरा पुत्र" करके सम्भोदित करता है (1 पतरस 5:13)। हम इस सुसमाचार में पतरस का प्रभाव देखते हैं।
यह सबसे छोटा सुसमाचार है, और क्रियाओं और उपलब्धियों से भरा हुआ है। मरकुस ने यह सुसमाचार रोम में, और प्रकट है रोमियों के लिए लिखा था। वे व्यस्त लोग थे और ताकत और कार्य में विश्वास रखते थे। वे शब्दों से अधिक कर्मों पर बल देते

थे। कम ही पुराने नियम के वचन उद्धत किए गए हैं। केवल चार दृष्टान्त हैं। कोई लम्बी भूमिका भी नहीं है। "तुरन्त" शब्द 40 बार उपयोग किया गया है।
चमत्कारों का मरकुस में प्रमुख स्थान है - 20 का विवरण है।

पाठ 24 – लूका

लूका यीशु को सिद्ध मनुष्य के रूप में पेश करता है। यूनानियों को लिखे इस सुसमाचार में, यीशु की वंशावली, अब्राहम के बजाय, पहले मनुष्य, आदम तक जाती है। एक सिद्ध मनुष्य के रूप में, यीशु अधिक प्रार्थना में पाया जाता है और स्वर्गदूत उसकी सेवा करते हैं।
लूका एक वैद्य, और पौलुस का साथी था। केवल वह ही नए नियम की एक पुस्तक का अन्यजाति लेखक है। वह एक शिक्षित मनुष्य और तेज प्रेक्षक था। प्रेरितों को लेखक भी वही है। वह यीशु को सिद्ध मनुष्य के आदर्श के रूप में प्रस्तुत करता है।
यह सुसमाचार पापी के लिए है। यह मनुष्य को बचाने के लिए मनुष्य बनने में मसीह के दयालु प्रेम को दिखाता है।
लूका ने हमें यीशु के चमत्कारी जन्म से सम्बंधित पूरा विवरण दिया है। केवल वह ही चरवाहों के आने की बात बताता है। केवल लूका ही 12 वर्ष में यीशु के मंदिर जाने की बात बताता है। एक मनुष्य के रूप में उसने अपने हाथों से परिश्रम किया, दुख उठाया। सुसमाचार में छः में से पाँच चमत्कार चंगाई के चमत्कार हैं। केवल लूका ही मालकुस के कान की चंगाई के बारे में बताता है।
लूका का सुसमाचार पृथ्वी के बहिष्कृतों के लिए है। वह नारीत्व के विषय में काफी कुछ कहता है। उसकी यह सुन्दर गीतों वाली एक कविता की पुस्तक है। वह दूसरे किसी भी लेखक से अधिक प्रभु की प्रार्थनाओं के बारे में बात करता है।

पाठ 25 – यूहन्ना

यूहन्ना यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में चित्रित करता है। इस सुसमाचार में सबकुछ उसके ईश्वरीय सम्बंध को चित्रित करता और दिखाता है।
लेखक है यूहन्ना, "गर्जन का पुत्र", "चेला जिसे यीशु प्रेम करता था"। उसका पिता जबदी, एक अमीर मछुवा था, उसकी माता सलोमी, प्रभु की एक भक्त चेला थी। उसका भाई याकूब था।
यूहन्ना ने अपना सुसमाचार दूसरे सुसमाचार प्रचारकों से लगभग एक पीढ़ी बाद लिखा था। जब यीशु ने उसे बुलाया था तब वह कोई 25 वर्ष का रहा होगा। वह यूहन्ना बपतिस्मादाता का चेला रहा था। बाद में उसे सन् 80 से 100 के बीच पतमुस टापू पर निर्वासित कर दिया गया था। उस समय केवल उसकी पुस्तकों को छोड़ सारा नया नियम लिखा गया था।
यूहन्ना दूसरे सुसमाचारों से स्वर और दृश्य में अधिक ऊँचा है। यूहन्ना में यीशु परमेश्वर के बारे में 35 बार "मेरा पिता" कहता है। 25 बार वह "सच सच" कहता है जो उसका अधिकार दिखाता है।
यूहन्ना कहता है कि उसने यह सुसमाचार इसलिए लिखा कि लोग विश्वास करें कि यीशु ही मसीह है। यूहन्ना सात गवाह लाता है: 1:34; 1:49; 6:69; 11:27; 20:28; 20:31 और 10:36। सात चमत्कार हैं: 2:1-11; 4:46-54; 5:1-47; 6:1-14; 6:15-21; 9:1-41 और 11:1-57। और इस पुस्तक में मसीह के परमेश्वरत्व को सात "मैं हूँ" में प्रकट किया गया है।

पाठ 26 – प्रेरितों

लूका अपने सुसमाचार में दिखाता है जो मसीह ने पृथ्वी पर "करना आरम्भ किया" था। **प्रेरितों** में वह दिखाता है जो मसीह ने, पवित्र आत्मा के द्वारा, करना जारी रखा।
हमारे प्रभु का स्वर्गागोहण लूका का अन्तिम दृश्य है। यह प्रेरितों में पहला तथ्य है।
प्रेरितों प्रेरितों के द्वारा किए गए पवित्र आत्मा के कामों का विवरण है। उसके नाम का जिक्र लगभग 70 बार है। "गवाह" शब्द लगभग 30 बार पाया जाता है।
पुस्तक यरूशलेम में जो यहूदियों का महानगर था, सुसमाचार के प्रचार के साथ खुलती है। यह रोम में जो उस संसार का महानगर था, प्रचार के साथ समाप्त होती है। एक पीढ़ी में, प्रेरित हर दिशा में फैल गए थे और उस समय के ज्ञात संसार के हर देश में प्रचार कर चुके थे (कुलु. 1:23)।
प्रेरितों 1 से 12 में हम पतरस को यहूदियों को प्रचार करता पाते हैं। उसका संदेश था "मन फिराओ"। प्रेरितों 13 से 28 में हम पौलुस को अन्यजातियों को प्रचार करता पाते हैं। वह कहता है "विश्वास करो"।

प्रेरितों दूसरी जातियों में प्रचार की एक सुन्दर मार्गदर्शिका है। यह मिशन का अभिप्राय दिखाती है - पुरुषों और स्त्रियों को यीशु मसीह के उद्धार में लाना। पहली कलीसिया ने इसकी योजना को पूरा करने का एक निश्चित कार्यक्रम बनाया था। उन्हें उनके आधार के रूप में जनसंख्या का विकिरणकारी केन्द्र चुना था। निर्भरता पवित्र आत्मा पर थी, और वे महान उत्साह से भरे हुए थे। पौलुस की तीन मिशनरी यात्राएँ प्रभावशाली मिशनरी काम के प्रधान उदाहरण थे।

पाठ 27 – रोमियों

यह पहला पत्र है। पौलुस ने 13 पत्रों को लिखा है। (इनमें इब्रानियों का पत्र भी सम्मिलित है हालाँकि हमें निश्चित नहीं है कि इसका लेखक पौलुस था)। पौलुस शुद्ध यहूदी था। रोमी नागरिकता, यूनानी शिक्षा और इब्री धर्म के मिश्रण ने उसे इस महान कार्य के लिए योग्य बनाया था।
फसह के लिए रोम से आए यहूदी पिन्तेकुस्त के दिन मसीह को स्वीकार करके, सुसमाचार का बीज लेकर वापस गए, और वहाँ कलीसिया स्थापित की। 28 वर्षों के बाद पौलुस रोम जाने का बहुत उत्सुक था, और उसने यह पत्र कुरिन्थुस से लिख भेजा, जहाँ वह अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा के दौरान तीन महिने रहा था।
रोमियों की पुस्तक दोषी लोगों को अच्छा बनाने का परमेश्वर का तरीका बताती है। यह उद्धार पर एक सबसे महान दस्तावेज है।
रूपरेखाः अध्याय 1 - 8 सिद्धान्त सम्बंधी हैं। पहले तीन अध्याय (विशेषकर 1:18 - 3:20) मनुष्य की भयानक पापी स्थिति प्रकट करते हैं। इसके पीछे परमेश्वर के धर्मी ठहराया जाना आता है (3:21 - 5:11)। उसके आगे सन्तों का पवित्रीकरण का संदेश आता है (5:12 - 8:31)।
अध्याय 9 - 11 विधान का संदेश लाते हैं, और सारे इतिहास में परमेश्वर का इस्राएल के लिए उद्देश्य प्रकट करते हैं।
अन्तिम चार अध्याय, 12 - 16, व्यावहारिक हैं, एक मसीही का कर्तव्य दिखाते हैं।

पाठ 28 – पहला और दूसरा कुरिन्थियों

पौलुस के दिनों में, सांसारिक कुरिन्थुस रोमी साम्राज्य का पाप का केन्द्र था। यह सारे यूनान का सबसे महत्त्वपूर्ण नगर था। धन-दौलत आश्चर्यजनक थी। नीच नैतिकता निरंकुश थी।
इस भ्रष्ट पृष्ठभूमि में, पौलुस ने कुरिन्थुस में सुसमाचार प्रचार किया, कलीसिया स्थापित की, और ये दो पत्र लिखे।
कुरिन्थियों ने एक पत्र के साथ प्रतिनिधिमण्डल भेजा था (7:1; 16:17), और **पहला कुरिन्थियों** उस कलीसिया में स्थितियों से सम्बंधित पौलुस का उत्तर है। सांसारिकता प्रवेश कर चुकी थी, और गुट बने हुए थे। मसीही मसीहियों के विरुद्ध आदालत में जा रहे थे और प्रभु भोज के समय उनका व्यवहार लज्जाजनक था। स्त्रियाँ सन्तुलित नहीं थीं और कलीसिया के सदस्य विवाह और आत्मिक वरदानों के विषय में झगड़ा कर रहे थे।
पौलुस अध्याय 15 में मसीह के पुनरुत्थान के अनेक प्रमाण देता है।

पौलुस ने **दूसरा कुरिन्थियों** जिस प्रकार उसका पहला पत्र स्वीकार किया गया था, उसके प्रोत्साहित समाचार पर अपना आनन्द प्रकट करने के लिए, और अपनी प्रेरिताई का बचाव करने के लिए लिखा था।
पत्र "शान्ति" (1:3) के साथ आरम्भ होता है और शान्ति (13:11) के साथ समाप्त होता है।

पाठ 29 – गलातियों

पौलुस ने अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान, गलातियों में जो एक ग्रामीण क्षेत्र था, कलीसियाएँ स्थापित की थीं। व्यवस्था के शिक्षक पौलुस के पीछे-पीछे आ पहुँचे थे, और कर्मों द्वारा उद्धार सिखा रहे थे। झूठे शिक्षक लोगों को यह बताकर कि उन्हें सब प्रकार की धर्मविधियों को मानना होगा, मोह रहे थे। पौलुस उनको बताना चाहता था कि कोई भी कर्म, कुछ भी उन्हें मसीह के पास नहीं ला सकता है। उद्धार केवल मसीह पर विश्वास करने से ही आता है। जब पौलुस को लगा कि **गलातियों** इन झूठे शिक्षकों के विचारों को स्वीकार करने वाले थे तब मामला इतना अत्यवश्यक था कि उसने यह पत्र स्वयं लिखा (6:11)।
यह पत्र मसीही की स्वतंत्रता की घोषणा है। यह व्यवस्था और अनुग्रह की तुलना करता है।
यह एक कड़ा, कठोर और पवित्र संदेश है। इस में कोई प्रशंसा या धन्यवाद नहीं है। किसी का भी नाम नहीं पाया जाता। तीव्र भावनाएँ और उत्तेजना हैं - यह एक संग्राम का पत्र है। यह मार्टिन लूथर का प्रिय पत्र था। यह सारे पवित्रशास्त्र में विश्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने की सबसे शक्तिशाली घोषणा और बचाव है।

पाठ 30 – इफिसियों

इफिसियों चार (फिलिप्पियों, कुलुस्सियों और फिलेमोन दूसरे तीन हैं) में से एक कारागृह पत्र है। यह कलीसिया का महान रहस्य प्रकट करता है। इसे कभी-कभी "पौलुस का अति पवित्रस्थान", या "पौलुस का तीसरा स्वर्ग का अनुभव" भी कहा जाता है।
पौलुस को पवित्र आत्मा ने उसकी दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान आसिया में प्रवेश करने से रोका था जहाँ इफिसुस एक प्रधान केन्द्र था। वह कुरिन्थुस तक यूरोप में गया, जिसके बाद वह इफिसुस के मार्ग से लौटा था। वह अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा के दौरान वहाँ गया और दो वर्ष लगातार वहाँ सेवा की (प्रेरितों 18:19 और 19:8-10)। इफिसुस के लोगों ने किसी दूसरे व्यक्ति से अधिक पौलुस से बाइबल की शिक्षा पाई थी। उसका वहाँ विरोध हुआ, परन्तु परमेश्वर ने उसकी रक्षा की। उसे इफिसुस की कलीसिया से प्रेम था।
इस अत्यधिक आत्मिक पुस्तक की रूपरेखा सहायक होगी:

1. विश्वासी की स्थिति - "मसीह में", "स्वर्गीय स्थानों में", अ. 1 - 3
2. विश्वासी की चाल, अ. 4 - 6
    - कलीसिया-सम्बंधी - अ. 4
    - नैतिक रूप से - अ. 5
    - सामाजिक रूप से - अ. 5:21 - 6:9
    - युद्ध-सम्बंधी - अ. 6:10 - 24

पाठ 31 – फिलिप्पियों और कुलुस्सियों

ये पत्र भी, इफिसियों और फिलेमोन के समान, कारागृह में से लिखे गए थे।
फिलिप्पियों वास्तव में एक "धन्यवाद" पत्र है जिसे इपफ्रुदीतुस फिलिप्पियों की कलीसिया के लिए ले गया था। इसमें पौलुस उसके और तीमुथियुस को भेजी भेंट के लिए कृतज्ञता व्यक्त करता है।
पौलुस में फिलिप्पियों की कलीसिया के लिए विशेष प्रेम था। उसकी नदी किनारे कुछ स्त्रियों से मुलाकात हुई थी और लुदिया ने प्रभु को ग्रहण किया था। बाद में पौलुस और सीलास को पीट कर और कैद में डाल दिया गया था। आधी रात को, जैसे वे प्रार्थना और स्तुति के गीत गाने लगे थे, कि कारागृह में बड़ा भूकम्प आया। दारोगा और उसके परिवार ने विश्वास किया और बपतिस्मा लिया (प्रेरितों 16)।
आनन्द पुस्तक का मुख्यस्वर है: दुखों में आनन्द, अध्याय 1; सेवा में आनन्द, अध्याय 2; मसीह में आनन्द, अध्याय 3; और संतोष में आनन्द, अध्याय 4।

पौलुस ने **कुलुस्सियों** इसलिए लिखा क्योंकि अपसिद्धान्त सिखाए जा रहे थे और पौलुस को सुधार लाना आवश्यक था। मसीहियों को लगा था कि उन्हें खतना, खाने-पीने के नियम और पर्व और स्वर्गदूतों की मध्यस्थता को बनाए रखना चाहिए। वे मसीह के ईश्वरत्व के विचार को समझे नहीं थे, इसलिए उन्हें पता नहीं था कि सब कुछ जिसकी उन्हें आवश्यकता थी मसीह में पाया जा सकता था।
पौलुस उन्हें सुधारता है:

1. सिद्धान्तों के विषय में, अध्याय 1 और 2
2. व्यावहारिक रूप से, अध्याय 3 और 4

पाठ 32 – पहला और दूसरा थिस्सलुनीकियों

पौलुस और सीलास ने पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान थिस्सलुनीकियों में कलीसिया स्थापित की थी (प्रेरितों 17:1-10)। वे वहाँ एक महिने से कम ही टिक पाए थे क्योंकि यहूदियों ने उनके विरुद्ध एक भीड़ इकट्ठा की थी। नई कलीसिया ने असाधारण सामर्थ्य दिखाई थी। इसके सदस्य मुख्य रूप से मूर्तिपूजा से आए हुए विश्वासी थे और वे विरोधी मूर्तिपूजक वातावरण का सामना कर रहे थे।

पौलुस यह जानने के लिए बेचैन था कि वे कैसा कर रहे हैं। तीमुथियुस इसका समाचार लाया था (3:6), और वह उनको विश्वास में बने रहने के लिए प्रोत्साहित करना चाहता था। 1 **थिस्सलुनीकियों** में बहुत कम सिद्धान्त परन्तु अधिक प्रोत्साहन है। पौलुस मसीही जीवन और सेवा के प्रेरक के रूप में, यीशु के पुनरागमन के विषय में काफी बात करता है (1:10; 2:19; 3:13; 4:16-18 और 5:23)।

2 **थिस्सलुनीकियों** पहले के तुरन्त बाद लिखा गया था। इसका विषय मसीह का पुनरागमन है। कुछ लोग पहले पत्र से उलझन में पड़ गए थे। यह उन घटनाओं का जिक्र करता है जो उसके आगमन से पहले घटेंगी और मसीहियों को सताव सहने, परिश्रम करने और मसीह के लौटने का धैर्य के साथ प्रतीक्षा करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

पाठ 33 – पहला और दूसरा तीमुथियुस

1 और 2 तीमुथियुस और तीतुस, ये तीनों पास्तरीय पत्र कहलाते हैं क्योंकि उनमें एक परिपक्व पास्टर जवान पुरुषों को सलाह देता है जो दूसरों को भी पास्टर के काम के लिए सिखाएँगे।
तीमुथियुस का पिता यूनानी परन्तु माता यहूदी थी। उसने तब विश्वास किया था जब वह पंद्रह वर्ष का था जब पौलुस उसके नगर लुस्त्रा गया था (प्रेरितों 16:1-3; 1 तीमुतियुस 1:2)। सात वर्षों के बाद वह पौलुस का मिश्नरी साथी बन गया था।
1 **तीमुथियुस** - अपनी पहली कैद के बाद पौलुस इफिसुस गया था। जब उसे वहाँ से जाना पड़ा तब उसने तीमुथियुस को काम के अधिकार में छोड़ दिया था। तीमुथियुस जो एक शर्मीला और कोमलहृदय व्यक्ति था, उसे अकेला छोड़ा जाना एक अप्रिय परीक्षा के समान लगा रहा था। पौलुस ने कुरिन्थुस से यह पत्र उसे प्रोत्साहित करने और कुछ व्यावहारिक सलाह देने के लिए लिखा।
मूल आयत 3:15 है। तीमुथियुस को झूठी शिक्षा के विरुद्ध चेतावनी देने और प्रार्थना के महत्त्व पर बल देने की सलाह दी गई है। कलीसिया के अधिकारियों और एक अच्छे सेवक की योग्यताओं के स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं।

2 **तीमुथियुस** पौलुस का अन्तिम पत्र है जो एक रोम की कालकोठरी से लिखा गया था। पौलुस को लग रहा था उसके प्रस्थान का समय निकट है। उसे अचानक त्रोआस से कैद कर लिया गया था और उसे अपने पुस्तकें और चर्मपत्रों और बागे को उठाने का समय नहीं मिला था (4:13)। वह अकेला था (4:10-12) और फाँसी की प्रतीक्षा कर रहा था। उसने तीमुथियुस को आने और मरकुस को साथ लाने और उन कुछ चीजों को जिन्हें वह पीछे छोड़ आया था साथ लाने का आग्रह करने के लिए लिखा था।
मूल विषय हैं दुख, सेवा, धर्मत्याग और पवित्रशास्त्र।

पाठ 34 – तीतुस और फिलेमोन

तीतुस एक शुद्ध अन्यजाति था और उसने पौलुस द्वारा विश्वास किया था (1:4)। पौलुस ने तीतुस को कुरिन्थुस की कलीसिया में समस्याओं को ठीक करने का काम दिया था (2 कुरिं. 7:6-7)। पौलुस को तीतुस की योग्यताओं में बहुत भरोसा था क्योंकि उसे बाद में क्रेते में वहाँ की कठिन कलीसिया में मुख्य भूमिका निभाने के लिए भी छोड़ा गया था (1:5)। तीतुस एक "गड़बड़ी दूर करनेवाला", नाजुक स्थिति सम्भालनेवाला व्यक्ति था। वह तीमुथियुस से अधिक दृढ़ और सम्भवतः अधिक परिपक्व जान पड़ता है।
पत्र व्यावहारिक सलाह और झूठी शिक्षा के विरुद्ध चेतावनी से भरा हुआ है। मुख्य सलाह सेवा सम्बंधी कर्तव्यों और सिद्धान्तों के विषय में सलाह और उपदेश हैं, और भले कामों पर विशेष बल दिया गया है।

फिलेमोन मध्यस्थता का एक सुन्दर पत्र है, जिसमें वह फिलेमोन से उनेसिमुस को जो उसका भागा हुआ दास था, क्षमा करने और अनुग्रह में लौटाने के लिए आग्रह करता है।
फिलेमोन प्रकट रूप से एक समृद्ध व्यक्ति था (5-7, 22) और उसने सम्भवतः पौलुस द्वारा विश्वास किया था (आय. 19)। उनेसिमुस रोम को भाग गया था जहाँ वह पौलुस के समपर्क में आया और मसीह पर विश्वास किया था (आय. 10)।
यहाँ उनेसिमुस के परिवर्तित चरित्र की गवाही और क्षमा का एक कोमल आग्रह है।

पाठ 35 – इब्रानियों

इस पत्र में लेखक का नाम नहीं पाया जाता है परन्तु अनेक विश्वास करते हैं कि इसे पौलुस ने लिखा था। इसे मुख्य रूप से **इब्रानी** मसीहियों को लिखा गया था, और इसका उद्देश्य यह दिखाना था कि मसीही विधान की महिमा पुराने नियम के याजकपन से कहीं अधिक थी। मसीह सिद्ध याजक है, जिसने सिद्ध बलिदान चढ़ाया है।

पहले दस अध्याय दिखाते हैं कि परमेश्वर का पुत्र स्वर्गदूतों, मूसा, यहोशू, हारून और मलिकिसिदक से श्रेष्ठ है। अध्याय 11 से 13 विश्वास का जीवन दिखाते हैं।

पाठ 36 – याकूब

लेखक सम्भवतः यीशु का भाई था जो यरूशलेम की कलीसिया का अगुवा बना था (प्रेरितों 12:17; 15:13)। उसे सन् 62 में शहीद किया गया था।

याकूब का पत्र प्रत्यक्ष रूप से पवित्र भूमि से दूर रह रहे यहूदी धर्मांतरितों को लिखा गया था, परन्तु इसका संदेश इतना स्पष्ट और व्यावहारिक है कि यह सब मसीहियों के जीवनों में लागू होता है। इसका मुख्य विषय व्यावहारिक धर्म है जो भलो कामों में दिखाई देता है।

कुछ परिच्छेद मसीहियों पर विशेष परिस्थितियों में लागू होते हैं: जो दबाव में हैं (1:24), जो अमीर मसीही हैं (1:9-11; 5:1-6), कलीसिया के सदस्यों के रवैये (2:1-9), जो अगुआई में हैं (3:1), और जो डगमगा रहे हैं (5:19-20)।

याकूब उसकी शिक्षाओं को चित्रित करने के लिए स्पष्ट चित्र भाषा उपयोग करता है। इन उदाहरणों को देखो: 1:6, 11, 17, 23, 26; 3:3, 5, 7, 12; 4:14; 5:1-2, 7।

पाठ 37 – पहला और दूसरा पतरस

1 **पतरस** दुख सह रहे मसीहियों को लिखा गया है जो अचरज कर रहे थे कि उन्हें सताव क्यों सहना पड़ रहा है। इसे सम्भवत हृदय से लिखा गया है और यह एक संदेश के समान अधिक लगता है। मूल शब्द "दुख" 15 से अधिक बार पाया जाता है।

पतरस मसीह में यशस्वी उद्धार और विश्वासी के जीवन, उसकी स्थिति और कर्तव्यों की बात करता है। वह नागरिक और सामाजिक कर्तव्यों, सामान्य अच्छी नागरिकता और विश्वास के घराने में कर्तव्यों की बात करता है। वह मसीह का आशा के स्रोत (1:3), बलिदान का मेम्ना (1:19), प्रधान कोने का पत्थर (2:6), सिद्ध उदाहरण (2:21), आदर्श दुखा उठानेवाला (2:23), पाप ढोनेवाला (2:24), प्राणों का चरवाहा (2:25), और महिमा पाए प्रभु (3:22) के रूप में वर्णन करता है।

2 **पतरस** भ्रष्ट शिक्षकों और ठट्टा करनेवालों के विरुद्ध चेतावनी है। परमेश्वर के वचन और ईश्वरीय प्रतिज्ञाओं की निश्चितता पर बहुत बल दिया गया है। 2 तीमुथियुस के समान, 2 पतरस बल देता है कि अन्त निकट है और कलीसिया के लिए संकट भरे दिन आनेवाले हैं।

पतरस के पत्रों में सात बहुमूल्य चीजें हैं: नाना प्रकार की परीक्षाएँ (1:6), मसीह का लहू (1:19), जीवित पत्थर (2:4), मसीह (2:6), नम्र और दीन आत्मा (3:4), विश्वासी का विश्वास (2 पतरस 1:1), और ईश्वरीय प्रतिज्ञाएँ (2 पत. 1:4)।

पाठ 38 – पहला, दूसरा और तीसरा यूहन्ना और यहूदा

ये तीन पत्र प्रेरित यूहन्ना ने लिखे हैं।

1 **यूहन्ना** - इसे "निश्चितताओं का पत्र" भी कहा जा सकता है। इसके मूल शब्द हैं: सहभागिता, जानना और प्रेम। यह विश्वासियों को उपलब्ध आत्मिक ज्ञान पर बहुत बल देता है। शब्द "जानना" या इसके समानार्थ शब्द 30 से अधिक बार पाए जाते हैं। प्रमुख विषय है:

1. परमेश्वर जीवन और ज्योति है, अ. 1 और 2;
2. परमेश्वर धर्मी और प्रेम है, अ. 3 और 4;
3. संसार और इसकी सारी दुष्ट शक्तियों के साथ संघर्ष में विश्वास और प्रेम विजय देनेवाले सिद्धान्त हैं, अ. 5

2 **यूहन्ना** मित्रों को अपसिद्धान्त और झूठे शिक्षकों के साथ संबंध के विरुद्ध चेतावनी देने के लिए लिखा गया था (आय. 7-11)। "प्रेम" शब्द चार बार और "सत्य" पाँच बार पाया जाता है।

3 **यूहन्ना** गयुस को लिखा गया था, जो मसीही अतिथि-सत्कार की ओर संगत था। विषयवस्तु उसके और दो दूसरे, दियुत्रिफेस, जिसे यूहन्ना मिलने पर फटकारेगा, और दिमेत्रियुस, सुनाम वाला एक आदर्श मसीही था, के बारे में है।

यहूदा यीशु और याकूब के छोटे भाई ने लिखा था। यहूदा मसीहियों के एक समूह को लिखता है जिनको उनके भीतर से खतरा था क्योंकि कुछ मनुष्य चुपके से उनमें आ मिले थे और उनकी झूठी शिक्षा से उन्हें अलग-अलग कर रहे थे। यहूदा की मनसा ऐसे शिक्षकों की ओर विरोध को कड़ा करना था।

पाठ 39 – प्रकाशितवाक्य

प्रकाशितवाक्य यूहन्ना ने लिखा था जब उसे पतमुस के टापू पर निर्वासित किया हुआ था। इसे सताव के समय (2:13) लिखा था, और इससे भी खराब समय आनेवाला था (2:10), और इसलिए मसीहियों को दृढ़ खड़े रहने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता थी।
पुस्तक समझने में कठिन है, परन्तु बड़े ही महत्त्व की है क्योंकि जो घटनाएँ सब भविष्यद्वाणियों की समाप्ति की ओर जा रहा हैं उनकी एक तस्वीर देती है, जब दुष्ट का न्याय होगा और मसीह को अनन्त महिमा में राजा के रूप में स्थापित किया जाएगा।
यह बाइबल की एकमात्र पुस्तक है जिसमें आज्ञाकारी मसीहियों के लिए एक विशेष प्रतिज्ञा है (1:3), और जो इसकी बातों में फेर-बदल करते हैं उन पर शाप डालती है (22:18-19)।

पाठ 40 – प्रकाशितवाक्य की रूपरेखा

पुस्तक की रूपरेखा:

1. प्रस्तावना, 1:1-20
2. सात कलीसियाओं को सात पत्र, 2:1 - 3:22
3. स्वर्ग का एक दर्शन, 4:1-11
4. सात मुहरें, 5:1 - 8:5
5. सात तुरहियाँ, 8:6 - 11:19
6. सात चिन्ह, 12:2 - 14:20
7. सात कटोरे, 15:1 - 16:21
8. मसीहविरोधी का शासन और सत्यानाश, 17:1 - 20:15
9. परमेश्वर का नगर, 21:1 - 22:5
10. उपसंहार, 22:6-21

प्रकाशितवाक्य के अन्तिम अध्यायों का उत्पत्ति के आरम्भिक अध्यायों से आश्चर्यजनक विरोध है।
उत्पत्ति सूर्य की रचना, संसार में पाप का आना, शाप का दिया जाना, शैतान की विजय और "जीवन के वृक्ष" से वर्जन की बात करती है।
प्रकाशितवाक्य एक ऐसे स्थान की बात करती है जहाँ सूर्य की आवश्यकता नहीं होगी, पाप मिटाया जाएगा, शाप समाप्त होगा, शैतान पराजित किया जाएगा और जीवन के वृक्ष के पास जाने का प्रवेश खुला होगा।
"हे प्रभु यीशु आ!"

यह कुल 16 पुस्तकों के एक सेट की पुस्तक क्र. 1 है

इसका अध्ययन मिनिस्ट्री और ट्रेनिंग कोर्स में होना है, जो "केवल एक बार" का कोर्स है - Project of M.L.T.C. Ministries. (केवल निजि वितरण के लिए!! - बिक्री के लिए नहीं!! - "केवल एक बार" परियोजना का एक अंश)

===

दँ डायरेक्टर आफ एमएलटीसी,
पी. ओ. बॉक्स 19106, वरली,
मुम्बई - 400 030 + या ईमेल करें : **mltc_ministries@yahoo.com**